एस० चन्द एण्ड कम्पनी

रामनगर	नई दिल्ली
फव्वारा	दिल्ली
माई हीरां गेट	जालन्धर
हज़रत गंज	लखनऊ
लैमिंग्टन रोड	बम्बई

मूल्य १·००

श्यामलाल गुप्ता स्वत्वाधिकारी, एस० चन्द एण्ड कम्पनी द्वारा प्रकाशित
एवं आर० के० प्रिण्टर्स, ८०-डी, कमलानगर, दिल्ली में मुद्रित।

कृतज्ञता-प्रकाश

थारो के जीवन के सम्बन्ध में लिखने वाले सभी लेखकों को हेनरी सिडल केनबी का ऋणी होना चाहिए; क्योंकि सबसे पहले १९३९ में उनकी लिखी थोरो की जीवनी प्रकाशित हुई थी। मैं अमेरिका की थोरो सोसायटी का भी आभारी हूँ जिसने मुझे अपना सम्मानित सदस्य बना लिया। इस संस्था के दो सदस्यों, सर्वश्री वाल्टर हार्डिंग और लियोनार्ड एफ० क्लीनफेल्ड का विशेष रूप से उल्लेख करूँगा। पूर्वोक्त ने मुझे सोसायटी की पत्रिका (बुलेटिन) और शेषोक्त ने ब्रिटेन में कठिनाई से प्राप्त पुस्तकें उदारतापूर्वक दिलाने में मेरी सहायता की। मैं श्रीमती रवेन इलियट (टोरेण्टो) और श्री विलियम हैडॉक (न्यूयार्क) को भी धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि ये दोनों भी बहुत सहायक सिद्ध हुए हैं।

अनुक्रमणिका

"आज का कोई भी अनुभव मेरे बचपन के अनुभवों की तुलना में कुछ नहीं है……तब मेरा जीवन आनन्द का अतिरेक था……।"

—(थोरो की डायरी से)

मैसाचुसेट्स में अप्रैल का एक गर्म दिन। न्यू इंग्लैण्ड का लघु पर सुहावना वसन्त पूरे बहार पर है। जाड़ों के जिस मौसम का अन्त ही नहीं होता दीखता था, वह अब समाप्तप्राय है। बर्फ खतम हो चुकी, नदी उमड़ कर फिर पीछे हट गई है, कलियाँ चटखने लगीं, पक्षी चहकने लगे, घोड़ों के जोतवान अपने घोड़ों को सीटी देकर बुला रहे हैं। सूर्य का प्रकाश चारों ओर पड़ रहा है, और अटलांटिक महासागर को चमकाता हुआ, कानकार्ड के प्रशस्त तटों को सेंक रहा है, गर्वपूर्ण बोस्टन नगर की सँकरी सड़कों पर बिखरता हुआ, जंगल के भीतरी भागों, खेतों और दलदलों तथा पश्चिमी पहाड़ियों की चोटी पर मीठी धूप बरसा रहा है।

उत्तर-पश्चिम में, बोस्टन से कोई बीस मील अन्दर की ओर, कानकार्ड के खासे-बड़े गाँव के निवासी सूर्य के इस आह्वान का उत्तर भिन्न-भिन्न प्रकार से दे रहे हैं।

बहुतों के लिए यह जल्दी-जल्दी जोतने-बोने का समय है, तो कुछ के लिए लकड़ियाँ काटने का मौसम है। कुछ लोग घर की सफाई और कुछ बाग का पड़ा हुआ काम करने में जुट गए हैं। कुछेक लोग ऐसे भी हैं—शायद अकेला थोरो परिवार ही—

जो सिर्फ सैर का आनन्द लेने के लिए वनों और मैदानों में घूमने निकल जाते हैं। जंगल में वे अकेले ही हैं, क्योंकि १८३० में, प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द उठाने की बात सिर्फ कवि ही कर सकते थे। सप्ताहान्त की छुट्टी बिताने के उनके तरीके पर बाहर की गतिविधि का असर अभी और पचहत्तर वर्ष तक नहीं पड़ने वाला था।

वसन्त के पहले शनिवार की सुबह। थोरो-परिवार मौसम की अपनी पहली सैर पर निकला है—ग्यारह वर्षीय सोफिया जो फूल चुनती चलती है; तेरह वर्षीय हेनरी जो जंगलियों की तरह दौड़ लगा रहा है; उससे दो वर्ष बड़ा जॉन, जो जरा कम उद्दण्ड है; और इन जंगली खेलों की अपेक्षा चिड़ियों का अवलोकन अधिक पसन्द करता है; अठारह वर्षीय हेलेन जो इन तीनों की अपेक्षा अधिक गम्भीर है और अभी से अपने पढ़े हुए वनस्पतिशास्त्र का अभ्यास कर रही है और फिर माँ-बाप हैं, जो अपने बच्चों की तरह ही वासन्ती हवा के स्पर्श से रोमांचित हो उठे हैं। उन्हें आशा है कि देहात के प्रति उनका यह प्रेम और प्रकृति में यह दिलचस्पी उनके बच्चों में भी होगी। शायद उनकी माँ, जो सभी पारिवारिक कामों में अगुआ रहती हैं, सप्ताह के अन्त की इस सैर के लिए सबसे अधिक उत्सुक रहती हैं। यह कहा जाता है कि उन्होंने अपना एक बच्चा भी सैर में प्रसव किया था। एक भी शनिवार को सैर छोड़ने को वह तैयार नहीं थी।

उनके पिता वर्षों तक, हर शनिवार की दोपहर को, घर से लगे हुए अपने छोटे से कारखाने पर ताला डाल देते, अंग्रेजों और जर्मनों के मुकाबिले में पेंसिलें बनाने और बेचने की कठिन समस्या को थोड़ी देर के लिए भुला देते, और अपने परिवार के साथ जंगल की ओर चल देते। पर यह शान्त, मितभाषी

व्यक्ति पेंसिलें बनाने या जंगल की सैर के बारे में [illegible] था, यह कोई नहीं जानता। वह श्रोता थे, पाठक थे, पर स्वयं बहुत कम बोलते थे। जब काम नहीं होता था तो जॉन थोरो या तो समाचार-पत्र पढ़ते या 'मिल डैम' में, जो कानकार्ड का गपशप करने का अड्डा था, लोगों की बातें सुनते। इस प्रकार वह अपने पड़ोसियों के बारे में जितना जान गए थे उतना वहाँ कोई और नहीं जानता था, क्योंकि, जैसा कि हेनरी ने अपने रोजनामचे में लिखा था, ऐसी बातों के लिए उनकी स्मरणशक्ति बहुत तेज थी।

जैसा कि नाम से ही पता चलता है, जॉन थोरो फ्रांसीसी वंश के थे। यद्यपि उनके आदि पूर्वज फ्रांस के निवासी माने जाते हैं, उनके दादा-परदादा चैनेल द्वीप के बन्दरगाह सेन्ट हेलियर से आकर जर्सी में बस गए थे। उनके पिता जो सेन्ट हेलियर के शराब के एक व्यापारी के पुत्र थे, १७७३ में अमेरिका

जिस मकान में उनका जन्म हुआ, वह वाल्डेन वन से कुछ दूरी पर था। वह घर अब भी मौजूद है, यद्यपि साथ वाली ज़मीन पर खिसका दिया गया है।

हेनरी की माँ, कई बातों में, अद्भुत महिला रही होंगी। उन्हें अपने उस पूर्वज, कर्नल एलिशा जोन्स, की संघर्ष करने की प्रकृति संस्कार रूप में मिली थी जो ब्रिटिश ताज के स्वामिभक्त थे और अमेरिकी अधिकारियों के साथ हमेशा ही उलझते रहते थे। वह अधिकारप्रिय महिला थीं, और जिसे पसन्द नहीं करती थीं, उनके लिए तेज जुबान भी थीं। पर जिन्हें वह स्वयं घर बुलाती थीं, उनके प्रति बहुत ही उदार और वात्सल्य से पूर्ण थीं। स्पष्ट बात और खरा व्यवहार—यही उनकी मातृसत्ता के आधार थे। हो सकता है कि उनका शासनपूर्ण व्यक्तित्व और ज्यादा बोलने की आदत ही उनके पति के मनोवैज्ञानिक बहरेपन और बाद में हेनरी के वाल्डेन आश्रम में शरण लेने के कारण रहा हो। चिन्तन करने और उदासीन रहने की आदत हेनरी ने अपने पिता से पाई थी। अपनी माँ से मस्तिष्क और शरीर की अनन्त स्फूर्ति पाई थी जो उनके समस्त जीवन की विलक्षणता रही। चालीस वर्ष की आयु में हेनरी ने अपनी डायरी में जो लिखा था उससे उनकी माँ की जीवन्त प्रकृति का पता चलता है :—"मेरी माँ ने आज उन ध्वनियों के बारे में बताया जो वह अपने बचपन में, वर्जीनिया रोड पर रहते समय सुना करती थीं—गउओं का रंभाना; बतखों का कुड़कुड़ाना, दूर हिल्ड्रेथ में किसी का ढोल बजाना, और 'जो मेरियम' का, जो सीटी बजाने में दक्ष था, अपने घोड़े को सीटी देना। वह कहती है कि घर के और सब लोग जब सो जाते थे तो वह बाहर के दरवाजे पर बैठ जाती थी, क्योंकि पीछे वाले मकान में घड़ी की टिक्-टिक् के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं सुन

पड़ता था।"

थोरो के घर में एक कुटुम्ब नहीं, एक पूरी छोटी-सी बिरा-दरी रहती थी। थोरो की मां, जो इतने अधिक लोगों को खिलाने-पिलाने से कभी नहीं घबराती थी, जिस-तिस बुआओं, चाचियों, मौसियों, रिश्ते के भाई-बहनों और मित्रों के लिए अपने घर का द्वार खुला रखती थीं। इनमें से अधिकांश स्त्रियां होती थीं। इस प्रकार घर पर हेनरी स्त्रियों की दुनिया में रहते थे।

× × ×

हेनरी की प्रारम्भिक शिक्षा ने उनकी स्मृति पर कोई छाप नहीं छोड़ी, पर उन दिनों की याद करने से उन्हें मज़ा आता था जो शिकार ढूंढने और खेलने, डोंगी चलाने, तैरने और स्केटिंग करने में गुज़रे थे। कानकार्ड के इर्द-गिर्द का देहात खेलने के लिए अच्छा स्थान था, जिसमें पथरीले, दलदली चरागाह थे, और उन्हें बीच में काटती हुई, मछलियों से भरी चक्करदार छोटी नदियां सडबरी और असाबेट थीं—जो गांव में आकर मिल जाती थीं और जिनके संगम से मन्द, टेढ़ा-मेढ़ा मस्केटाक्विड का स्रोत बनता था।

आत्म-निर्भरता का अभ्यास वह अभी से कर रहे थे, जो आगे चलकर उन्हें सारे पड़ोसियों से बिल्कुल निराला बनाने वाला था। उन्हें अपनी बुद्धि की प्रवीणता की अपेक्षा हाथों की शक्ति पर अधिक विश्वास करना था।

पश्चिम की ओर जाते हुए सैलानी अब भी दीख जाते थे, पर न्यू इंगलैंड की घुमक्कड़ प्रकृति कब की मर चुकी थी। शारीरिक और मानसिक चंचलता, थोड़े से सामान को लेकर यात्रा करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति, पड़ाव डालना, आज यहाँ, कल वहाँ—सैलानियों के इन गुणों को उन्नीसवीं शताब्दी के न्यू इंग्लैण्ड के सभ्य और सुव्यवस्थित समाज में ढूँढना व्यर्थ था। परिश्रम, आत्म-अनुशासन और मितव्ययिता के कारण न्यू इंग्लैण्ड का वाणिज्य में ही नहीं, संस्कृति में भी सर्वोच्च स्थान था। न्यू इंगलैंड ने दो प्रमुख विश्वविद्यालयों की स्थापना की—हारवर्ड और येल—जिनके माध्यम से उसके निवासी, तत्कालीन यूरोपीय विचारधारा से खास कर ब्रिटेन और जर्मनी की—अवगत रहते थे। इस प्रकार कानकार्ड के दो हजार निवासी उस युग के सबसे अधिक प्रगतिशील विचारों के सम्पर्क में थे। धार्मिक क्षेत्र में, समाज के बुद्धिवादियों ने नया और अधिक स्वतन्त्र धार्मिक विश्वास "यूनिटेरियनिज्म"[1] को अपना लिया था। हेनरी एक गहरी आध्यात्मिक अस्थिरता के वातावरण में रहकर बड़े हुए, जबकि नियतिवाद के नैराश्य से बचाने के लिए, उच्च आशावाद ने स्वतन्त्रता की उज्ज्वल प्रकाश किरण को मुक्त कर दिया था और आदर्शवादियों, सामाजिक स्वच्छ-

---

१. यूनिटेरियन :—जो पुराने ईसाई धर्म के "होली ट्रिनिटी" के (तीन ईश्वर) के सिद्धान्त को नहीं मानते और एक ही ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं।

द्रष्टाओं और नए मतावलम्बियों के एक अखाड़े [illegible] को जन्म दिया था। आरंभ में ही, अपने ही घर में वह क्रांति और सुधार के धुएँ से भरे वातावरण में सांस लेने लगे।

बचपन में हेनरी साधारण देहाती छात्रों जैसे ही थे—सुगठित परिवार की स्नेहपूर्ण सुरक्षा में प्रसन्न। उनकी विद्रोही प्रकृति का, या जीवन की आलोचनात्मक दृष्टि का उस समय कोई आभास नहीं मिलता था। एक बात में उनकी परिस्थिति नंगे पैरों वाले हमजोलियों से भिन्न थी। उनके मां-बाप विवाह से पहले के अपने उच्च जीवन-स्तर को बिल्कुल नहीं भूल पाए थे। जान थोरो को याद था कि उनके पिता कितने सम्पन्न थे। सिन्थिया थोरो भी अपने दोनों ओर के परिवारों की शोभा बढ़ाने वाले सफल व्यावसायिक और सम्पन्न जमींदारों को याद कर लेती थी। इसी कारण स्वयं गरीबी और संघर्ष का जीवन बिताते हुए भी, पूरी कोशिश करते रहे कि बच्चों को गांव की शिक्षा से कुछ अधिक मिल सके। जान थोरो ने घर में ही पेंसिल बनाने का कारखाना चालू किया, और उनकी पत्नी पैसे वाले अतिथियों को ठहराने लगीं। जब उनके पिता ने यह नया कारोबार शुरू किया तो हेनरी केवल छः वर्ष के थे।

से होने लगी जो इन उत्साहपूर्ण शब्दों में व्यक्त है, "निःसन्देह जीने का नाम आनन्द है। उन नन्हीं मछलियों का ख्याल करो जो झीलों में कूदती रहती हैं, असंख्य कीड़े जो अचानक गर्मी की एक शाम को अस्तित्व धारण कर लेते हैं, जंगल में गूंजने वाले हायला के स्वर, तितलियाँ जिन्हें अपने पंखों पर हजारों रंगों में अंकित रूपान्तर और परिवर्तन की जरा भी परवाह नहीं है...।"

कानकार्ड की एक अकादमी में, जहाँ उन्होंने विश्वविद्यालय के लिए तैयारी की, उनकी शिक्षा प्रचलित पद्धति के अनुसार ही हुई—ग्रीक, लैटिन और फ्रेंच। नाचना और बांसुरी बजाना भी उन्होंने सीखा, और संगीत से भी उनका परिचय कराया गया जिसके प्रति उन्होंने काफी उत्साह प्रगट किया। उन्होंने न तो संगीत का अध्ययन ही किया था और न उसका बहुत ज्ञान था, फिर भी वह संगीत से आजीवन प्रभावित होते रहे। उनके शब्दों में, "संगीत एक ऐसे जीवन का परिचय देता है जिसके बारे में न तो किसी ने कभी बताया है और न किसी शिक्षक ने पढ़ाया है।"

किसी भी साधारण मेधावी बालक की तरह उन्होंने किताबी विद्या को ग्रहण किया, क्योंकि तब तक वह उस मनःस्थिति में नहीं पहुँचे थे जिसमें बाद में उन्होंने लिखा था "शिक्षा का क्या प्रभाव होता है? स्वच्छन्द घुमावदार झरने को एक सीधा ठहराव वाला गड्ढा बना दिया जाता है।" स्कूल में जो गणित पढ़ाया गया था उसी की बदौलत आगे जाकर उन्हें फार्मों और जंगलों के सर्वेक्षक का काम मिला। बाहर किए जाने वाले जितने भी कामों की कोशिश उन्होंने जीवन भर की, उनमें यह उनके सबसे अधिक अनुकूल था।

लैटिन, ग्रीक, फ्रेंच और गणित में अच्छी योग्यता पाकर, सोलह वर्षीय हेनरी थोरो ने अक्लमन्द विद्यार्थियों की दो साल

वाली छात्रवृत्ति की सहायता पाकर हार्वर्ड विश्वविद्यालय में प्रवेश किया। कालेज में उन्होंने योग्यता प्राप्त की, और तीन वर्षों में, विशेष श्रेष्ठता न मिलने पर भी, अपने परीक्षकों को संतुष्ट करने में सफल हुए। उनकी रुचि बहुत व्यापक थी, अध्ययन विस्तृत था और प्रकृति स्वच्छन्द। उनके अनुसार, विश्वविद्यालय दूसरों के विचारों और दूसरे युगों में प्रवेश करने के द्वार थे, सामाजिक सम्पर्क या व्यावसायिक योग्यता पाने के साधन नहीं। उनकी आदत थी कॉलेज के पुस्तकालय में अधिक से अधिक समय बिताने की, और स्वीकृत शिक्षाक्रम की बिल्कुल परवाह किए बिना, वह अपनी पसंद की पुस्तकों का अध्ययन करते रहे—विशेष कर अंग्रेज और अमरीकी यात्रियों के संबंधी साहित्य का। हार्वर्ड छोड़ते समय कॉलेज में प्रायः आगे वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उन्हें अपने चुने हुए विषयों का अधिक ज्ञान था। वह सदैव पाठक थे, और जीवन भर हार्वर्ड विश्वविद्यालय से पुस्तकें लाकर पढ़ते रहे।

ऐसी कोई विशेषता नहीं थी जो याद रह जाती, सिवा इसके कि वह प्राचीन अंग्रेजी साहित्य के भक्त थे, और उनके पास गोअर और चाउसर से लेकर एलिजाबेथ-युग तक के काव्य-साहित्य की बहुत-सी पुस्तकें थीं। इस ज्ञान भंडार में वह मौन उत्साह से काम करते रहते थे……उन्हें लोगों की परवाह नहीं थी…उनके सहपाठी बहुत दूर जान पड़ते थे। वह सदा चिंतन से ढके लगते थे, आकृति को सजग नहीं बनाया था। वह गंभीर, नीरस और परिश्रमी लगते थे। उस समय भी उनकी दृष्टि कभी-कभी कुछ खोजती-सी जान पड़ती थी, मानो कहीं कुछ गिर गया हो या कुछ ढूँढ रहे हों। यह दृष्टि थी प्रकृति की अपनी संतान की जो अपनी जननी के रहस्यों का पता लगाना सीख रहा हो। उनकी उस दृष्टि ने ही उनकी पुस्तकों को जड़ और चेतन के ऐसे सूक्ष्म गुणों के वर्णनों से भर दिया है जिन्हें बड़े ध्यान से देखने वालों की दृष्टि भी बहुधा नहीं पकड़ पाती। क्योंकि उनकी प्रखर दृष्टि धरती पर ऐसी चीजें देख पाती थी जिसके अस्तित्व का अनुमान भी औरों को नहीं हो सकता था। मानो मानसिक रूप से वह तभी से अपने गहरे चिन्तन के लिए बनाई हुई किसी काल्पनिक वाल्डेन झील के किनारे बनी कुटिया में रहने लगे हों……।"

वह अब पूर्णरूप से जागरूक थे। यह भावी महान् गद्य-लेखक अंग्रेजी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ अंगों को आत्मसात् कर रहा था, और काव्य-रचना कर रहा था। समाज का भावी आलोचक हारवर्ड के अपने सहपाठियों पर अपने प्रायोगिक तीरों से अभ्यास कर रहा था। छुट्टियों में कानकार्ड जाकर वह रैल्फ वाल्डो एमर्सन को हारवर्ड के समाज का ऐसा तीखा और व्यंगात्मक वृत्तान्त सुनाते थे कि एमर्सन ने उनसे कॉलेज जीवन का इतिहास लिखने का बहुत आग्रह किया। पर हेनरी ने उनका

झुकाव नहीं माना। उनके लिए एस्किलस के अनुवाद या अपनी कविताओं का संग्रह प्रकाशित करना अधिक संभव था। नियति उनके कानों में एक विचित्र राग सुना रही थी, और वह उसके अनुसार चलने भी लगे थे। वह ऐसा राग था जो व्यावसायिक दृष्टि से बेकार होते हुए भी उनको एक निराले मार्ग पर ले जाने वाला था।

: २ :

"मैं लक्ष्यहीन संघर्षों की पोटली हूँ,
जिसे संयोग के सूत्र ने बाँध रखा है।"

—थोरो

हारवर्ड ने थोरो को विद्वान् से कुछ ज्यादा ही बना दिया। उन दिनों की परिपाटी के अनुसार उन्हें लेखक बनने की प्रशिक्षा भी दी। अलंकार-शास्त्र के प्राध्यापक एडवर्ड टी० चैनिंग की कक्षा में, जिसमें एमर्सन और आलिवर वैण्डेल होम्स जैसे लोग रह चुके थे, हेनरी को जिस लेखन शैली की शिक्षा मिली, वह तर्कपूर्ण और सुव्यवस्थित थी। विद्यार्थियों के विचारों की आलोचना विस्तार से की जाती थी। थोरो ने कॉलेज में लिखे अपने निबन्धों को संजोकर रखा था, उनसे अलंकार-शास्त्र की उस कक्षा के उच्च नैतिक स्वर का पता चलता है। मानव-आचरण के किसी गम्भीर पक्ष को लेकर उस पर नियमपूर्वक विवेचनात्मक, विचारपूर्ण और सुलिखित लेख लिखना कठिन काम था, और अन्य विद्यार्थियों की तरह हेनरी ने भी कुछ आडम्बरपूर्ण और नीरस लेख लिखे थे : जैसा कि हम जानते हैं, वह जल्दी ही समाज में एक मौलिक आलोचक बन गये थे। वह हारवर्ड के प्रथम वर्ष में ही थे कि एमर्सन ने उनके बारे में लिखा—"यह लड़का जो कुछ भी कहता है उसमें यों तो समाज का मजाक होता है, पर उसका अर्थ बहुत ही गूढ़ और गम्भीर होता है।" हारवर्ड की चारदीवारी के अन्दर, 'उस लड़के' ने अपने विचार अपने तक ही रखे, यद्यपि एक बार उनका दिन

प्रगतिशील विचारकों की, जो कम आदर्शवादी और अधिक व्यावहारिक थे, राय थी कि समाज आगे यह कदम तभी बढ़ा सकेगा जब श्रमजीवी वर्ग संगठित रूप से सत्ता की ओर बढ़ेगा। वह युग था क्रान्तिकारी ट्रेड यूनियनों, श्रमिकों के अधिकारों की माँग, और टोल्पुडल[1] शहीदों का। वातावरण में अब भी कॉलरिज और वर्डसवर्थ का रोमांसवाद भरा था। कॉलरिज, स्काट, बायरन, शेली, कीट्स आदि का उनकी मृत्यु के बाद जो प्रभाव था, वह अमेरिका में और जगहों की अपेक्षा कम नहीं था। उद्योगीकरण और फैक्ट्री की बस्तियों के कारण जो नई सामाजिक समस्याएँ उठ खड़ी हुई थीं उन्होंने इस पर बाध्य किया कि रोमांसवाद का स्थान अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण ले ले। अमेरिका और यूरोप के बीच बुद्धिवादियों की समुद्री यात्राएँ बराबर होती रहती थीं, और छत्ते की ओर जाती हुई मधुमक्खियों की तरह, वे नए-नए विचारों का मधु लेकर लौटते थे। फ्रान्स से उन्होंने शाटोब्रान[2] और ह्यूगो के रोमांसवाद के अतिरिक्त चार्ल्स फैरियर[3] का आदर्शवादी समाजवाद भी ग्रहण

---

१. टोलपुडल के शहीद—१८३४ में ग्रेट ब्रिटेन में डारसेट के टोलपुड्ल नाम स्थान में छः किसानों ने पहला ट्रेड यूनियन कायम किया था, और इस अपराध में उन्हें आजीवन देश-निकाले की सजा देकर आस्ट्रेलिया भेज दिया गया था। ये छः शहीद टोलपुड्ल मार्टर्ज के नाम से जाने जाते हैं।

२. शाटोब्रान—फ्रैंकायस रैने शाटोब्रान (१७६८-१८४८) फ्रांस के रोमांसवादी लेखक।

३. चार्ल्स फैरियर—फ्रांसीसी समाजवादी जिन्होंने ऐसे समाजवादी आदर्श लोक की कल्पना की है जिसमें आवश्यक काम करने वालों को सब से अधिक, उपयोगी काम करने वालों को उससे कम और

किया और तत्काल ही, न्यू इंग्लैंड में, कैल्विनवादियों का एक छोटा-सा दल बन गया जिन्हें अनजीवियों के आन्दोलन में तो दिलचस्पी नहीं थी, पर चाहते यह थे कि समानतावाद तुरन्त ही अमल में आ जाए। जर्मनी से यह उनके दार्शनिक विचारों का भंडार ले आए, और यूरोपीय विचारधारा के माध्यम से, कुछ न्यू इंग्लैंड निवासी, पूर्वीय रहस्यवाद तक पहुँचने की कोशिश भी करने लगे।

इसका परिणाम था न्यू इंग्लैंड के विचारों का विस्तार और उसकी कल्पना की मुक्ति—उस तरह और नयी बुद्धि की, जो नए विचारों को ज्यादा आसानी से अपना सकती है।

हारवर्ड-काल में, तीस वर्ष की अवस्था में ही विदेशी भाषाओं का प्राध्यापक हो गए थे, अपनी कविता के लिए कीर्त्ति पा रहे थे। उन्हीं दिनों रेलफ़ वाल्डे एमर्सन ने, जो स्वयं भी १८२० के शुरू में हारवर्ड के विद्यार्थी रह चुके थे, इंग्लैंड कर कॉलरिज, वर्डसवर्थ, लैंडर, डीक्वेन्सी और कारलाइल में भेंट की और स्वयं भी लेखक और वक्ता के रूप में नाम कमाने लगे।

१८३० के अन्तिम दिन आशावाद और विद्रोह के थे। एक आम विश्वास था, खास तौर से युवा पीढ़ी में, कि एक नए मानव का जन्म हो रहा है जो अधिक आत्म-निर्भर, साहसी और अधिक चेतन होगा।

एमर्सन अपने श्रोताओं को इस विश्वास द्वारा प्रेरित करते रहे कि वह एक ऐसे पुनरुत्थान में भाग ले रहे हैं जिसके द्वारा मनुष्य अधिक उन्नत होगा। इन अनेकों मौलिक विचारधाराओं की पुष्टि के लिये कोई एक शब्द नहीं था। न्यू इंग्लैंड में केवल 'नवीनता' की चर्चा थी और लोग यही समझते कि इसका आशय उस नए सिद्धान्त से है जो रैलफ़ वाल्डे एमर्सन से सम्बन्ध रखता है। पश्चिमी सभ्यता की उन्नति के इतिहास में वह क्षण साधारण नहीं था, जब १८३७ में, बीस वर्षीय ग्रेजुएट हेनरी थोरो कॉलिज से अपने घर वाल्डेन आए। और १८३७ में, वाल्डेन कोई साधारण गाँव नहीं रहा था, क्योंकि पिछले तीन वर्षों से एमर्सन वहाँ रह रहे थे।

चौंतीस वर्षीय एमर्सन का व्यक्तित्व प्रभावशाली था। उनका प्रभाव बहुत था, खासकर युवा पीढ़ी पर, जिन्हें उनकी इस अपील की आवश्यकता का अनुभव होता था कि प्राणहीन सिद्धान्तों के बोझ को उतार फेंकना चाहिए और हिम्मत के साथ बौद्धिक स्वतंत्रता और मौलिकता की ओर बढ़ना चाहिए। एमर्सन का संदेश किसी भी पीढ़ी के युवा लोगों को आकर्षित

और उनके प्रकृति-प्रेम, स्थानीय कलाओं में दक्षता और साहित्यिक प्रतिभा पर मुग्ध थे। हेनरी को अपने गुरु से बहुत कुछ सीखना था, और बदले में अपनी व्यावहारिक कलाओं में से कुछ उन्हें सिखानी थीं।

थोरो के लिए यूनानी भाषा एक पौरुषपूर्ण जाति के ओज-पूर्ण विचारों और काव्य तक पहुँचने का साधन मात्र थी।

उनकी राय में प्लेटो मन्द और फीका था, पर इलियड अवश्य उस परिश्रम के योग्य था, जो उसे पूर्णरूप से समझने के लिये करना पड़ा। लैटिन लेखकों पर भी यही बात लागू थी। जर्मन समझना आवश्यक था क्योंकि वह सब से आधुनिक विचारों की भाषा थी। फ्रेंच अनुवादों के द्वारा पूर्वीय रहस्यवादों के बारे में भी उन्होंने कुछ जान लिया था।

ऑरेस्टस ब्राउन्सन से मित्रता हो जाने के कारण अंग्रेज समाजवादियों के प्रमुख विचारों पर भी विचार-विनिमय करने का अवसर मिलता था।

सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण था एमर्सन की कृति 'नेचर' (प्रकृति) का अध्ययन, जो हेनरी के हारवर्ड काल में प्रकाशित हुआ था, और जो सीधे उनके हृदय को छूने वाली पुकार थी। उनके अन्दर आत्म-निर्भरता और प्रकृति के ध्यान के द्वारा आध्यात्मिक विकास की जो अस्पष्ट-सी लालसा थी, उसने उसे मूर्त्त रूप दिया।

एमर्सन ने लिखा था, "मनुष्य अपने आप में ही विच्छिन्न है, इसी कारण आज संसार में एकता का अभाव है, और वह छिन्न-भिन्न हो गया है। इस कारण अपना संसार स्वयं ही बनाओ।

जीवन में क्या करना है, इस विषय में युवा ग्रेजुएट हेनरी थोरो के विचार अस्पष्ट और अस्थिर थे। उनके माँ-बाप चाहते थे

साहित्यिक आलोचक की आवश्यकता, नहीं थी। आवारा वह बन नहीं सकते थे, इसलिए, तब तक पिता के पेंसिल के कारखाने में ही हाथ बंटाया जाय। पर पेंसिल के कारोबार के लिये भी समय अनुकूल नहीं था। थोरो की बनाई पेंसिलें बढ़िया किस्म की थीं, और इधर सस्ती विदेशी पेंसिलों ने बाजार पर कब्जा, कर लिया था। यद्यपि उनका कारोबार 'थोरो एण्ड सन्स' कहलाता था, और बेटे, खास तौर से हेनरी, इस काम में दक्ष भी थे, पर काम इतना था ही नहीं कि सब को व्यस्त रख सके।

लड़कों को जीविका के और रास्ते खोजने पड़े। गाँव के स्कूल में हेनरी के साथ जो कांड हो गया था, उसके बाद उन्हें अपना ही एक स्कूल चलाने की सूझी। जून, १८३८, में उन्होंने अपना स्कूल खोल दिया। तीन महीने में जॉन और हेनरी थोरो ने खाली पड़ी हुई कानकार्ड अकादमी को, ले लिया। उनके रजिस्टर में पच्चीस छात्रों के नाम दर्ज थे, और प्रतीक्षा करने वालों की लम्बी सूची थी। कम-से-कम कुछ समय के लिए उनकी आर्थिक सफलता निश्चित थी।

सभी से सुनने में आता है कि स्कूल अच्छा था; पाठ्य-क्रम की योजना अच्छी थी, और बिना मारपीट के समझ-बूझ के साथ अनुशासन भी रखा जाता था। वह प्रगतिशील स्कूल था क्योंकि हेनरी एमर्सन की गोष्ठी में, जहाँ वह नियमपूर्वक जाते थे, ऐसे लोगों से मिलते रहते थे, जो शिक्षा सम्बन्धी नये सिद्धान्तों को काम में ला रहे थे।

एमर्सन के घर वह अक्सर गोष्ठी के वाक्-पटु सदस्यों को पूरे विश्वास के साथ शिक्षा सम्बन्धी नये और विचित्र सिद्धान्तों की व्याख्या करते सुनते। पर वह उनके प्रवाह में एकदम बह नहीं गए। उनके अपने चरित्र और मान्यताओं का निर्माण हो चुका था, उन्हें अभी परिपक्व होना था, पर उनमें कोई खास

जॉन चौबीस वर्ष के थे और हेनरी बाईस के। अच्छी खासी जिन्दगी थी, पर वह दोनों ही अपनी उम्र की स्वाभाविक भावनाओं में उलझने से बच नहीं सके। दोनों की उम्र प्रेम करने की थी, और उस ग्रीष्म ऋतु में दोनों एक ही लड़की से प्रेम करने लगे। वह थी उनके एक सहपाठी की बहन और परिवार की मित्र, सत्रह वर्षीया सुन्दरी एलेन सेवाल। कॉनकार्ड और मेरिमाक के कैम्प-फ़ायर के समय में वह दोनों के बीच एक छाया सी आने लगी, यद्यपि केवल हेनरी ने ही यह अनुभव किया। जॉन ने एलेन से विवाह करने की अपनी आशा को गुप्त नहीं रखा। हेनरी ने कुछ नहीं कहा। उनका प्रेम गुप्त था, और लगता यही था कि हमेशा ही गुप्त रहेगा।

एक वर्ष बीत गया। अगली गर्मी में जॉन ने एलेन से विवाह का प्रस्ताव किया! बहुत झिझक के बाद उसने इंकार कर दिया, जिससे हेनरी के दिल में नई उम्मीद जाग उठी। कुछ महीनों बाद, कुछ पत्र व्यवहार के पश्चात्, हेनरी ने उसके घर सिच्युएट के पते पर पत्र लिखकर अपना प्रेम प्रकट कर दिया। और अब उसकी बारी थी अपनी आशाओं के महल को धूल में मिलते देखने की। वह थोरो बन्धु को बहुत पसन्द करती थी, पर प्रेम उनमें से किसी से भी नहीं करती थी। उसको यह सोचकर दुःख होता था कि अब उनके बीच पहले जैसी बात नहीं रह सकेगी। इस सिलसिले में लिखा हुआ उसका एक पत्र सुरक्षित है। "मैंने उस शाम को 'एच. टी.' को पत्र लिखा। आज तक कभी कोई पत्र लिखते हुए मुझे इतना दुःख नहीं हुआ। मुझे यह ख्याल सहन नहीं हो सका कि वह दोनों मित्र, जिनका साथ मेरे लिये इतना आनन्ददायक रहा है, अब पहले की तरह खुलकर मुझ से नहीं मिलेंगे। मेरा पत्र बहुत संक्षिप्त था, पर मुझे आशा है कि जैसा होना चाहिए वैसा ही था।"

हेनरी फिर कभी किसी लड़की की ओर झुक नहीं सके। उनकी कल्पना में एलिन की जो आदर्श मूर्ति स्थापित हो चुकी थी उसके बाद सभी युवतियों की ओर से उनका मन फिर गया।

: ३ :

"हमारा जीवन नदी में जल के समान है—सम्भव है इस वर्ष वह हमेशा से ज्यादा ऊपर तक चढ़ आये और सूखी, प्यासी धरती को जल-प्लावित कर दे।

—थोरो : वॉल्डेन

"मेरे नेक मित्र हेनरी ने अपनी सरलता और स्पष्ट, सहज-बोध द्वारा उस सूनी दोपहर में जान डाल दी"...एमर्सन ने यह अपनी डायरी में लिखा था। सारी दोपहर वह एमर्सन के बगीचे में साथ-साथ रहे। जान पड़ता है कि कम-से-कम उस बार एमर्सन केवल सुनते रहे, बोले नहीं। बढ़ावा मिलने पर हेनरी खूब बोलते थे और कुछ विषयों की उनकी जानकारी तो एमर्सन से अधिक थी—जैसे रैड इंडियन और कानकार्ड के आस-पास पाए जाने वाले उस जाति के अवशेष, कैनेडा के फ़र के तिजारती (महान् यात्री और प्रकृति-प्रेमी हेनरी एलेक्जेन्डर की पुस्तक 'ट्रैवेल्ज़ एण्ड एडवेन्चर इन कैनेडा' पढ़ने के बाद उनमें यह दिलचस्पी भड़क उठी थी)। पर सबसे ऊपर थी स्वयं प्रकृति—वह भावात्मक प्रकृति नहीं जिसके विषय में एमर्सन और कारलाइल ने इतना कुछ लिखा था, पर धरती का वास्तविक, मूर्त संसार, चट्टानें, हवा, पेड़-पौधे, पशु और मनुष्य।

प्रकृति के अध्ययन में इस गहरी दिलचस्पी के कारण थोरो और उनके बुद्धिवादी मित्रों में जो अन्तर था, वह समय के साथ-साथ बढ़ता गया। कानकार्ड की सैर की प्रत्येक छोटी से छोटी बात को वह डायरी में लिख लेते थे। यह एक ऐसी आदत थी जिसका अनुकरण स्वयं एमर्सन भी करना चाहते थे—"यदि

ज़िन्दगी काफ़ी लम्बी हो तो मेरी हज़ार कृतियों में एक पुस्तक प्रकृति पर भी अवश्य हो। उसमें, जहाँ-जहाँ मैं डेरा डालूँ, वहाँ की प्रकृति, उसका ज्योतिष-शास्त्र, वनस्पति-शास्त्र, ऋतुविज्ञान, उसका चित्रोपम सौन्दर्य और कविता, सब कुछ हो। कोई भी पक्षी, कोई भी कीड़ा या फूल भुलाया न जाए।"

पर एमर्सन अपनी कार्य-योजना से बँधे थे, उन्हें जीवन में एक उद्देश्य पूरा करना था। प्रकृति विज्ञान उनके लिए केवल एक शौक हो सकता था। और उसके लिए उनमें वह स्वाभाविक रुझान नहीं थी जो हेनरी में थी। एमर्सन ने हेनरी की यह नैसर्गिक प्रतिभा देखकर सोच लिया था कि दर्शन और साहित्य में थोरो का जो योगदान होगा उसका मर्म यही होगा।

एमर्सन ने थोरो में जो गुण पाए उनके कारण उन्हें 'कानकार्ड के असली निवासी' के रूप में देखा। एमर्सन अधिक विद्वान् थे, ज्यादा भ्रमण कर चुके थे, और अधिक संसारी जीव थे पर हेनरी को कानकार्ड में बहुत अधिक सैर करने का सम्मान मिला था। उनका विश्वास था कि क्षण-क्षण में विभिन्न रूप दर्शाने वाले विश्व-भ्रमण की अपेक्षा, अपने पास-पड़ोस के निकट सम्पर्क से ज्यादा सीखा जा सकता है। इसमें उसको कोई सार्थकता नहीं दीखती थी कि आधी दुनिया का चक्कर लगाया जाय केवल यह गिनने के लिए कि जंजीबार में कितनी बिल्लियाँ हैं। वह इसे सत्य नहीं मानते थे कि दुनिया के एक भाग के लोग दूसरे भाग के निवासियों के रहन-सहन के बारे में नहीं जानते। "सारे देशों के लोगों का जीवन एक-सा ही है—एक ही प्रकार की अनुभूतियों से भरा।"

हेनरी उन टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में बार-बार जाते जो किसी निर्जन रास्ते में जाकर खत्म हो जातीं और अक्सर उन्हें कानकार्ड के चरागाहों के पार सूने खेतों, उजड़े बागों या दूर जंगलों

और झीलों में पहुँचा देतीं। वह 'मस्केटाकिड' नदी के किनारे-किनारे चलते रहते, (उन्हें रैड इंडियन लोगों द्वारा दिया हुआ कानकार्ड नदी का यह पुराना नाम अधिक प्रिय था) जो शाह-बलूत के पेड़ों से भरे उन चरागाहों के बीच से रेंगती चली जातीं जहाँ अम्लबदरी के पेड़ काई की तरह छाए हुए थे, और अंगूर की लताओं से उलझे हुए कुट्टिमदारू और भोज पेड़, धूप के लिए शाहबलूत और चीड़ के ऊँचे पेड़ों से मुकाबिला कर रहे थे।

प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में वह लीन हो जाते थे—मछली, स्तनधारी जीव, कीड़े-मकोड़े, पक्षी, फूल, पेड़-पौधे, सब के बारे में वह एकाग्रचित्त पैनी दृष्टि और मौलिक बुद्धि से जो कुछ देखते-सोचते वह तुरन्त लिख लेते। प्रकृति से उनका ऐन्द्रिक संपर्क था—वह उनकी इन्द्रियों को रोमांचित करती थी। उनका दृष्टिकोण निरपेक्ष, वैज्ञानिक नहीं था। गाँव को छोड़ने के बाद उनमें जो परिवर्तन हुआ, उससे उनके मित्र प्रभावित थे। जंगलों में रहते हुए पूर्णरूप से सजग रहते थे—उस रोमांच के वश जो किसी अलौकिक घटना की आशा से होता है।

पेड़-पौधों में दिलचस्पी जगने पर, या दूर-दूर तक छिटके हुए पौधों की बढ़त को ध्यान से देखने के लिए, हर रोज बीस-तीस मील पैदल चलते। पर वह बिना कुछ किए, घण्टों चुप-चाप बैठे रहकर भी अपना अध्ययन जारी रख सकते थे—यहाँ तक कि जंगली जानवर अपना जंगलीपन भूलकर उनके आस-पास आ पहुँच जाते। नदियों के किनारे पड़े-पड़े घण्टों छछूं-दरों और मछलियों की लीला देखते, यह देखते कि हाथ बढ़ाकर नन्हीं 'पाउट' मछली को उसके घरौंदे से कैसे पकड़ निकाला जा सकता है, पीले रंग की धनुषाकार मछलियों को थपथपाते और कीचड़ में धँसकर कछुए की झिल्ली पकड़कर उठा लेते। उड़न-गिलहरियों, कछुओं के अण्डे सेने और उल्लू की आवाज

का वर्णन उन्होंने किया है। कछुओं, चूहों, बाजों, और बुलबुलों, फर्न, काई, पेड़ों पर कीड़ों द्वारा बनाए घाव, सोतों का घुमाव, भूदृश्यों का बनना, इन सब का वर्णन उन्होंने किया है। इनमें से हर एक आपस में सम्बद्ध है। किसी की भी उपेक्षा करने से बड़ी हानि होगी।

सर्दियों में सारे देहात पर उनका अधिकार था। उन्होंने लिखा है, "कल मैंने बर्फ पर फिसलती हुई एक लोमड़ी का पीछा किया। वह बार-बार अपनी पिछली टांगों पर बैठ जाती और भेड़िये के बच्चे की तरह मेरी ओर भूँकती। मैं सीधे उसकी ओर लपका तो वह पूरी रफ़्तार से दौड़ी। मैं स्थिर खड़ा हो गया तो, उसका भय कम न होने पर भी, किसी विचित्र और उसकी प्रकृति के किसी दृढ़ नियम ने उसे भी रोक दिया और वह फिर अपनी पिछली टाँगों पर बैठ गयी......।" "या फिर वह बर्फ पर चलते हुए अप्रत्याशित आनन्द का अनुभव करते।" बर्फ तीन फीट मोटी है......कल रात पारा शून्य से तीस डिग्री नीचे गिर गया था......प्रकृति के सारे फव्वारे बन्द हो गए। पथिक रास्ते में ही जम जाता है। पर दूर से उस भोजवृक्ष के नीचे लाल रंग की छाती वाले चटक पक्षियों का दल जल्दी-जल्दी भोज के बीच चुग रहा है. और बर्फ की धूल झाड़ रहा है।

कैसा शानदार विपर्यास है। ठंडे सफेद बर्फ पर गर्म रंग, सुर्ख छाती, कितनी अलौकिक, कैसी सुकुमार बनावट, इस रूखी और बंध्या ऋतु में पक्के रंगों की कैसी छटा!

ऐसे अवसर भी आते थे जब कारलाइल की प्रतिध्वनि की तरह, थोरो ने ब्रह्माण्ड के दैवी रहस्य या सौन्दर्य की अथाह गहराइयों की चर्चा की थी। एमर्सन को थोरो में एक आदर्श

"ट्राण्सेण्डेण्टेल"[1] अनुयायी की झलक मिलती थी। अभी वह ज़्यादा आजाद तबीयत थे, पर उन्हें यह विश्वास था कि निर्लिप्त-सा रहने वाला युवक जो स्वीकृत सिद्धान्तों और जीवन की महत्त्वाकांक्षाओं से मुक्त था, उस घेरे में लाया जा सकेगा। गिरजे को वह छोड़ चुके थे, और एमर्सन के झंडे के नीचे इकट्ठे होने वाले स्वाधीन आत्माओं की तरह वह भी विचारों के नए मोड़ और जीवन के नए सिद्धान्तों के बारे में सोचने को तत्पर थे। हेनरी निःसन्देह एक ऐसे युवक थे जिसे बढ़ावा मिलना चाहिए, और शीघ्र ही वह एमर्सन के घर नियमित रूप से जाने वालों में हो गए।

एमर्सन के घर में उन्होंने देखा कि उनकी दूसरी पत्नी लिदियन भी उन्हें उतना ही चाहती थी जितना स्वयं रैल्फ वाल्डो। लिदियन से उसकी स्थायी और स्नेहपूर्ण मैत्री स्थापित होने को थी। पीली-सी, नाजुक और कोमल स्वभाव की, उसके कुशल क्षेम की चिन्ता, उसकी उन्नति में दिलचस्पी, और उनके कई विचारों के प्रति सहानुभूति रखने वाली लिदियन हेनरी की दृष्टि में, आदर्श नारीत्व की ऐसी मूर्ति थी जो किसी युवा कवि के गीतों की प्रेरणा बन सकती थी। उससे बहुत भिन्न एक और महिला से हेनरी की अक्सर एमर्सन के घर मुलाकात हो जाती थी। वह थी मार्गरेट फुलर जो एक प्रतिभाशील लेखिका, "नवीनता" की पक्की अनुयायी और एक ओजस्विनी स्त्री थी। वह हेनरी को एक होनहार और अक्खड़ युवक के रूप में देखती थी, जो उसे पसन्द तो था, पर जिसे ज़्यादा सिर

---

१. ट्राण्सेण्डेण्टलिज़्म :—१८४० में अमेरिका के न्यू इंग्लैंड में रैल्फ वाल्डो एमर्सन द्वारा चलायी गयी एक नयी धार्मिक और दार्शनिक विचारधारा जिसने तत्कालीन साहित्य और दर्शन को बहुत प्रभावित किया था।

चढ़ाना ठीक नहीं समझती थी।

एमर्सन के घर, जो उनकी गोष्ठी का अड्डा था, हेनरी कॉनकार्ड के बुद्धिवादियों को, अपने गुरु के सामने, 'नवीनता के सिद्धान्त की व्याख्या करते सुनते थे। वह इन अनुयायियों को परख सकते थे और देख सकते थे, कि बाहरी साज-सज्जा के पीछे वास्तव में वह किस कोटि के व्यक्ति हैं। मन में शंका होने पर वह सदा ही उनका बाहरी आवरण खींच फेंकने को आतुर रहते थे। इन वाक्पटु, उग्र विचार और उत्साही लोगों की बातों के लिये हेनरी के मन में सराहना भी थी और कुछ अविश्वास भी। व्यक्तिगत रूप से वह उन सबको पसन्द करते थे, पर उनके समूह से दूर ही रहना चाहते थे, खासतौर से जब वह अलग-अलग समुदाय बनाने की बात करते थे।

१८४० में एक घटना घटी जो अमेरिकी इतिहास के लिये तो छोटी-सी बात थी, पर थोरो के जीवन के लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी। यह घटना थी 'डायल' शीर्षक से न्यू इंग्लैंड के 'ट्रांसिडेण्टल' वर्ग के आडम्बरपूर्ण और लघुजीवी मुख पत्र की स्थापना। 'डायल' का प्रकाशन बोस्टन से होता था, जबकि वह नगर 'नए संसार' की संस्कृति का केन्द्र बना हुआ था। इस पत्र के पाठक थोड़े ही थे—तीन सौ से भी कम। पर उसने सारे संसार के बुद्धिवादियों का ध्यान आकर्षित किया।

हेनरी के समान युवक लेखकों का परिचय कराने के लिये जिनकी पहली रचनाओं के लिए, अन्यत्र प्रकाशक न मिलता, यही एक पत्र था। 'डायल' की प्रकाशक थीं, साहसी महिला एलिज़बैथ पीबॉडी, जिन्होंने बोस्टन के वेस्ट स्ट्रीट पर अपना प्रसिद्ध प्रकाशगृह खोला था। उनके प्रकाशनगृह ने 'ट्रांसिडेण्टल' विचारधारा का और भी साहित्य छापा और उनके बहनोई नैथेनियल हॉथार्न की पहली कृतियां भी प्रकाशित कीं।

१८४० से १८४२ तक "डायल" की सम्पादिका मार्गरेट फुलर थीं। वह युवा स्कूल अध्यापक थोरो की रचनाओं को अभी कच्चा समझती थीं, और उनके कई लेखों को उन्होंने अस्वीकार भी कर दिया। इससे थोरो के आत्माभिमान को चोट अवश्य पहुँची, पर उनकी शैली में भी सुधार हो गया। उनका सौभाग्य था कि उन्हें एमर्सन जैसे शुभचिंतक मिले जो उन्हें उत्साह बढ़ाने वाले परामर्श देते रहे और लिखने को उकसाते रहे। उन्हें इस बढ़ावे की जरूरत भी थी क्योंकि यह उनकी आकांक्षा बनती जा रही थी कि लिखना उनकी जीविका का एक अंश बन जाए। वह सोचते थे कि अपने को किसी नीरस रोजगार के लिए बेचने के खतरे से अपनी रक्षा करने का एकमात्र उपाय लिखना ही है। उन्होंने लिखा था "किसी भी पेशे में फँसने वाले लोगों का हमेशा के लिए अन्त हो जाता है। दुनिया उनका मरसिया पढ़ सकती है।"

१८४१ में जब, भाई की बीमारी के कारण उन्हें स्कूल बन्द करना पड़ा तो उन्हें चिन्ता से कुछ राहत मिली होगी। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि जब तक बिल्कुल मजबूरी न हो, अध्यापन कार्य नहीं करेंगे। उन्हें आजादी अपनी पकड़ में आती दिखायी दी। "मैं ग्रहों से भी अधिक मुक्त हूँ········ मैं जनमत, शासन, धर्म, शिक्षा, समाज, सब से दूर जा सकता हूँ ········। धन्य भाग्य, जमीन में हमारी जड़ें धंसी नहीं हैं······ और यहाँ ही सारी दुनिया खत्म नहीं हो जाती। कहीं मनर्क बन गए तो गर्मियों में टिएरा डेल········फ्युगो की सैर के लिए नहीं जा सकते।

पर स्पष्ट है, कि वह केवल शरीर की आजादी नहीं चाहते थे। उन्हें आत्मा की निष्क्रियता का, उसमें जंग लगने का डर था। उन्होंने लिखा था, "हमारे हाथ-पैरों को तो काफी जगह

मिल जाती है, पर एक कोने में पड़ी हमारी आत्मा को जंग लगता रहता है।" अपनी आजादी को बनाए रखने का दृढ़-निश्चय करके वह माँ-बाप के घर से अलग कहीं रहने की जगह खोजने लगे। गरीब लेखकों की तरह भूखे रहने के लिए उन्हें किसी अटारी की खोज नहीं थी, वह तो चाहते थे किसी फार्म से लगा हुआ घर, जहाँ वह कम-से-कम आमदनी में निर्वाह कर सकते। वहाँ उन्हें सोचने का, प्रकृति के अध्ययन का और लिखने का पूरा अवकाश मिलता। कभी-कभी अपने पड़ोसियों के यहाँ मज़दूरी कर के भी वह अपने सादे जीवन के लिए कुछ कमा सकते थे। लेकिन जैसा घर वह चाहते थे, नहीं मिला। अभी वह सोच ही रहे थे कि दूसरे घर की तलाश करते रहें या खुद ही एक बना लें कि एमर्सन ने एक नौकरी का प्रस्ताव भेजा, जिसे उन्होंने अप्रैल १८४१ में स्वीकार कर लिया।

काम की यह जगह खास हेनरी के लिए ही बनायी गयी थी ताकि हेनरी को जैसा जीवन चाहिए था, वह मिल सके··· काफी अवकाश, मित्रतापूर्ण घर, अच्छा भोजन·········करीब-करीब पूरी आजादी। पर इससे एमर्सन का भी लाभ था। रैल्फ वाल्डो को भाषणों के दौरे पर जाना, और हफ्तों तक घर से बाहर रहना था। हेनरी परिवार का सदस्य बनकर गृहस्वामी की अनुपस्थिति में उसका काम-काज संभाल सकते थे। रैल्फ वाल्डो के लिए इससे अच्छी व्यवस्था और क्या हो सकती थी? हेनरी एमर्सन के बच्चों को बहुत प्यार करते थे, लिदियन को भी वह पसन्द थे और एक कुशल और विश्वसनीय प्रबन्धकर्त्ता हो सकते थे।

बाग की देखभाल, फल के पौधों की कांट-छांट और मुर्गियों की सार-सँभाल कर सकते थे। शाम को लिदियन का मन बहला सकते थे और अतिथियों के सत्कार में हाथ बँटा सकते थे।

उनको अलग कमरा और ऊपरी खर्च मिलता था, पर वेतन नहीं, क्योंकि एमर्सन अमीर नहीं थे। पर यह उनके लिये कठिन नहीं था जिसने अपनी डायरी में अपनी यह गुप्त प्रार्थना लिखी हो "अमीरी से संघर्ष के अतिरिक्त, और किसी संघर्ष में मुझे मत डालो।" फिर काम भी हल्का होगा, जब मर्जी हो, आ-जा सकते हैं, और परिवार के लोगों के समान ही होंगे। एक ऐसे लेखक को, जो अभी एक कली की अवस्था में हो, इससे ज्यादा और क्या चाहिए था ?

एमर्सन और अल्काट ने योजना बनायी कि उन दोनों के परिवार एमर्सन के घर में रहें, पर उनकी अधिक व्यवहार-कुशल पत्नियों ने यह प्रस्ताव रद्द कर दिया।

अल्काट परिवार के बदले हेनरी आ गए। रैल्फ वाल्डो को बागबानी में न तो रुचि थी और न उसके लिए शक्ति ही थी, पर जब वह घर में होते तो हेनरी के पीछे-पीछे बाग में कुछ न कुछ किया करते। हेनरी के साथ जंगल की सैर में उन्हें नया आनंद आता और उन्हें ऐसे पेड़-पौधे और पक्षी दिखाए जाते जिनके अस्तित्व के बारे में उन्हें पता ही नहीं था। एक दिन हेनरी उन्हें कानकार्ड नदी पर नाव में पूर्णिमा में प्रकृति का सौन्दर्य दिखाने ले गए। एमर्सन ने मुग्ध होकर अपनी डायरी में लिखा "एक ही खेत से होकर हम नाव तक गए और फिर चप्पू के एक ही आघात से हम प्रकृति के भीतर पहुँच गए। समय का बोध, विज्ञान, इतिहास सब कुछ पीछे छूट गया।"

यह दो वर्ष कानकार्ड के सांस्कृतिक जीवन के हृदय-स्थल में रहने वाले व्यक्ति के लिए घटनापूर्ण थे। "डायल" और एमर्सन की ख्याति द्वारा संयुक्त, ज्यादा से ज्यादा "ट्रान्सडेण्टलवादी" मित्र कानकार्ड में रहने के लिये आने लगे और उनकी उपस्थिति से हेनरी का जीवन अधिक गहरा और गंभीर होता गया।

उत्साही और स्फूर्ति देने वाले ब्रांसन एलकॉट आए, जिनके .....
आदर्शवाद की परीक्षा रहस्यवादी जिज्ञासुओं के उस स्वप्न
"फ्रूटलैंड्स" समाज द्वारा शीघ्र ही होने वाली थी। एक दूसरे
विद्रोही एलेरी चैनिंग भी आए जो इलियोनिस में एकांतवास करने
के लिए हारवर्ड से भाग आये थे। चैनिंग ने मार्गरेट फुलर की
वहन से १८४२ में विवाह कर लिया और कानकार्ड में वस गए।
फिर आये नैथोनियल हाँथार्न जो अपनी पत्नी सोफिया (एलिज़बेथ
पीवाडी की वहन जो अब तक "डायल" की प्रकाशक थीं) के
साथ कानकार्ड में रहने आए थे। यह सभी हेनरी के मित्र
वन गए।

उन सभी का साहित्य की ओर झुकाव था, और सभी ने
हेनरी को और अधिक कविताएँ और लेख लिखने को प्रोत्साहित
किया। १८४२ में 'डायल' का सम्पादन-भार, मार्गरेट फुलर से
एमर्सन ने स्वयं अपने हाथों में ले लिया था जिसके फलस्वरूप
हेनरी की काफी रचनाएँ उसमें छपने लगीं और इससे उन्हें संतोष
मिलने लगा। पर खेद इस बात का था कि उस साधनहीन-पत्र
में स्थान पाने के लिए किसी प्रकार की प्रतियोगिता नहीं थी,
जैसा कि हेनरी को, १८४३ में कुछ दिनों के लिए उसका संपादन-
भार संभालने पर, स्वयं ही मालूम हो गया। इस ज्ञान से उनके
संतोष पर पानी-सा पड़ गया।

थोरो उन दिनों अधिकतर दार्शनिक या वर्णनात्मक लेख
लिखते थे और या फिर ग्रीक, लैटिन तथा पूर्वीय साहित्य का
अनुवाद करते थे। फिर भी उनके मित्रों ने उन्हें एक नवोदित
कवि के रूप में ही देखा। एमर्सन ने खास तौर से उन्हें कविता
लिखने के लिए प्रोत्साहित किया, और थोरो ने अपनी डायरी में,
इस सम्बन्ध में अपनी कृतज्ञतापूर्ण श्रद्धांजलि भी अर्पित की
है—"एमर्सन की विलक्षण प्रतिभा वेजोड़ है। मनुष्य में जो दैवी

अंश है, उसकी इससे अधिक सहज, व्यवस्थित और स्पष्ट अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। युवकों पर उनका जितना प्रभाव पड़ता है, उतना और किसी का नहीं। उनके अपने रचे संसार में हर एक व्यक्ति कवि होगा···।" एमर्सन के संरक्षण में थोरो जब आए थे तब, कविता में एक शिशु से अधिक नहीं थे। और अब 'डायल' के द्वारा साहित्य-जगत् में प्रविष्ट हो गए थे। पर 'डायल' में प्रकाशित उनकी सर्वोत्तम रचना कविता नहीं थी। १८४२ में उनका लम्बा निबन्ध 'मैसाचुसेट्स का प्राकृतिक इतिहास' छपा; जो विषय-वस्तु के कुशल प्रतिपादन और वर्णन के चमत्कार के कारण इसका स्पष्ट संकेत बन गया कि भविष्य में हेनरी गद्य-लेखक के रूप में ही चमकेंगे। 'वाचुसेट की सैर' ने जो उसके अगले वर्ष छपा, इस बात की पुष्टि कर दी कि यात्रा वृत्तान्त लिखने की उनकी योग्यता असाधारण है।

एमर्सन के घर रहने के कारण हेनरी को अध्यापन कार्य छोड़ने के बाद, और भविष्य की योजना बनाने की मजबूरी के पहले, कुछ विश्रान्ति मिल गया। इस कष्टपूर्ण निश्चय को दो वर्ष तक टाल सकने के कारण उनके विचारों ने जड़ पकड़ी, उनके अनुभव बढ़े, और कानकार्ड के प्राकृतिक इतिहास की जानकारी बढ़ी। यह वर्ष बिल्कुल चिन्तारहित आनन्द के होते, यदि १८४२ में, एमर्सन के छोटे बेटे वाल्डो और हेनरी के भाई जॉन की अचानक मृत्यु न हो जाती। जॉन के क्षयरोग से पीड़ित हो जाने के कारण स्कूल बन्द कर देना पड़ा था। रोग से तो जॉन को कुछ दिनों के लिए मुक्ति मिल गई थी और वह घूमते-फिरते भी रहे। पर, १८४१ के अन्त में, एक दिन हजामत बनाते समय उस्तरे से कहीं कट गया और रक्त में विष फैल जाने से, कुछ ही दिनों में उनकी मृत्यु हो गई।

जॉन की मृत्यु के बाद हेनरी ने अपने को जितना अकेला

पाया उतना और कभी नहीं। जुलाई के महीने में वह गर्म मैदानों को पार करते हुए, वासुचेट पहाड़ी की चोटी पर, ठंडक में अपने मन को फिर से स्वस्थ करने चले गए। उत्तरी क्षितिज की ओर मोनाड्नोक की एकान्त चोटी को देखकर तय कर लिया कि एक न एक दिन उस पर अवश्य चढ़ेंगे। अधिक सशक्त होकर वह एमर्सन के घर अपने कमरे को लौटे और 'बॉस्टन मिसलेनी' नामक पत्र के लिये अपनी उस सैर का वृत्तान्त लिखा।

एमर्सन के घर बिताए दो वर्षों में हेनरी को साहित्यिक सफलता की आशा तो बँधी, पर एमर्सन की तरह अपने विचारों को लोकप्रिय भाषणों और पुस्तकों द्वारा व्यक्त किए बिना, केवल साहित्यिक लेखों से जीवन-निर्वाह की कोई संभावना नहीं जान पड़ी। वह भाषण देने भी लगे, पर कॉनकार्ड के बाहर नहीं। हो सकता है किसी दिन वह प्रसिद्ध भी हो जाएँ, पर अभी निर्वाह कैसे हो? उनको तो मुक्त जीवन की गहरी लालसा थी। उनको लगता था कि उन्होंने अपने को कोई ऐसा काम करने पर मजबूर किया जो उनके अनुकूल न हुआ तो वह अपने सिद्धान्तों के प्रति सच्चे नहीं रह सकेंगे। उनके चरित्र की आंतरिक शक्ति का तभी पूर्ण विकास हो सकेगा, जब वह शरीर और मन दोनों से ही स्वच्छन्द हो।

अपनी डायरी में उन्होंने लिखा था—"जबर्दस्ती और कड़ाई से सच्चा ज्ञान नहीं प्राप्त होगा, वह होगा स्वच्छन्दता और बालकों जैसे मुक्त आनन्द से। काम और शीघ्रता पर जो आज-कल ज़ोर डाला जाता है, प्रकृति हर जगह उसका विरोध करती है। हेनरी, जिधर भी जा सकते, लंबी सैर के लिए निकल जाते और उनकी राय में, धनोपार्जन में लगाए हुए एक दिन से ज्यादा उपयोगी वह बारह घंटे हैं जो मैंने मेंढकों से आत्मीयता से बातें करने में बिताए। 'उनको घर की सुविधा से दलदल का गीलापन

ज्यादा पसन्द था यदि, शाम के वन्दूक के समान तितलोवे की गरज सुनाई पड़ सके।'

मनुष्य को वह वहुत कठोर, वहुत नैतिक, वहुत साधारण, वहुत तार्किक और घर से वहुत बँधा हुआ पाते थे। वह कहते थे, "काश! हिरन की तरह मनुष्य की जाति भी केवल जंगलों में पाई जाती।

क्रमशः वह विल्कुल निराले जीवन की ओर हटने लगे—उनके शब्दों में, "शान्त-गम्भीरता और आलस्य के एशिया देश में।" जिस जीवन की उन्हें इतनी खोज थी वह समाज उन्हें नहीं दे सकता था। न ही वह समाज की स्थूल रूप में कोई सेवा कर सकते थे। उन दोनों की दिशाएँ विपरीत थीं। अपने प्रिय स्थानों की सैर कर आने के वाद, १८४० में उन्होंने लिखा था, "जव मैं वाल्डेन झील के तट पर धूप सेंकता हूँ, उसकी उष्णता और उसकी कलकल ध्वनि मुझे पिछले सभी वन्धनों से मुक्त कर देती है।" समाज जैसा चलता रहा है उसी तरह चलता जाएगा, पर वह प्रकृति में खोज निकालेंगे कि उसके पास मानव-जाति के लिए कुछ ज्ञान है या नहीं। पर उस ज्ञान की परिभाषा उनके पास नहीं थी। मार्च १८४२ में वह वस इतना ही कह सके थे, "मैं अपने जीवन की सारी पूँजी खुशी से मानव-जाति को दूँगा। उन तक वह पहुँचाऊँगा जो मेरी सवसे वहुमूल्य देन होगी...मैं उनके हित के लिए सूर्य की किरणों की छान-बीन करूँगा।"

एमर्सन परिवार के साथ उनके जीवन गरम होने को आ गया, तव तक जीवन के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोण और अपना पक्का लक्ष्य स्थिर नहीं कर पाये थे। अव वह उस एक-मात्र लक्ष्य की ओर ही वढ़ने लगे जो इस समय उन्हें दीख रहा था—जीविका के लिए लिखना और भाषण देना। एमर्सन फिर उनकी सहायता के लिये तत्पर थे। उन्होंने थोरो को अपने वड़े

भाई विलियम एमर्सन के बेटे का शिक्षक बनाकर न्यूयार्क के पास स्टेटन द्वीप को भेजा। उनका ख़याल था कि इस तरह हेनरी न्यूयार्क के लेखक—प्रकाशक जगत के समीप रहेंगे जो उनकी अपनी सफलता के लिये हितकर होगा।

उन्होंने कई मित्र बनाये। पत्रकारिता, प्रकाशन, फोरियर-वाद और व्यक्तिवाद के बारे में देखा कि न्यूयार्क में रहते हुए, लोकप्रिय पत्र-पत्रिकाओं के लिए सस्ती रद्दी चीजें लिखे बिना केवल इस प्रकार का लेखक बनकर जीवन-निर्वाह करना संभव नहीं है। उन दिनों भी महिलाओं की पत्रिकाएँ अच्छा पारि-श्रमिक देती थीं। उन्होंने लिखा था, कहते हैं 'लेडीज, चैम्पियन' नाम की पत्रिका अच्छा पारिश्रमिक देती है, पर मैं उनके उप-युक्त कुछ नहीं लिख सका।" उन्हें न्यूयार्क से चिढ़ हो गई और कानकार्ड से और भी ज्यादा प्यार। उन्हें भीड़-भाड़ पसन्द नहीं थी...उससे उनका दिल उदास हो जाता था। लिखने में भी कोई प्रगति नहीं कर सके। अभिजात्य वर्ग के विलियम एमर्सन की संगति उन्हें उबा देती थी। उनकी छाती में सर्दी बैठ गई, और वह घर लौटने के लिये तड़पने लगे। आठ महीने बाद घर लौटे तो, कभी-कभी मन बहलाने के लिये सैर पर जाने के अति-रिक्त, कानकार्ड के बाहर फिर कभी नहीं गये। निर्वासन काल की कुछ सुखद स्मृतियाँ थीं। अटलांटिक तट उन्होंने देखा था, नए फूल, पक्षी और नये लोग, और जीवन तथा सौंदर्य के नये रूप देखे थे। न्यूयार्क में उन्हें जीवन भर के लिये एक मित्र मिला—हेनरी ग्रोले जो समाजवादी आदर्शवाद के प्रशंसक थे और बाद में—'न्यूयार्क ट्रिब्यून' के सम्पादक के रूप में प्रसिद्ध हुए। प्रसिद्ध उपन्यासकार के उच्च विचार पिता हेनरी जेम्स के साथ हेनरी की लम्बी दार्शनिक बातचीत होती थी जो उनमें ताजगी भर देती थी।

१८४४ में कानकार्ड वापस आने के बाद वह फिर उसी दुविधा में पड़ गये—जिसे वह सबसे अधिक मूल्यवान समझते थे—यानी कानकार्ड के प्राकृतिक इतिहास की खोज करने और उसको लिखने की पूरी स्वतन्त्रता—उसका बलिदान किये बिना जीविका का प्रश्न कैसे सुलझाया जाये। अब उन्हें यह स्पष्ट जान पड़ने लगा था कि प्रकृतिशास्त्र ही उनका व्यवसाय है। यदि जीवन को जीने योग्य बनाना है तो साहस के साथ इस मार्ग पर चलना होगा और अपने समय और शक्ति का यथा-सम्भव कम-से-कम भाग ही समाज के हाथों बेचना होगा। उन्हें इसकी भी चिन्ता थी कि औरों की तरह बढ़ती हुई उम्र के साथ अपनी आवश्यकताओं को बढ़ाना नहीं, कम करना है।

सादे से सादा जीवन की ज़रूरतों को जुटाने में जो समय लगता था, वह भी उन्हें खलने लगा। किसी चीज़ का मूल्यांकन वह उस समय के द्वारा करते थे जो उसे प्राप्त करने में खर्च होता था। एमर्सन के घर जाने के पहले एकान्त की जो चाह उनमें थी, वह लौट आयी। उन्होंने जर्मन दार्शनिक जिमरजैन की पुस्तक "हृदय पर एकान्त का प्रभाव" पढ़ी थी, और एमर्सन की पुस्तक "प्रकृति" भी उनके मन से कभी दूर नहीं हुई जिसमें उन्होंने लिखा था, "वन में यौवन चिरस्थायी होता है—वहां रहकर हम तर्क और विश्वास के संसार में रहने लगते हैं।"

इसी मनःस्थिति में वह अल्काट से कुल्हाड़ी मांग लाये और वाल्डेन झील के किनारे, अपने लिये कोठरी बनाने के लिये, पेड़ों से लकड़ियां काटने लगे। बहुत दिनों से उनकी चाह थी कि सोचने-विचारने के लिये एकांतवास का मौका मिले। वह सब लोगों से दूर जाना चाहते थे, उन्हें भूलने के लिये नहीं, बल्कि उनके बारे में सही दृष्टिकोण बनाने के लिये।

घर पर मां, बहनों, मौसियों, चाचियों और उन लोगों की,

जिन्हें वह समाज-सुधार पर बहस करने के लिये बुला लिया करती थीं, कभी न बन्द होने वाली बातचीत से उनके कान फट जाते थे। एमर्सन या और जिसके भी घर वह मिलने जाते, उन्हें केवल "ट्रान्सेण्डेण्टल" आदर्शवाद की बातें ही सुनने को मिलतीं, जो शुरू-शुरू में तो आकर्षक लगीं, पर बार-बार सुनकर उन का जी उनसे ऊबने लगा था। वह कोरी बातों और सिद्धान्तों से छुटकारा चाहते थे, वह अकेले ही सोचना और काम करना चाहते थे जिससे वह जिन्दगी को उसकी कम-से-कम जरूरतों में उतार कर "उसके अर्थ वास्तविक अर्थ को तौल सकें।"

: ४ :

"रुपए-पैसे से नहीं, पर उज्ज्वल धूप और गर्मी के सुहावने दिनों से मैं खूब धनी था।"

—थोरो : वाल्डेन

एक बार फिर वह एमर्सन के ऋणी हुए। एमर्सन स्वयं भी वाल्डेन में प्रकृति के बीच रहने के सपने देखा करते थे, और इसी इरादे से उन्होंने, झील के उत्तरी-पश्चिमी कोने पर स्थित जंगली भूमि को खरीद भी डाला था। वही ज़मीन उन्होंने अब थोरो को रहने के लिए मुफ्त दे दी। यदि यह सुयोग न होता तो शायद थोरो वाल्डेन में अपना आश्रम न बना पाते। एक वर्ष पहले, एक दिन पिकनिक के समय उनके और उनके साथी की लापरवाही से जंगल में आग लग गई। नदी के किनारे जंगलों में करीब सौ एकड़ तक आग फैल गई। यह तो अच्छा हुआ कि थोरो का साथी एक विशिष्ट नागरिक, जज होर का बेटा था, नहीं तो वह अवश्य मुसीबत में फँस जाते। आस-पास, मीलों तक, कोई भी भू-स्वामी उन्हें अपने जंगलों में नहीं रहने देना चाहता था। १८४५ में, मार्च के अन्तिम दिनों में थोरो ने अपनी कुटिया बनाई। नया जीवन आरम्भ करने के लिए वर्ष का सर्वोत्तम समय था वह······सर्दी भी समाप्त हो चली थी और उससे उत्पन्न कुण्ठा भी।

पहली अप्रैल का दिन था—कोहासा छाया था। झील पर जमी बर्फ पिघलने लगी थी। एक पखवाड़े तक थोरो हर रोज वाल्डेन तक जाते, अपनी कुटिया बनाते, देवदारु की सुगन्ध से

भरी हवा में बैठकर नाश्ता करते, और [illegible] से गप-शप करते जो उनकी कुल्हाड़ी की आवा[illegible] वहाँ चले आते थे।

झील का ऊपरी भाग कोणनुमा देवदारु और चीड़ के पेड़ों से भरा था। कुटिया का चौखटा बनाने के लिए, थोरो उनमें से सीधे, नर्म और सफेद चीड़ चुन कर काट लेते। उन्हें यह बात अच्छी नहीं लगती थी कि कुल्हाड़ी तक उन्हें उधार लेनी पड़ी। काम को आरम्भ करने का यह ढंग स्वावलम्बन के उनके विचारों के अनुकूल नहीं था। पर पूँजी के बिना दूसरा चारा ही क्या था ? और फिर जब माँगी हुई कुल्हाड़ी वापस की गई तो उसकी धार भी तो पहले से ज्यादा पैनी थी।

उस कुल्हाड़ी के बारे में उन्होंने लिखा है कि वह सँकरे आकार की थी—स्पष्ट है कि वह लम्बे फल वाली अंग्रेजी कुल्हाडियों के नमूने पर बनाई गई थी। कुल्हाड़ी से उन्होंने चारों कोनों के लिए खम्बे तैयार किये फिर और जरूरी औजार भी माँग कर, लकड़ी के कुन्दों को काट-छाँट कर, कुटिया का चौखटा तैयार किया। बाजुओं और छत के लिये लकड़ी के फट्टे पास की एक झोंपड़ी से लाये गए। यह उन आयरलैंड से आये मजदूरों में से किसी का घर था, जो झील के पास से गुजरने वाली नई रेलवे-लाइन पर काम कर रहे थे।

उनकी यह कुटिया बड़ी विचित्र थी—देखने में वह घर नहीं, खाद की एक ढेरी-सी लगती थी, क्योंकि उसके चारों ओर खुदी हुई मिट्टी की पांच फीट ऊँची दीवार खड़ी कर दी गयी थी, उसे सहारा देने और गर्म रखने के लिए।

अप्रैल में एक दिन सवेरे ही वह गाड़ियों में मिट्टी ढो लाये। पर इसी बीच, मौका पाकर, आयरलैंड के रहने वाले एक तमाशबीन बेरोजगार आदमी ने उनकी सबसे बढ़िया कीलें चुरा

लीं। झोंपड़ी को पूरा करने के पहले, पीछे की ढलान पर, जाड़े-पाले से तरकारियों को बचा रखने के लिए गड्ढा भी खोदना था। इस समय थोरो में भी आदिवासियों की प्रवृत्ति काम कर रही थी। झोंपड़ी को छाने से पहले उन्हें अपने भंडार की चिन्ता हो रही थी। उन्हें खयाल आया कि बोस्टन के घरों में भी ऐसे ही तहखाने होते हैं। तहखाने वाला घर चाहे जितना शानदार हो, किसी माँद के द्वार पर बनी बरसाती जैसा ही दीखता है। पर तहखाना होता है घर का सब से टिकाऊ हिस्सा। बाकी घर का चाहे नाम-निशान मिट जाय, पर तहखाना, धरती में पड़े गड्ढे की तरह सुरक्षित बना रहता है।

कानकार्ड में रहने वाले आदिवासियों के बारे में थोरो को बड़ी जिज्ञासा थी। यदि वह यह जानते कि एक शताब्दी बाद, उनके अपने खोदे हुए गड्ढे की खोज में लोग वाल्डेन की यात्रा करेंगे, तो वह कितना प्रसन्न होते।

लकड़ी के प्रत्येक टुकड़े, प्रत्येक फरुए मिट्टी का अधिक से अधिक आनन्द लेने के लिए वह बड़ी निश्चिन्तता से काम करते रहे। बाद में उन्होंने स्वयं ही बताया था कि केवल पड़ोसी का शिष्टाचार निभाने के लिए ही उन्होंने अपने मित्रों से मदद माँगी थी, निरुपाय होने के कारण नहीं। चिमनी के लिए उन्होंने झील से पत्थर चुने, और छत डालने के पहले ही चिमनी की नींव डाल दी।

१८४५ में, चौथी जुलाई को, छत का आखिरी पट्टा लगते ही, वह अपनी कुटिया में आकर बस गए। यद्यपि अभी तक न तो पानी से बचाव का इन्तजाम हो पाया था और न चिमनी ही बन पाई थी।

यह भी एक संयोग था कि वह अमेरिका का भी स्वाधीनता दिवस था और थोरो का भी।

और कुछ बनाने का समय अभी नहीं था क्योंकि ज़मीन को, जिसके चारों ओर करीब ढ़ाई एकड़ तक रेतीली ज़मीन थी, काश्त के योग्य बनाना था। सेम आदि के लिए ज़मीन को गोड़ने-निहारने की ज़रूरत थी।

पेड़ों के ठूंठों को काट कर, किराए के घोड़ों से ज़मीन को जोतकर, वसन्त तक थोरो ने इसे खेती के लायक बना लिया। जोताई करते समय वहाँ आदिवासियों के कुछ तीर मिले।

पहली गर्मी में उन्होंने सेम बो दी। उनका अपना अनुमान था कि पौधों की कतारों की कुल लम्बाई सात मील होगी। पहले बोई हुई फलियों को निराने का समय आ गया तो भी वह बुवाई ही करते रहे। नतीजा यह हुआ कि जंगली घास खूब बढ़ गई, और फसल पर छा गई। इससे वह थकते नहीं थे, बल्कि इससे उन्हें मन को स्थिर और शान्त रहने का अभ्यास हो गया। उन्हें यह सोच कर तसल्ली होती कि वह अपने पड़ोसी किसानों की तरह अपने खेत से बंधे नहीं हैं। वह जब चाहे फलियों का अपना यह खेत छोड़ भी सकते हैं, इससे उनकी कोई क्षति नहीं होगी। सब किसानों में वह सब से ज्यादा मस्त और बेफ़िक्र थे।

उनके खेत के एक ओर वाली सड़क कानकार्ड जाती थी। कभी-कभी, पौधों को निराते समय वह उनके बीच ओझल हो जाते तो आने-जाने वालों को अपने खेत का मज़ाक उड़ाते सुन कर उन्हें बड़ा मजा आता। उन लोगों को इसका ज़रा भी आभास नहीं था कि नंगे पैरों वाला यह एकान्तप्रिय किसान दार्शनिक भाव से खेती कर रहा है। वह चाहते थे कि यह सारी गर्मी इस भूमि में घास के बजाय फलियां उगाने में लगादें।

बस्ती से दूर रहने का विचार उनको प्रिय था। उनका विश्वास था कि सुदूर उत्तर में, मैसाचुसेट्स में भी, बिना किसी

की मदद के, काफी भोजन उत्पन्न किया जा सकता है। पर घास से ही तरह-तरह की चीजें पकाने के अलावा, उन्होंने इस दिशा में ज़्यादा प्रयोग नहीं किए। चावल, आटा, गुड़ आदि भी बाजार से ही ख़रीद लाते थे।

डबलरोटी भी वह अपने-आप ही सेंक लेते। पहले तो खमीरी रोटी बनाई, फिर उन्होंने सोचा कि क्यों न बिना ख़मीर के ही बनाई जाय, ताकि गाँव के तन्दूरवाले के भरोसे न रहना पड़े।

जैसे कि थोरो की आदत थी, पहले तो उन्होंने रोटी पकाने की कला का अध्ययन किया, उस पर पुराने प्रवीणों की सम्मति जानी, और फिर अपने ही ढंग की रोटी बनाई, जो परिष्कृत रुचि को चाहे सन्तुष्ट न कर पाती, पर पोषक तत्वों से भरपूर अवश्य थी। सादगी और बचत के ख़याल से चाय और काफी पीना भी छोड़ दिया और बिल्कुल शाकाहारी बन गए। हाँ, कभी-कभी वाल्डेन की मछलियाँ खा लेते थे।

उनका घर केवल एक कमरे का था, जो पन्द्रह फीट लम्बा और बारह फीट चौड़ा था। ऊपर एक कोठरी थी और नीचे तहख़ाना। इस कमरे में, एक पलंग, एक मेज, एक लिखने की मेज़, तीन कुर्सियाँ, तीन इंच व्यास वाला एक शीशा, एक चिमटा, एक केतली, एक कड़े वाला पतीला, कड़ाही, कड़छी, हाथ धोने की चिलमची, दो छुरियाँ, दो कांटे, तीन प्लेटें, एक प्याला, एक चम्मच, तेल का जग, गुड़ रखने का पीपा, और एक लाल्टेन······यही सामान था। कुर्सियाँ ज़्यादा होने की सफाई वह यों देते थे···"एक कुर्सी एकान्त सेवन के लिए है, दो मैत्री के लिए, और तीन गोष्ठी के। फालतू प्लेट, और काँटा-चम्मच होने से वह कभी-कभी किसी आगन्तुक मित्र को भोजन के लिए कह सकते थे। यदि आने वाले एक से ज़्यादा होते

तो वह उन्हें भोजन के लिए नहीं रोकते। घर का काम-काज हल्का भी था और दिलचस्प भी। जब फर्श ज़्यादा मैला हो जाता तो वह ज़रा तड़के उठकर उसे रगड़ कर साफ कर देते। फिर उसे सुबह की धूप में सूखने देते। इस बीच गृहस्वामी स्वयं अपने शान्तिपूर्ण चिन्तन में खो जाते। सैलानियों की गठरी जैसी अपनी गृहस्थी के सारे सामान की उस छोटी-सी ढेरी को घास पर पड़ा हुआ देखना, उन्हें अच्छा लगता था। "मेरी वह तीन टाँगों वाली मेज़ जिस पर से मैंने किताबें, कलम और दवात आदि उठाए नहीं थे, चीड़ और अखरोट के पेड़ों के बीच पड़ी रहती। ऐसा लगता था मानो वह सब बाहर खुश हैं और अन्दर जाना नहीं चाहतीं। कभी-कभी मेरा जी चाहता कि उन पर एक चाँदनी डाल कर बैठ जाऊँ और उन पर सूर्य और खुली हवा का स्पर्श देखूँ।"

वाल्डेन में गर्मी का सुहावना दिन कुछ इस प्रकार बीतता था···सुबह पाँच बजे उठकर झील में तैरना, खेत में निराई करना, बीच में हल्का-सा नाश्ता करने और कुएँ का पानी पीने के लिए थोड़ा-सा अवकाश। शरीर पर चिपकी मिट्टी को धोने के लिए फिर से तैरना और फिर दोपहर का भोजन। कभी-कभी, घास निराने के बजाय, सुबह का समय पढ़ने-लिखने में बीतता। उस हालत में यह दूसरी बार नहाना 'अध्ययन द्वारा पड़ी आखिरी शिकन को मिटाने के लिए होता।' कभी-कभी, मध्याह्न भोजन के बाद वह कानकार्ड की सैर के लिए निकल जाते। वहां चूहों के बजाय मनुष्यों का अवलोकन करते। उनका अनुभव था कि गाँव की गपशप को यदि होमियोपैथिक दवाओं की तरह छोटी-छोटी मात्राओं में ग्रहण करने से भी मन तरोताजा हो जाता है, जैसे पत्तों की मर्मर ध्वनि या मेंढकों की टर्र-टर्र से।

पर अधिकतर दोपहर की सैर उन्हें दूसरी ही दिशा में ले

जाती। निर्जन दलदलों और जंगलों में वह पौधों और चिड़ियों को खोजते, या एकान्त स्थल देखकर वहाँ लिखते-पढ़ते या केवल मनन-चिन्तन ही करते। वह लिखते हैं, "किसी विद्वान् से मिलने के बजाय मैं विशेष वृक्षों के पास बार-बार जाता, ऐसे वृक्षों के पास जो उस पड़ोस में कम ही दिखते और जो किसी चरागाह के बीचोंबीच, या घने जंगल में, या दलदल में, या पहाड़ की चोटी पर खड़े होते—इन वृक्षों में होते काले भोजवृक्ष जिनके दो-दो फीट व्यास वाले कुछ सुन्दर नमूने वहाँ मिलते, उन्हीं के भाई-बन्धु और वैसे ही सुगंधित, ढीली, सुनहली छाल वाले पीले भोजवृक्ष, चिकने तने वाले सफेदे के वृक्ष जिन पर काई ने सुन्दर चित्रकारी कर रखी थी और जो अंग-अंग से सुडौल थे और जिनके नमूने के चिट-फुट वृक्षों को छोड़ कर शहर में केवल एक छोटा बाग था, जिसके बारे में कहा जाता था कि कबूतरों ने वृक्ष के फलों की गिरी को छिटक कर यह पेड़ उगाए थे (इसकी लकड़ी को चीरने पर उसके चाँदी से रवे कैसे सुन्दर दिखते थे) फिर तुरंज और तेंद और नकली देवदारु के वृक्ष जिनमें केवल एक अपने पूरे कद को पहुँचा था, कुछ ऊँचे, खड़ी बल्लियों जैसे, चीड़ वृक्ष, एकाध विषगर्जर के गढ़े हुए वृक्ष जो जंगल में बौद्ध मन्दिर जैसे सिर उठाए खड़े होते।"

थोरो ने केवल एक घंटे के लिए जंगल में अकेलेपन का अनुभव किया था, उसके बाद वह 'क्षणिक उन्माद' सदा के लिए खत्म हो गया। उन्होंने प्रकृति का अवलोकन और उसकी अनुभूति सभी इन्द्रियों द्वारा की, और सदा प्रकृति का साहचर्य अपने लिए काफी पाया। एकान्त उनको प्रिय था और उनके ही शब्दों में, "एकान्त से बढ़कर और कोई साथी नहीं है।" साथ ही वाल्डेन प्रवास के बहुत बड़े आनन्द का कारण था उनकी कुटिया द्वारा लोगों का आकर्षित होना। एक-दो बार

ता पच्चीस से भी ज्यादा लोग उसमें इकट्ठे हुए, फिर भी कुछ ज्यादा भीड़ नहीं लगी, क्योंकि दोपहर की सैर के लिए निकले हुए इन मित्रों का संग सुखद ही होता था।

कुटिया में रहने का एक लाभ यह था उसमें किसी मेहमान को ठहराया नहीं जा सकता था—इसलिए वह थोड़ी देर के लिए ही ठहर सकता। उन लोगों से थोड़ी देर के लिए मिलकर खुशी तो बेहद होती, पर उनके जाने के बाद एकान्त और भी अधिक सुखमय लगता। किसी साथी की ज़रूरत महसूस होने पर, आध घंटे में ही कानकार्ड पहुँचा जा सकता था। उनसे मिलने के लिए आने वाले मित्रों, या उधर से गुजरने वाले अजनबियों की तरह, परिवार के लोग भी शनिवार को पहुँच जाते। दार्शनिक कृषक होज़मार हर इतवार को आता था। सर्दियों की शाम को जब आग के सिवा और कोई साथी न होता, वह बाँसुरी से ही अपना मन बहलाया करते।

थोरो के समकालीनों की स्मृति जहाँ तक जाती है, न जाने कितने धींगा-धींगी में आ बसने वाले ग़रीब परिवार वाल्डेन में शरण पाते, और समाज से बहिष्कृत इन दीन लोगों के आने-जाने के कारण, फलियों के खेत से आगे वाली सड़क पर कहीं अधिक चहल-पहल रहती। बस्तियों के छोर पर बसने वाले इन लोगों से उन्हें बड़ी सहानुभूति थी, विशेषकर उनसे जो अपनी स्वतन्त्रता और अनोखापन बनाए रहते। गरीब नीग्रो और आइ-रिश लोगों की गुजरी हुई पीढ़ी की स्मृति बनाये रखने में उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती, और जिस तरह बोस्टन निवासी अपने दिवंगत महाजनों, जहाज मालिकों, प्राध्यापकों, धर्म-गुरुओं, और सभ्यता के दूसरे स्तम्भों का सम्मान करते, उसी प्रकार थोरो इन दोनों की स्मृति का आदर करते। केटो इन्ग्रहम नाम का एक नीग्रो था जिसके लिये उसके स्वामी ने, जो वाल्डेन के

एक भद्र पुरुष थे, वाल्डेन के जंगलों में मकान बनवा दिया था। थोरो ने अखरोट वृक्षों के बीच केटो का इस छोटे से ज़मीन के टुकड़े को देखा था, और बताया था कि आधी नष्ट हो गई कुटिया अब भी है, यद्यपि उसे कम ही लोग जानते हैं, क्योंकि यह चीड़ वृक्षों के पीछे से आने-जाने वालों की दृष्टि से ओझल रह जाती है। उस पर अब चिकने पत्तों वाली झाड़ी फैल गई है और सोनछड़ी के वृक्ष वहाँ बहुत होते हैं।

खेत के एक किनारे जिल्फा नाम की नीग्रो स्त्री के दीन-हीन आवास के चिन्ह मौजूद थे। जिल्फा एक बुनकर स्त्री थी। वह अजीब मस्त तबियत की औरत थी। उसके तीखे उच्च-स्वरों में गाये गीतों से वाल्डेन का जंगल गूंजता रहता था।

उससे थोड़ी दूर पर ब्रिस्टर फ्रीमैन रहता था जो किसी ज़माने में गुलाम था। उसके लगाए पेड़ों में अब भी खट्टे जंगली सेब फलते थे। उन्हें खाने में थोरो को केवल इसलिए आनन्द आता था क्योंकि वह उसे उगाने वाले की याद दिलाते थे।

लिंकन के पुराने कब्रिस्तान में कुछ अंग्रेज सैनिकों की समाधियाँ थीं, जिन पर कुछ भी अंकित नहीं था। यहीं पर थोरो ने फ्रीमैन की कब्र देखी। वाल्डेन के जंगल के भीतर वाइमन नामक कुम्हार भी रहता था और.........."मेरे पहले इस जंगल का आखिरी निवासी ह्यू कायल नाम का एक आयरलैण्ड निवासी था। वह वाइमन के घर में रहने लगा था। लोग उसे कर्नल कायल कहकर पुकारते थे। अफवाह थी कि वह वाटरलू के युद्ध में लड़ा था। यदि वह जीवित होता तो मैं उससे फिर युद्ध करवाता। नैपोलियन सेण्ट हेलेना पहुँचा और वह यहाँ आ गया। मैं जो कुछ उसके बारे में जानता हूँ वह बहुत ही दुःखपूर्ण है।"

एक बार थोरो, नदी के पास, वर्षा में फँस गए। बचाव के लिए वह वहीं एक कोठरी में चले गए। यह देखकर वह बहुत

प्रसन्न हुए कि जॉन फ़ील्ड नाम का एक आयरिश आदमी भी अपनी पत्नी और कई बच्चों के साथ वहाँ था। छत का जो भाग सबसे कम चू रहा था, उसी के नीचे सब बैठ गये तो जॉन फ़ील्ड ने अपने दुर्भाग्य की कहानी सुनाई। उसके उत्तर में थोरो ने, संक्षेप में, उसे बचत और सादगी से रहने का उपदेश दिया। फ़ील्ड की पत्नी से वह प्रभावित हुए, "जिसमें उस ऊँचे चूल्हे पर बार-बार खाना पकाने की हिम्मत थी। उसका चेहरा गोल और चिकना था, छाती उघाड़ थी, और वह अब भी अपनी दशा सुधारने की बात सोचती थी···।"

वाल्डेन में थोरो के पास बन्दूक नहीं थी। बचपन में शिकार का जो शौक था, वह वहाँ पहुँचने के पहले ही पूरा हो चुका था। कुछ प्रौढ़ होने के बाद वह सोचते थे कि मनुष्य ने अपने और पशु-जगत् के बीच कितना कृत्रिम व्यवधान बना रखा है। वाल्डेन में पशुओं के बीच रहकर उन जानवरों से उन्हें हमदर्दी हो गई थी जिन्हें शिकारी और प्रकृति शास्त्री इतनी पीड़ा पहुँचाया करते थे। उस युग में, जब हरएक प्रकृतिशास्त्री बन्दूक लिये फिरता था, थोरो ने लिखा था, "मैं पिछले दिनों में पक्षी-विज्ञान का अध्ययन करने के बहाने बन्दूक रखता था। अब मैं यह मानता हूँ कि पक्षियों की आदतों को ध्यान से देखना, उनके अध्ययन का सबसे अच्छा तरीका है। और कुछ नहीं, तो कम से कम इसी उद्देश्य से मैं बन्दूक त्यागने को तैयार हो गया।"

वाल्डेन में मछली के शिकार का आकर्षण भी शीघ्र ही जाता रहा, क्योंकि उससे उनके आत्म-सम्मान को चोट पहुँचती थी। उन्होंने लिखा है, "मछली का शिकार प्रति वर्ष कम होता जा रहा है, यद्यपि इससे न तो ज्ञान ही बढ़ा है और न मनुष्यता ही। अब तो मैं मछली-मार रहा ही नहीं। पर मैं यह जानता हूँ कि यदि मुझे जंगल में रहना पड़ा तो फिर बड़े जोश से

मछली-मार और शिकारी बन जाऊँगा। इसके अलावा, किसी भी प्रकार का मांसाहारी भोजन अस्वच्छ है। अब मैं समझने लगा हूँ कि साफ़-सुथरा और सभ्य रहने, और घर को सारी गन्दगी, कूड़ा-करकट और दुर्गन्ध से मुक्त रखने के लिये जो इतना परिश्रम करना पड़ता है, उसका मूल कहाँ है।"

इतना तो वह मानते थे कि किशोरों की खेल-कूद में जो स्वाभाविक रुचि होती है, वही उनमें जंगलों और प्रकृति में दिलचस्पी पैदा करती है। हमें उस बालक पर दया आती है जिसने कभी बन्दूक नहीं चलाई। इसका मतलब यह नहीं है कि वह ज़्यादा दयालु है...बल्कि इसका अर्थ यह है कि उसकी शिक्षा अधूरी रह गई है। विचारहीन किशोरावस्था को पार करने के बाद शायद ही कोई, जान-बूझकर, किसी जीव को मारना चाहेगा, जो उसी की तरह, अपने जीवन से मोह रखते हैं।

युवा लोगों का वन्य-जीवन से इसी प्रकार परिचय होता है। वह पहले मछली-मार या शिकारी बनकर वहाँ पहुँचते हैं। यदि उनमें उच्चतर जीवन के अंकुर हैं तो वह कवि या प्रकृतिवादी बन जाते हैं, जो उनका सही उद्देश्य होता है, और अपनी बन्दूक या बन्सी वहीं छोड़ देते हैं। पर ज़्यादातर लोग, इस मामले में, सदा ही बच्चे बने रहते हैं। कुछ देशों में तो शिकार करने वाले पादरी भी होते हैं। ऐसे लोग गडरिए का "रखवाला कुत्ता" अवश्य बन जाएँ, पर "नेक गडरिया" (ईसा मसीह) कभी नहीं बन सकते।

फिर भी खेल और मछली के शिकार के द्वारा भी उनको प्रकृति से वह अनुभूति हुई जिससे उनकी सर्वश्रेष्ठ रचनाओं को प्रेरणा मिली। जैसे वाल्डेन में मछली पकड़ने का वर्णन... "कभी-कभी गांव की बैठक में मैं उस समय तक ठहरा हूँ जब

तक कि परिवार के लोग रात्रि-विश्राम के लिए उठ नहीं गए हैं, और तब मैं जंगल में लौटा हूँ, और कुछ तो आने वाले दिन के भोजन के ख्याल से, आधी रात का समय, भरी चाँदनी में, नाव पर बैठकर, मछली का शिकार करने में बिताया है। उल्लुओं और लोमड़ियों के वेदना भरे आलापों को और कभी-कभी पास के ही किसी पक्षी के चीख भरे स्वर को सुना है। यह अनुभव मेरे लिए मूल्यवान् और याद रखने योग्य रहे हैं··· जबकि किनारे से बीस-तीस लट्ठे की दूरी पर, चालीस फुट गहरे जल में लंगर डाले हुए हज़ारों छोटी चमकीली मछलियों से घिरा हुआ मैं बैठा रहा हूँ और ये मछलियाँ अपनी दुमों की थापों से, बिखरी चाँदनी में, पानी की सतह पर उर्मियाँ बनाती रही हैं।

इस तरह थोरो ग्रीष्म में जंगलों में अद्भुत चैन के साथ जीवन बिताते रहे। अपने रोजनामचे में उन्होंने एक बार लिखा था, "यह बड़ी सुहावनी शाम है, जबकि सारा शरीर एक ही इन्द्रिय-सा लगता है और रोम-रोम से आनन्द ग्रहण करता है। प्रकृति के संग में अनोखी स्वच्छन्दता के साथ विचरण करता हूँ, उसका एक अंग बन गया हूँ।"

पड़ोस की झीलों के किनारे शाहबलूत के फल चुनते हुए, वह कल्पना करते उन दिनों की जब न्यू इंग्लैंड के जाड़ों में, ठीक उसके केन्द्र में, वह आगे इस कुटीर-जीवन का प्रयोग कर सकेंगे। अंधेरा छाने के बाद इधर-उधर घूमना, अंधेरे जंगल में रास्ता खोजना, उनको बड़ा अच्छा लगता था। रात उनको बहुत प्यारी लगती, और जाड़ा भी। सर्दी, बरसात, और अंधकार में भी वह ऐसे घूमते जैसे साफ-सुहावने मौसम में।

सर्दियों में वह रोज झील का तापमान देखते···यह देखते कि उसकी हवा गहरे पानी को कितनी देर में ठंडा कर देती है।

विभिन्न ऋतुओं में बर्फ की अलग-अलग बनावट और सौन्दर्य का अवलोकन करते।

उस समय रेलवे-लाइन के इंस्पेक्टरों, स्कूल-निरीक्षकों आदि नौकरशाही का बोलबाला था। थोरो भी अपने को "बर्फीले तूफ़ानों का इंस्पेक्टर" कहने लगे।

"स्केटिंग" (बर्फ पर फिसलना) करने में वह बहुत कुशल थे। कभी अकेले, और कभी एमर्सन या किसी आगन्तुक मित्र के साथ स्केटिंग किया करते।

झील की सतह पर जमी एक इंच मोटी बर्फ पर लेटकर झील के अन्दर इस प्रकार देखते मानो वह शीशे में जड़ी तस्वीर हो। प्रतिदिन का रिकार्ड, विवरण और निष्कर्ष वह लिख लेते।

सर्दी के साथ-साथ उनका एकाकीपन भी बढ़ता गया। जब ज्यादा बर्फ पड़ने लगती तो कुटिया तक आने की हिम्मत कोई नहीं करता था। कभी-कभी तो हफ्ते या पखवाड़े तक भी कोई न आता। आह, बर्फ़! उसकी ध्वनि कितनी स्फूर्तिदायक है। कोई भी मौसम मेरी सैर में बाधक नहीं बन सकता। कभी-कभी मैं बर्फ में आठ-दस मील चलकर किसी भोजवृक्ष से नियुक्त भेंट के लिए चला जाता हूँ, या पीले भोज, या फिर चीड़ों में से किसी पुराने मित्र के साथ।

ठंडी, मन में स्फूर्ति उपजाने वाली हवा के थपेड़े जो बर्फ के भुरभुरे चूरों को उड़ाकर अंबार बना देते थे, उन्हें बहुत अच्छे लगते और जब तुषार उनके एक गाल पर लगता तो अपना दूसरा गाल भी वह उसकी ओर कर देते। रात में वह उल्लुओं और लोमड़ियों की तरह-तरह की बोलियाँ सुनते जो कि बर्फ के ढेर पर से होती हुई उनकी खिड़की पर लगकर सुनाई देतीं, और तलैया में जमते हुए बर्फ का विलोड़न ऐसा

जान पड़ता मानो वह अपने बिस्तर में अफरे और दुःस्वप्नों के कारण बेचैन होकर करवट लेना चाहता है। दिन में वह लाल गिलहरियों, और नीलकंठ पक्षी और फुदकियों को और रात में खरहे को अपने दरवाजे के सामने मक्के के दाने और रोटियों के चूरे का चारा देते।

जंगली खरहा उनकी कुटिया के नीचे रहता था, और शाम को आलू के छिलकों के लिए आता था। उनको यह बात अच्छी लगती थी कि ठण्ड के यह जीव इतने पक्के और गाढ़े हैं। उनका जीवित बचना ही इसका प्रमाण था कि वही उस प्रदेश के असली और योग्य निवासी हैं।

वह स्वयं उल्लुओं, मेढकों और जंगली जीवों के बीच बस जाते, पर एक दिन अचानक दोपहर के दो बजे उनको लगा कि धरती की धुरी चरमरा रही है। उनको जीवन का रूप बदलता नज़र आने लगा। उनको लगा कि ज़िन्दगी में ठहराव आ गया है। बस उन्होंने कुछ आवश्यक चीज़ें साथ लेकर कुटिया छोड़ दी, और फिर कभी उसमें नहीं रहे।

: ५ :

"मैं पशुओं को, साधारण अर्थ में, बर्बर नहीं मानता। मैं निःसन्देह उनकी ओर आकर्षित होता हूँ क्योंकि मैंने उन्हें कभी कोई बकवास करते नहीं सुना।"

—थोरो की डायरी से

६ सितम्बर १८४७ को, थोरो ने वाल्डेन वाली अपनी कुटिया हमेशा के लिये छोड़ दी। वाल्डेन उनके जीवन का एक दौर था जिसमें उन्होंने तत्त्व ग्रहण कर लिये थे। अब वह बिना किसी खेद के, जीवन के नए अनुभवों की खोज में लग गए। एक के बाद दूसरा प्रयोग करते जाने को ही वह जीवन मानते थे, सांसारिक सुख की सामग्रियों का संग्रह करते हुए सामाजिक प्रतिष्ठा की सीढ़ी पर चढ़ने को नहीं। आत्म-विश्वास के साथ अपनी आत्मा की साध की पूर्ति की ओर निरन्तर आगे बढ़ना ही उनके लिए जीवन था। इस क्रिया में मनुष्य को बहुत-सी चीजें पीछे छोड़ देनी होती हैं और उस अदृश्य सीमा को पार करते हुए, अपने अन्दर नए, व्यापक और उदार नियमों को विकसित करना होता है।

थोरो के लिए प्रगति का एकमात्र अर्थ था व्यक्तित्व की निरन्तर अभिवृद्धि और विकास, जिसकी गहरी अनुभूति उन्हें वाल्डेन में हो चुकी थी। वहां उन्होंने अपने आप को पा लिया था, और उसी की खोज भी उन्हें थी। एमर्सन ने भी उसी को जीवन का चरम-लक्ष्य बताया था। उन्हें अपनी दिशा का ज्ञान हो गया था, लेखक के रूप में अपनी मौलिक शक्ति को भी वह जान गये थे, और उनके विचारों या लेखन-शैली में जो कुछ

दकियानूसी था वह अपने आप ही छूट गया था। ऐसे व्यक्ति के लिए, जो संन्यासी न हो, दो वर्ष का वनवास काफी था। अब वह परिवर्तन चाहते थे।

सौभाग्य से एमर्सन अपने भाषणों के दौरे पर चले गए थे और नाजुक लिदियन घर और बाग के कामों में हेनरी की मदद पाकर प्रसन्न ही होती। एमर्सन के घर का जीवन हेनरी को अच्छा लगता था। वहाँ लोग उनकी कद्र करते थे, वह अपनी कारीगरी का भी वहाँ प्रयोग कर सकते थे। वहाँ संगी-साथी भी अच्छे थे, और लिखने के लिये पूरा अवकाश। अपने माँ-बाप के घर की अपेक्षा हेनरी को वहाँ ज्यादा शान्ति मिलती थी। कानकार्ड में एक सप्ताह की पांडुलिपि वह वाल्डेन से साथ ले गये थे, और उन्हें इसकी खुशी थी कि उनके लिये प्रकाशक ढूंढ़ने के एमर्सन के प्रयत्नों का एहसान चुकाने का अब मौका मिलेगा।

१८४७ के पतझड़ में वह एमर्सन के घर रहने चले गये। उनकी कुटिया को एमर्सन के, आयरलैंड के रहने वाले पियक्कड़ माली ह्यू व्हेलान ने ले लिया था। व्हेलान ने उसे थोड़ा-सा खिसका दिया—झील से हटाकर सेम के खेतों की ओर जिसे वह हाट-उद्यान बनाना चाहता था, पर बना कभी नहीं पाया। पुरानी कुटिया की जगह बहुत झाड़-झंखाड़ उग गए थे। माली चला गया तो थोरो ने स्वयं जाकर एमर्सन के लिए वहाँ चीड़ के पेड़ लगाए। एक किसान ने उस कुटिया को खरीद लिया और उसे औजार रखने का गोदाम बना लिया। हेनरी को अपने उस पुराने निवास-स्थान से मोह नहीं था। उन्हें न तो अपना कोई समुदाय वहाँ बनाना था और न कुटीर-जीवन का पंथ चलाना था।

बड़े संतोष से उन्होंने लिदियन के घर अपनी जगह फिर से ले ली। उन दोनों की मित्रता गहरी होती गई। लिदियन

को हेनरी के शक्तिशाली व्यक्ति के सामीप्य और सहानुभूति की आवश्यकता थी। हेनरी को भी उनके पास रहना अच्छा लगता था।

जंगलों में रह आने के बाद उनका मन फिर ताजा हो गया था, और उत्साह से भर उठा था। लिखने की दृष्टि से भी वह वर्ष सबसे अधिक सफल रहा। एमर्सन के घर में ही उन्होंने 'वाल्डेन' का अधिकांश भाग लिखा। 'सिविल डिसओबिडियन्स' भी वहीं लिखा गया। यदि पुस्तकों का महत्त्व इससे आँका जाए कि दूसरों पर उनका कितना प्रभाव पड़ता है, तो यह दोनों निःसन्देह उनकी सबसे महान् कृतियाँ हैं।

एमर्सन के लिए अनोखा पर दुर्भाग्यपूर्ण ग्रीष्म-घर बनाने में थोरो का मनोरंजन भी हुआ और कुछ चिढ़ भी लगी। एमर्सन ने, थोरो की कुटिया के सामने, वाल्डेन झील के दूसरी ओर, मकान बनाने के इरादे से ज़मीन खरीद ली थी। पर अब कानकार्ड वाली अपनी जमीन पर ही ग्रीष्म-कक्ष बनाने के उद्देश्य से उन्होंने अपनी पहली योजना त्याग दी। मकान का नक्शा उनके पुराने मित्र ब्रॉन्सन ऑल्काट ने बनाया था और वही उसके वास्तुकार भी थे। थोरो को केवल लकड़ी के काम में हाथ बंटाने की अनुमति थी, मकान बनाने में नहीं। एमर्सन के पुत्र ने बाद में लिखा था, १८४७ में ऑल्काट ने चीड़ के तनों, देवदारू के गंठीले टुकड़ों और सेडार के सीधे टुकड़ों से एक विचित्र, पर देखने में अच्छा, घर बनाया—अपने मित्र के लिये एकान्त अध्ययन-कक्ष। इस काम में थोरो ने उनकी मदद की जिनकी व्यावहारिक बुद्धि बिना किसी नक्शे के मकान खड़ा करने के ख्याल से, खीझ उठती थी। मानो वह टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ियाँ ही हर कदम पर यह बताती थीं कि आगे अब क्या करना चाहिए। और अवश्य ही उसे बार-बार बदलना पड़ता था।

उन्होंने कहा था, "मुझे ऐसा लगता है कि मेरा अस्तित्व ही नहीं है और मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ।"

थोरो कीलें अच्छी तरह गाड़ते थे, पर, खूबसूरती के लिए, आॅल्काट उन्हें ऊपर की ओर मोड़ देते थे। छत को उन्होंने मखमली काई और दलदल में होने वाली सिवार से छाया, पर प्रकृति ने जल्दी ही उसे वापस माँग लिया! उसके बन कर तैयार होते ही श्रीमती एमर्सन ने भोलेपन से उसका नाम रख दिया, 'खण्डहर।'

उस घर के निर्माता और उनके सहकारी एक-दूसरे से उल्टे थे। आॅल्काट 'नवीनतावादियों' की तरह, हमेशा ही दुनिया से दूर, स्वप्नों के संसार में विचरा करते थे। थोरो यथार्थवादी, सुलझे हुए, और इरादे के पक्के थे। उन पर गृहस्थी का संचालन, खेत का सर्वेक्षण, कोई मशीन ईजाद करने का काम आदि छोड़ा जा सकता था। संक्षेप में, वह ऐसे व्यक्ति थे जिन पर एमर्सन साल-साल भर अपना सारा काम-काज निश्चिन्त होकर छोड़ देते थे।

कानकार्ड के बाकी लोगों को हेनरी पर इतना भरोसा नहीं था। बहुत से लोग अब भी उन्हें 'जंगल जला देने वाला थोरो' कहा करते थे। अपने माँ-बाप के लिए तो वह एक पहेली थे और कुछ-कुछ निराशा का कारण भी। नुक्ताचीं करने वाली चाचियों, मौसियों आदि के लिए वह परिहास की चीज़ थे। एक बार हेनरी ग्रीष्म-भवन की छत पर से फिसलकर भूसे के ढेर पर जा गिरे। मारिया मौसी ने बड़े तीखे व्यंग्य के स्वर में घर बनाने वाले उन 'ट्रान्सेन्डेन्टल' लोगों को लक्ष्य करके कहा, "उम्मीद है कि आसमान से गिरने पर भी उन्हें ऐसी ही नरम जगह मिलेगी।"

वाल्डेन के मुक्त वन्य-जीवन के बाद एमर्सन के घर "गृह-

देने, माँजने-धोने, टैक्सों, और घरेलू काम-काज" का जीवन बहुत ही बड़ा परिवर्तन हो जाता यदि वह बराबर जंगलों से अपना सम्पर्क न बनाए रखते। सैर की आदत को उन्होंने हमेशा बनाए रखा। पूरे साल, कई-कई दिन तक, सबसे बड़ी घटना थी दोपहर की सैर। घण्टों तक बाहरी दुनिया का अवलोकन और मनन।

रिचर्ड जेफ़रीज की तरह, जो घरेलू जीवन की क्षुद्रता को भुलाने के लिए अपनी प्यारी पहाड़ी तक तीन मील पैदल चलकर जाते थे, थोरो भी अपने आप को संयत तभी पाते, जब वह बस्ती से दूर होते। पहले तो सड़क पर तेज चलते, पर अक्सर खेतों और जंगलों के बीच से रास्ता काटते हुए निकल जाते और छाया की तरह, झाड़ियों, बागों आदि में से होते हुए, सब की नजरों से ओझल, चलते जाते। हर एक झरोखे को सेब के पेड़ से ढकते हुए जंगल में अपने प्रिय स्थान पर पहुँच जाते।

घर के बाहर बितायी हुई उनकी यह दोपहरें उनके जीवन और साहित्य का मर्म थीं। प्रतिदिन उसी देहात के उन्हीं भागों से गुज़रते हुए भी, थोरो में नित्य नये दृश्य देखने और नई बात सोच पाने की अद्‌भुत क्षमता थी। उनके घर के सामने का चरागाह उनके लिये एक अज्ञात देश के समान था,—मानो एक सप्ताह में ही उसमें परिवर्तन हो जायेगा और फिर नये सिरे से उसकी खोज करने की जरूरत होगी।

उस प्रदेश में वह जहाँ भी घूमते, कड़ी सर्दियों में जिस किसी नदी, दलदल या पहाड़ी को जाकर देखते, उनके बारे में लिख लेते। इन टिप्पणियों से भरे हुए पृष्ठ लेकर लौटते, शाम को बैठकर उन्हें फिर से लिखते और दूसरे दिन सुबह उनका वाक्यों और गद्यांशों में विस्तार कर देते।

इस नियम का पालन करते वह कभी नहीं थके, और हमेशा

उसी उत्साह से अपनी टिप्पणियों को सुन्दर गद्य में लिखते जाना उनके जीवन की खास सफलता रही। प्रकृति का साधारण अध्ययन नहीं था वह। वह तो उनकी लम्बी और रोमांचपूर्ण साधना थी—अन्य प्रकृतिवादियों की अपेक्षा अधिक व्यापक प्रकृति-दर्शन की तपस्या। कई मायनों में वह "ट्रान्सेन्डेन्टलवाद" के कट्टर अनुयायी होते हुए भी, कानकार्ड के अन्य विचारकों से अलग थे। और विश्व की आत्मा से सम्बन्ध स्थापित करने की तीव्र उत्कण्ठा के बावजूद, वह इतने पक्के अमेरिकी और प्रकृति के उपासक थे कि रहस्यवाद में पूरी तौर से डूब नहीं सकते थे।

प्रकृति की ओर उनका दृष्टिकोण भी व्यक्तिगत था। प्रकृति का निरीक्षण करने की कला में वह दक्ष थे, फिर भी उनके लिये वही महत्त्वपूर्ण था जो उन्हें प्रभावित करता था, देखी हुई हर एक चीज नहीं। प्रकृति का रूप और मनुष्य का मन बराबर ही बदलता रहता है, इस कारण हर क्षण उन्हें नया ज्ञान, नया आनंद मिलता था।

उनका दृष्टिकोण कवित्वमय था—फिर भी जो कुछ उन्होंने देखा-सुना और अनुभव किया, उसे उनकी काव्यमय भावुकता ने अस्पष्ट नहीं बनाया। रॉबिन, (लाल रंग की गाने वाली चिड़िया), तरह-तरह की गाने वाली गौरैया, आदि के गीत उनके खेतों में गुंजरित होते थे। जमीन पर फैली हुई झाड़ियों वाले बबूल पर मुग्ध थे, पर इससे उनकी निरीक्षण-शक्ति धुंधली नहीं हो जाती थी, जैसे उन्हें मालूम था कि उसके पत्ते सर्दियों में कड़े हो जाते हैं और [illegible] की ढालों की तरह [illegible] हैं; पत्ते [illegible] हैं और छूने में साफ और चिकने। वह प्रकृति के कवि भले ही रहे हों, पर ऐसे कवि थे जो 'व्हाइट [illegible]' ([illegible] किस्म का बबूल) के काँटे गिनता था, कछुओं और मेंढकों की

आदतों को समझना और प्रत्येक पेड़-पौधे, फूल-पत्ते की पहचान चाहता था। थोरो एक वैज्ञानिक की तरह उन्हें पहचानना और उनका नाम रखना चाहते थे। एक प्रकार के सरपत को मैं पिछले बीस वर्षों से देखता आ रहा हूँ, पर उसका नाम न जानने के कारण, उसकी किसी विशेषता का वर्णन नहीं कर सका। किसी चीज़ के नाम से उसकी विशिष्टता मालूम होती है।"

प्रकृतिशास्त्रियों की भावी पीढ़ी को उनकी यही सलाह थी कि वह प्रकृति के निकट सम्पर्क में रहें।

"यदि कवि या प्रकृतिशास्त्री के रूप में तुम अपने आस-पास की प्रकृति की खोज करना चाहते हो तो उसमें रम जाओ। उसकी नदियों में मछली पकड़ो, उसके जंगलों में शिकार करो, जलाने के लिये उसकी लकड़ियाँ बिनो, उसकी ज़मीन को जोतो—बोओ, जङ्गली फल चुनो।" उनकी राय में, किसी सीमित क्षेत्र विशेष पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करने से ही जीवन का वह गहनज्ञान प्राप्त हो सकता था जिसकी उन्हें खोज थी। "मनुष्य केवल अपनी जन्म-भूमि पर रहकर ही सम्पन्न और शक्तिवान् हो सकता है।" दूर के क्षेत्रों में जाकर रहने का क्या लाभ जबकि उन्हें समझने में ही बरसों लग जाएँगे। उन्होंने लिखा था, "यदि मैं कैलिफोर्निया गया तो भी वहाँ के बड़े-बड़े पेड़ों की अपेक्षा, कानकार्ड के जङ्गली घास में ही मुझे ज्यादा जीवन मिलेगा। उनका कहना था कि पढ़ने-पढ़ाने से नहीं, बल्कि प्रकृति के सहवास में अपने अनुभवों से ही सबसे अच्छा ज्ञान प्राप्त हो सकता है। यह ज्ञान ही सबसे खरा होगा। "यदि यह खेत, यह नदियाँ, जङ्गल, और उसके निवासियों के सीधे-सादे रहन-सहन में मेरी दिलचस्पी खत्म हो जाये तो बड़ी से बड़ी संस्कृति और दौलत भी मेरा नुकसान पूरा नहीं कर सकती।"

थोरो प्रकृतिशास्त्र पर एक अनोखे ग्रन्थ का संकलन कर रहे थे जिसके लिए ऑल्काट ने कहा था, "कानकार्ड की उनकी भूचित्रावली जिसके लिए उनके पास उत्तम सामग्री और प्रतिभा दोनों हैं।" थोरो जन्मजात भूगोलशास्त्री थे। चैनिंग ने लिखा था, "उनका स्वप्न था एक कैलेंडर बनाने का जिसमें सर्दी और गर्मी दोनों की प्राकृतिक शोभा के चित्र हों।" नदी को नापने का यंत्र उनके पास था जिसे वह बार-बार देखते रहते थे; सोतों और झीलों का तापमान नोट करते रहते, नित्य नए आकाश का वर्णन लिखते, पौधों पर कलियों का आना, उनका फूलना, फलना, पतझड़, प्रवासी पक्षियों के आने-जाने का समय, और पशुओं की आदतें।" आस-पास के देहात के हर एक पहलू के बारे में ढेरों संदर्भ-सूची, उद्धरण और टिप्पणियां जमा कर ली थीं...पड़ोसियों के जीवन को भी नहीं छोड़ा। कृषि, दर्शन और सौन्दर्यशास्त्र, सभी इस सर्वेक्षण की परिधि में आते थे जिसका उद्देश्य था जीवन के मूल तत्वों का समन्वय...केवल कानकार्ड ही नहीं, सारे संसार का! विशालता या विस्तार से वह प्रभावित नहीं होते थे। उनके लिए सारे संसार को न्यू-इंग्लैंड के कुछ वर्ग मीलों में समेटा जा सकता था। वह कहते थे कि यह संभव है कि एक व्यक्ति सारी दुनिया का भ्रमण तो कर आए पर अपने विचारों की संकीर्ण दुनिया से बाहर न निकल सका हो।

पर्यवेक्षण, और लिखना—यही उनका जीवन था, और काम के लिए आने-जाने का साधन था, पैदल चलना या नाव में जाना। 'सडबरी' नदी में नाव लेकर जाते हुए उन्हें देख कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि वह केवल 'हकलबरी चुनने'[1] नहीं जा रहे हैं। उनकी शिकायत थी, "लोग यह नहीं

१. हकलबरी या ह्विर्टलबरी चुनना कॉनकॉर्डियनों का एक प्रिय शौक था।

समझते हैं कि जंगली रास्ते और नाव मेरे स्टडियो हैं, जहाँ मैं पवित्र एकान्त में रहता हूँ और ऐरे-गैरे लोगों को आने नहीं दिया जा सकता। उन्हें इसका ख्याल तो कभी नहीं आता कि किसी बालक को स्कूल से इकलबेरी चुनने ले जाएँ, फिर मेरे इस स्कूल और पढ़ने के समय का भी वैसा ही आदर क्यों नहीं करते ?" उनका अनुभव था कि प्रकृति-दर्शन तो किसी की संगति में किया जा सकता है पर उसके बारे में मनन करने के लिए एकान्त ज़रूरी है। अबाबील जाति के अमेरिकी पक्षी, शिकारी नेवलों और भेकों के लिए उनका प्रेम उन्हें एकान्त के लिए बाध्य करता था। पर प्रकृति के सहवास के लिए मनुष्य से दूर हो जाने की मजबूरी से वह दुःखी होते थे।

१८४८ में एमर्सन अपने दौरे से वापस लौट आए तो थोरो अपने परिवार के साथ रहने चले गए। उसके कुछ ही दिनों बाद वह लोग मेन स्ट्रीट पर पीले से रंग के एक अच्छे बड़े मकान में चले गए। शेष जीवन उन्होंने वहीं बिताया। परिवार का पेंसिल-कारोबार अब भी चल रहा था और हेनरी तथा उनके पिता की नई-नई सूझ के कारण उसकी दिन पर दिन उन्नति हो रही थी। अब वह लोग पेंसिल बनाने के बजाय बढ़िया किस्म के काले सीसे का चूरा बेचने लगे थे जिसका प्रयोग नए तरह के "एलेक्ट्रो-टाइप" में किया जा रहा था। धीरे-धीरे उनकी खुश-हाली बढ़ रही थी।

उनका जीवन भी स्थिर और नियमित-सा बन गया था; सुबह का समय सीसे के कारखाने, लिखने के कमरे और अपने सर्वेक्षण के काम में बिताते थे। करीब दस वर्ष से उनके पास सर्वेक्षण के कुछ मामूली से औजार थे और वहाँ के किसानों

और भूमि-स्वामियों को उनकी सेवाओं की जरूरत पड़ती रहती थी। बाद में तो उन्होंने अपने पास तरह-तरह के औजार जमा कर लिए। दोपहर वह बाहर बिताते—अक्सर अकेले, और कभी-कभी चैनिंग, एमर्सन या अपने घर वालों के साथ। कुछ शामें भी इन्हीं लोगों के साथ बीततीं—पर अक्सर लिखने और पढ़ने में, क्योंकि वह अब भी हार्वर्ड के पुस्तकालय से पुस्तकें लाते रहते थे।

उनकी रुचियाँ बढ़ती जा रहीं थीं—दर्शन और कविता की तरह अब वह कृषि, भूगोल और मानव-जातियों पर भी पुस्तकें पढ़ा करते थे—मानव-जातियों के बारे में इसलिए क्योंकि वह "रेड-इंडियन" जाति के बारे में पुस्तक लिखने की सोच रहे थे।

पर उन्हें यह सन्देह बना ही रहा कि वह पुस्तकें लिख भी सकेंगे या नहीं। इसका कारण भी था। एमर्सन की सारी कोशिशों के बावजूद, "कानकार्ड में एक सप्ताह" के लिए कोई प्रकाशक नहीं मिला था। बहुत ही किफायत और सादगी से रहने के कारण थोरो ने थोड़ा बहुत पैसा बचा लिया था। उन्होंने लिखा भी था, "पिछले पाँच सालों से मैं केवल अपने हाथ-पैर की मेहनत से कमाता-खाता रहा हूँ।" यों अब भी वह होरेस ग्रीले के द्वारा कुछ लेख आदि बेच लिया करते थे। एमर्सन

प्रकृति-वर्णन की तो बहुत प्रशंसा की पर उसके सर्वेश्वरवाद[1] को नहीं पचा सके। लन्दन के एक पत्र में किताब की निन्दा की गयी। उस समय के प्रसिद्ध अमेरिकी समालोचक जेम्स रसेल लोवेल ने "मैसाचुसेट्स क्वार्टरली रेव्यू" में उसकी प्रशंसा की। उसकी मौलिकता, आकर्षक शैली और हास्य के पुट की उन्होंने तारीफ की। पर "कानकार्ड में एक सप्ताह" में साधारण पाठकों के लिए कोई आकर्षण नहीं था।

चार वर्ष के बाद, छपी हुई एक हजार प्रतियों में से सात सौ छः प्रतियाँ, बिक न पाने के कारण, लेखक के पास वापस आ गयीं। थोरो के कमरे में उनका ढेर लग गया, और उनके पुस्तकालय की वृद्धि हो गयी। वह इस पर मजाक करते हुए कहते थे, "मेरे पुस्तकालय में नौ सौ पुस्तकें हैं जिनमें से सात सौ से अधिक मेरी ही लिखी हुई हैं।"

---

१. सर्वेश्वरवाद (पैन्थीज्म) के अनुसार प्रकृति और ईश्वर एक है।

कर सकता था, पर १८३० के युवकों के लिये तो ऐसा था जैसे बारूद के लिये जलती हुई दियासलाई की तीली। एमर्सन कभी बोस्टन के गिरजे में पादरी थे, फिर उन्होंने पौरोहित्य त्याग दिया। आजादी से रहने योग्य आय काफ़ी थी। कानकार्ड गाँव के बाहर उन्होंने एक अच्छा-सा घर ख़रीद लिया, जहाँ वह अपने ग्रामीण जीवन के शौक को पूरा कर सकते थे और साथ ही बोस्टन और हारवर्ड के बुद्धिजीवियों से भी सम्पर्क बनाए रख सकते थे।

उनका पूर्व जीवन अनिश्चित और दुर्भाग्यग्रस्त था। हारवर्ड और गिरजे के बाद उन्होंने अध्यापन की कोशिश की पर वह भी छोड़ दिया। ग़रीबी के साथ संघर्ष किया, क्षय से पीड़ित रहे और विवाह के बाद बहुत शीघ्र अपनी पत्नी को भी खो दिया। एक के बाद दूसरा मौका खोना ही मानो उनका जीवन-क्रम था। उनके गुरुजन उनकी प्रतिभा को तो स्वीकार करते थे, पर उनकी राय में खरी और प्रवाहमयी शैली के बावजूद, एमर्सन के लेख केवल अराजकता और नास्तिकता का ही प्रचार कर रहे थे। इस लम्बे कठोर चेहरे, पैगम्बर के से विश्वास वाले एमर्सन ने, जो हमेशा अपने सन्देश दूसरों तक पहुँचाने, और अपने अनुयायियों में से अपने समान जिज्ञासु व्यक्ति को खोज निकालने के लिये उत्सुक रहते थे, युवा हेनरी थोरो की महान् साहित्यिक प्रतिभा को भी ढूंढ़ निकाला।

थोरो की जिन्दगी पर एमर्सन का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। पर यह प्रभाव और आदर पारस्परिक थे। इस देहाती लड़के को, जो अब विद्यार्थी बन गया था, सच्ची विलक्षण, निर्भीक सच्चाई, तीव्र बुद्धि और आध्यात्मिक शक्ति को पहचानने में एमर्सन को देर नहीं लगी। हेनरी की प्रकृति-उपासना से उन्हें खुशी होती थी, उसकी वाक्चातुरी से वह आनन्दित होते थे,

और उनके प्रकृति-प्रेम, स्थानीय कलाओं में दक्षता और साहित्यिक प्रतिभा पर मुग्ध थे। हेनरी को अपने गुरु से बहुत कुछ सीखना था, और बदले में अपनी व्यावहारिक कलाओं में से कुछ उन्हें सिखानी थीं।

थोरो के लिए यूनानी भाषा एक पौरुषपूर्ण जाति के ओजपूर्ण विचारों और काव्य तक पहुँचने का साधन मात्र थी।

उनकी राय में प्लेटो मन्द और फीका था, पर इलियट अवश्य उस परिश्रम के योग्य था, जो उसे पूर्णरूप से समझने के लिये करना पड़ा। लैटिन लेखकों पर भी यही बात लागू थी। जर्मन समझना आवश्यक था क्योंकि वह सब से आधुनिक विचारों की भाषा थी। फ्रेंच अनुवादों के द्वारा पूर्वीय रहस्यवादों के बारे में भी उन्होंने कुछ जान लिया था।

ऑरेस्टस ब्राउन्सन से मित्रता हो जाने के कारण अंग्रेज समाजवादियों के प्रमुख विचारों पर भी विचार-विनिमय करने का अवसर मिलता था।

सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण था एमर्सन की कृति 'नेचर' (प्रकृति) का अध्ययन, जो हेनरी के हारवर्ड काल में प्रकाशित हुआ था, और जो सीधे उनके हृदय को छूने वाली पुकार थी। उनके अन्दर आत्म-निर्भरता और प्रकृति के ध्यान के द्वारा आध्यात्मिक विकास की जो अस्पष्ट-सी लालसा थी, उसने उसे मूर्त रूप दिया।

एमर्सन ने लिखा था, "मनुष्य अपने आप में ही विच्छिन्न है, इसी कारण आज संसार में एकता का अभाव है, और वह छिन्न-भिन्न हो गया है। इस कारण अपना संसार स्वयं ही बनाओ।

जीवन में क्या करना है, इस विषय में युवा ग्रेजुएट हेनरी थोरो के विचार अस्पष्ट और अस्थिर थे। उनके माँ-बाप चाहते थे

कि जीविका के लिए वह अध्यापन कार्य करें, पर वह स्वयं केवल कवि होने की बात ही सोच सकते थे और कवि के रूप में ही एमर्सन की गोष्ठी में उन्हें स्वीकार किया गया था।

१८३७ में वह हारवर्ड से वापस आये और कानकार्ड के देहाती स्कूल में अध्यापक बन गए, यद्यपि निःसन्देह उन्होंने अपने मन में सोच लिया था कि हमेशा के लिए यह काम नहीं करेंगे। दो हफ्ते बाद ही ग्रामीण शिक्षा समिति से उनका झगड़ा हो गया, क्योंकि उन्हों ने इस बात पर ज़ोर दिया था कि लड़कों को मारना जरूरी है। हेनरी को इस सजा के प्रभाव पर विश्वास नहीं था। एक अधिकारी के ज़ोर देने पर हेनरी ने एक दिन अपने छः छात्रों को बेंत लगाई। उसके बाद उनका मन इतना खिन्न हुआ कि वह काम छोड़-छाड़ कर आ गए, और फिर कभी वापस नहीं गए। उन्होंने कहा कि बच्चों को पीटने की अपेक्षा सड़कों पर मारे-मारे फिरना कहीं ज्यादा अच्छा है। मालूम नहीं, उनके परिवार वालों ने उनके इस आचरण के बारे में क्या कहा, पर हम कल्पना कर सकते हैं कि उनके स्वल्पभाषी पिता ने, जो अपने छोटे से काले सीसे के कारखाने द्वारा कठिनाई से घर का खर्च जुटा पा रहे थे, अपने जिद्दी बेटे की इस हरकत पर केवल अपना सर हिला दिया होगा। यह भी कल्पना कर सकते हैं कि परिवार के अन्य लोगों ने मौलिक सहानुभूति के साथ उनके इस आचरण का समर्थन किया होगा, क्योंकि मानव-हित के लिये वह सभी उत्साही सुधारक थे। असल में उस समय थोरो-परिवार गुलामी के विरोध का एक केन्द्र बनता जा रहा था।

अब हेनरी क्या करें? जीविका का प्रश्न सभी और बहुत वर्षों तक परेशान करने वाला था। वह ऐसा काम करना चाहते थे, जो वह सच्चे दिल से कर सकें, चाहे जितना समय और शक्ति लगे। पर यह स्पष्ट था कि कानकार्ड को कवि और

साहित्यिक आलोचक की आवश्यकता, नहीं थी। आवारा वह बन नहीं सकते थे, इसलिए, तब तक पिता के पेंसिल के कारखाने में ही हाथ बंटाया जाय। पर पेंसिल के कारोबार के लिये भी समय अनुकूल नहीं था। थोरो की बनाई पेंसिलें बढ़िया किस्म की थीं, और इधर सस्ती विदेशी पेंसिलों ने बाजार पर कब्जा, कर लिया था। यद्यपि उनका कारोबार 'थोरो एण्ड सन्स' कहलाता था, और बेटे, खास तौर से हेनरी, इस काम में दक्ष भी थे, पर काम इतना था ही नहीं कि सब को व्यस्त रख सके।

लड़कों को जीविका के और रास्ते खोजने पड़े। गाँव के स्कूल में हेनरी के साथ जो कांड हो गया था, उसके बाद उन्हें अपना ही एक स्कूल चलाने की सूझी। जून, १८३८, में उन्होंने अपना स्कूल खोल दिया। तीन महीने में जॉन और हेनरी थोरो ने खाली पड़ी हुई कानकार्ड अकादमी को, ले लिया। उनके रजिस्टर में पच्चीस छात्रों के नाम दर्ज थे, और प्रतीक्षा करने वालों की लम्बी सूची थी। कम-से-कम कुछ समय के लिए उनकी आर्थिक सफलता निश्चित थी।

सभी से सुनने में आता है कि स्कूल अच्छा था; पाठ्य-क्रम की योजना अच्छी थी, और बिना मारपीट के समझ-बूझ के साथ अनुशासन भी रखा जाता था। वह प्रगतिशील स्कूल था क्योंकि हेनरी एमर्सन की गोष्ठी में, जहाँ वह नियमपूर्वक जाते थे, ऐसे लोगों से मिलते रहते थे, जो शिक्षा सम्बन्धी नये सिद्धान्तों को काम में ला रहे थे।

एमर्सन के घर वह अक्सर गोष्ठी के वाक्-पटु सदस्यों को पूरे विश्वास के साथ शिक्षा सम्बन्धी नये और विचित्र सिद्धान्तों की व्याख्या करते सुनते। पर वह उनके प्रवाह में एकदम बह नहीं गए। उनके अपने चरित्र और मान्यताओं का निर्माण हो चुका था, उन्हें अभी परिपक्व होना था, पर उनमें कोई खास

परिवर्तन होने वाला नहीं था। क्योंकि उस समय भी हेनरी के विचार बिल्कुल मौलिक होने के साथ ही व्यवहार योग्य भी थे, यद्यपि, बाद में, अपने दार्शनिक विचारों में वह रहस्यवाद की ओर झुकने लगे थे। देहाती हस्तकलाओं में वह कुशल थे, और स्वभाव से ही उनकी व्यावहारिक संभावनाओं के माप-दण्ड द्वारा ही नये सामाजिक सिद्धान्तों का मूल्यांकन करते थे।

बच्चों के लिए हेनरी अच्छे शिक्षक थे। उन्होंने यह बात कभी नहीं छिपाई कि अपने साथी वयस्कों की संगति की अपेक्षा उन्हें अकेला रहना ज्यादा पसन्द था। पर वह बच्चों के झुण्ड को देहात में हैकलबरी चुनने ले जाने को हमेशा तैयार थे। उन्हें प्रकृति के बारे में बताते और रेड-इंडियन के किस्से सुनाते। बचपन की स्मृतियों को उन्होंने इस तरह संजो रखा था कि जंगल में पहुँचते ही वह उन क्षणों को पुनर्जीवित कर सकते थे।

'थोरो स्कूल' की प्रगतिशीलता, हेनरी की अपनी प्रतिभा के द्वारा बाहर के कामों, प्रकृति के अध्ययन और लकड़ी की दस्तकारी आदि के रूप में प्रगट होती थी। दोनों भाई एक-दूसरे के साथी थे और अक्सर जॉन ही हेनरी को जंगलों में ले जाते थे। जॉन को पक्षियों के निरीक्षण का बहुत शौक था, और यदि वह जीवित रहते, तो हेनरी की अपेक्षा अधिक नियमित रूप से प्रकृतिशास्त्री बनते।

जॉन चौबीस वर्ष के थे और हेनरी बाईस के। अच्छी खासी ज़िन्दगी थी, पर वह दोनों ही अपनी उम्र की स्वाभाविक भावनाओं में उलझने से बच नहीं सके। दोनों की उम्र प्रेम करने की थी, और उस ग्रीष्म ऋतु में दोनों एक ही लड़की से प्रेम करने लगे। वह थी उनके एक सहपाठी की बहन और परिवार की मित्र, सत्रह वर्षीया सुन्दरी एलेन सेवाल। कॉनकार्ड और मेरिमाक के कैम्प-फ़ायर के समय में वह दोनों के बीच एक छाया सी आने लगी, यद्यपि केवल हेनरी ने ही यह अनुभव किया। जॉन ने एलेन से विवाह करने की अपनी आशा को गुप्त नहीं रखा। हेनरी ने कुछ नहीं कहा। उनका प्रेम गुप्त था, और लगता यही था कि हमेशा ही गुप्त रहेगा।

एक वर्ष बीत गया। अगली गर्मी में जॉन ने एलेन से विवाह का प्रस्ताव किया। बहुत झिझक के बाद उसने इंकार कर दिया, जिससे हेनरी के दिल में नई उम्मीद जाग उठी। कुछ महीनों बाद, कुछ पत्र व्यवहार के पश्चात्, हेनरी ने उसके घर शिच्युएट के पते पर पत्र लिखकर अपना प्रेम प्रकट कर दिया। और अब उसकी बारी थी अपनी आशाओं के महल को धूल में मिलते देखने की। वह थोरो बन्धु को बहुत पसन्द करती थी, पर प्रेम उनमें से किसी से भी नहीं करती थी। उसको यह सोचकर दुःख होता था कि अब उनके बीच पहले जैसी बात नहीं रह सकेगी। इस सिलसिले में लिखा हुआ उसका एक पत्र सुरक्षित है। "मैंने उस शाम को 'एच. टी.' को पत्र लिखा। आज तक कभी कोई पत्र लिखते हुए मुझे इतना दुःख नहीं हुआ। मुझे यह ख़याल सहन नहीं हो सका कि यह दोनों मित्र, जिनका साथ मेरे लिये इतना आनन्ददायक रहा है, अब पहले की तरह खुलकर मुझ से नहीं मिलेंगे। मेरा पत्र बहुत संक्षिप्त था, पर मुझे आशा है कि जैसा होना चाहिए वैसा ही था।"

हेनर फिर कभी किसी लड़की की ओर झुक नहीं सके। उनकी कल्पना में एलेन की जो आदर्श मूर्त्ति स्थापित हो चुकी थी उसके बाद सभी युवतियों की ओर से उनका मन फिर गया।

: ३ :

"हमारा जीवन नदी में जल के समान है—सम्भव है इस वर्ष वह हमेशा से ज्यादा ऊपर तक बढ़ आये और सूखी, प्यासी धरती को जल-प्लावित कर दे।

—थोरो : वॉल्डेन

"मेरे नेक मित्र हेनरी ने अपनी सरलता और स्पष्ट, सहज-बोध द्वारा उस सूनी दोपहर में जान डाल दी"...एमर्सन ने यह अपनी डायरी में लिखा था। सारी दोपहर वह एमर्सन के बगीचे में साथ-साथ रहे। जान पड़ता है कि कम-से-कम उस बार एमर्सन केवल सुनते रहे, बोले नहीं। बढ़ावा मिलने पर हेनरी खूब बोलते थे और कुछ विषयों की उनकी जानकारी तो एमर्सन से अधिक थी—जैसे रैड इंडियन और कानकार्ड के आस-पास पाए जाने वाले उस जाति के अवशेष, कैनेडा के फ़र के तिजारती (महान् यात्री और प्रकृति-प्रेमी हेनरी एलेक्जेन्डर की पुस्तक 'ट्रैवेल्ज़ एण्ड एडवेन्चर इन कैनेडा' पढ़ने के बाद उनमें यह दिलचस्पी भड़क उठी थी)। पर सबसे ऊपर थी स्वयं प्रकृति—वह भावात्मक प्रकृति नहीं जिसके विषय में एमर्सन और कारलाइल ने इतना कुछ लिखा था, पर धरती का वास्तविक, मूर्त संसार, चट्टानें, हवा, पेड़-पौधे, पशु और मनुष्य।

प्रकृति के अध्ययन में इस गहरी दिलचस्पी के कारण थोरो और उनके बुद्धिवादी मित्रों में जो अन्तर था, वह समय के साथ-साथ बढ़ता गया। कानकार्ड की सैर की प्रत्येक छोटी से छोटी बात को वह डायरी में लिख लेते थे। यह एक ऐसी आदत थी जिसका अनुकरण स्वयं एमर्सन भी करना चाहते थे—"यदि

ज़िन्दगी काफ़ी लम्बी हो तो मेरी हज़ार कृतियों में एक पुस्तक प्रकृति पर भी अवश्य हो। उसमें, जहाँ-जहाँ मैं डेरा डालूँ, वहाँ की प्रकृति, उसका ज्योतिष-शास्त्र, वनस्पति-शास्त्र, ऋतुविज्ञान, उसका चित्रोपम सौन्दर्य और कविता, सब कुछ हो। कोई भी पक्षी, कोई भी कीड़ा या फूल भुलाया न जाए।"

पर एमर्सन अपनी कार्य-योजना से बँधे थे, उन्हें जीवन में एक उद्देश्य पूरा करना था। प्रकृति विज्ञान उनके लिए केवल एक शौक हो सकता था। और उनके लिए उनमें वह स्वाभाविक रुझान नहीं थी जो हेनरी में थी। एमर्सन ने हेनरी की वह नैसर्गिक प्रतिभा देखकर सोच लिया था कि दर्शन और साहित्य में थोरो का जो योगदान होगा उसका मर्म यही होगा।

एमर्सन ने थोरो में जो गुण पाए उनके कारण उन्हें 'कानकार्ड के असली निवासी' के रूप में देखा। एमर्सन अधिक विद्वान् थे, ज्यादा भ्रमण कर चुके थे, और अधिक संसारी जीव थे पर हेनरी को कानकार्ड में बहुत अधिक सैर करने का सम्मान मिला था। उनका विश्वास था कि क्षण-क्षण में विभिन्न रूप दर्शाने वाले विश्व-भ्रमण की अपेक्षा, अपने पास-पड़ोस के निकट सम्पर्क से ज्यादा सीखा जा सकता है। इसमें उनको कोई सार्थकता नहीं दीखती थी कि आधी दुनिया का चक्कर लगाया जाए केवल यह गिनने के लिए कि जंजीबार में कितनी बिल्लियाँ हैं। वह इसे गलत नहीं मानते थे कि दुनिया के एक भाग के लोग दूसरे भाग के निवासियों के रहन-सहन के बारे में नहीं जानते। "सारे देशों के लोगों का जीवन एक-सा ही है—एक ही प्रकार की अनुभूतियों से बना।"

और झीलों में पहुँचा देतीं। वह 'मस्केटाकिड' नदी के किनारे-किनारे चलते रहते, (उन्हें रैड इंडियन लोगों द्वारा दिया हुआ कानकार्ड नदी का यह पुराना नाम अधिक प्रिय था) जो शाहबलूत के पेड़ों से भरे उन चरागाहों के बीच से रेंगती चली जातीं जहाँ अम्लवदरी के पेड़ काई की तरह छाए हुए थे, और अंगूर की लताओं से उलझे हुए कुट्टिमदारू और भोज पेड़, धूप के लिए शाहबलूत और चीड़ के ऊँचे पेड़ों से मुकाबिला कर रहे थे।

प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में वह लीन हो जाते थे—मछली, स्तनधारी जीव, कीड़े-मकोड़े, पक्षी, फूल, पेड़-पौधे, सब के बारे में वह एकाग्रचित्त पैनी दृष्टि और मौलिक बुद्धि से जो कुछ देखते-सोचते वह तुरन्त लिख लेते। प्रकृति से उनका ऐन्द्रिक संपर्क था—वह उनकी इन्द्रियों को रोमांचित करती थी। उनका दृष्टिकोण निरपेक्ष, वैज्ञानिक नहीं था। गाँव को छोड़ने के बाद उनमें जो परिवर्तन हुआ, उससे उनके मित्र प्रभावित थे। जंगलों में रहते हुए पूर्णरूप से सजग रहते थे—उस रोमांच के वश जो किसी अलौकिक घटना की आशा से होता है।

पेड़-पौधों में दिलचस्पी जगने पर, या दूर-दूर तक छिटके हुए पौधों की बढ़त को ध्यान से देखने के लिए, हर रोज बीस-तीस मील पैदल चलते। पर वह बिना कुछ किए, घण्टों चुप-चाप बैठे रहकर भी अपना अध्ययन जारी रख सकते थे—यहाँ तक कि जंगली जानवर अपना जंगलीपन भूलकर उनके आस-पास आ पहुँच जाते। नदियों के किनारे पड़े-पड़े घण्टों छछूँदरों और मछलियों की लीला देखते, यह देखते कि हाथ बढ़ाकर नन्हीं 'पाउट' मछली को उसके घरौंदे से कैसे पकड़ निकाला जा सकता है, पीले रंग की धनुषाकार मछलियों को थपथपाते और कीचड़ में धंसकर कछुए की भिल्ली पकड़कर उठा लेते। उड़न-गिलहरियों, कछुओं के अण्डे लेने और उल्लू की आवाज

का वर्णन उन्होंने किया है। कछुओं, चूहों, बाजों, और बुलबुलों, फर्न, काई, पेड़ों पर कीड़ों द्वारा बनाए घाव, सोतों का घुमाव, भूदृश्यों का बनना, इन सब का वर्णन उन्होंने किया है। इनमें से हर एक आपस में सम्बद्ध है। किसी की भी उपेक्षा करने से बड़ी हानि होगी।

सर्दियों में सारे देहात पर उनका अधिकार था। उन्होंने लिखा है, "कल मैंने बर्फ पर फिसलती हुई एक लोमड़ी का पीछा किया। वह बार-बार अपनी पिछली टांगों पर बैठ जाती और भेड़िये के बच्चे की तरह मेरी ओर भूंकती। मैं सीधे उसकी ओर लपका तो वह पूरी रफ़्तार से दौड़ी। मैं स्थिर खड़ा हो गया तो, उसका भय कम न होने पर भी, किसी विचित्र और उसकी प्रकृति के किसी दृढ़ नियम ने उसे भी रोक दिया और वह फिर अपनी पिछली टांगों पर बैठ गयी......।" "या फिर वह बर्फ पर चलते हुए अप्रत्याशित आनन्द का अनुभव करते।" बर्फ तीन फीट मोटी है......कल रात पारा शून्य से तीस डिग्री नीचे गिर गया था......प्रकृति के सारे फव्वारे बन्द हो गए। पथिक रास्ते में ही जम जाता है। पर दूर से उस भोजवृक्ष के नीचे लाल रंग की छाती वाले चटक पक्षियों का दल जल्दी-जल्दी भोज के बीज चुग रहा है, और बर्फ की धूल झाड़ रहा है।

कैसा शानदार विपर्यास है। ठंडे सफेद बर्फ पर गर्म रंग, सुर्ख छाती, कितनी अलौकिक, कैसी सुकुमार बनावट, इस रूखी और वंध्या ऋतु में इनके रंगों की कैसी छटा!

ऐसे अवसर भी आते थे जब कारलाइल की प्रतिध्वनि की तरह, थोरो ने ब्रह्माण्ड के दैवी रहस्य या सौन्दर्य की अथाह गहराइयों की चर्चा की थी। एमर्सन को थोरो में एक आदर्श

"ट्राण्सेण्डेण्टेल"[1] अनुयायी की झलक मिलती थी। अभी वह ज़्यादा आजाद तबीयत थे, पर उन्हें यह विश्वास था कि निर्लिप्त-सा रहने वाला युवक जो स्वीकृत सिद्धान्तों और जीवन की महत्त्वाकांक्षाओं से मुक्त था, उस घेरे में लाया जा सकेगा। गिरजे को वह छोड़ चुके थे, और एमर्सन के झंडे के नीचे इकट्ठे होने वाले स्वाधीन आत्माओं की तरह वह भी विचारों के नए मोड़ और जीवन के नए सिद्धान्तों के बारे में सोचने को तत्पर थे। हेनरी निःसन्देह एक ऐसे युवक थे जिसे बढ़ावा मिलना चाहिए, और शीघ्र ही वह एमर्सन के घर नियमित रूप से जाने वालों में हो गए।

एमर्सन के घर में उन्होंने देखा कि उनकी दूसरी पत्नी लिदियन भी उन्हें उतना ही चाहती थी जितना स्वयं रैल्फ वाल्डो। लिदियन से उसकी स्थायी और स्नेहपूर्ण मैत्री स्थापित होने को थी। पीली-सी, नाजुक और कोमल स्वभाव की, उसके कुशल क्षेम की चिन्ता, उसकी उन्नति में दिलचस्पी, और उनके कई विचारों के प्रति सहानुभूति रखने वाली लिदियन हेनरी की दृष्टि में, आदर्श नारीत्व की ऐसी मूर्ति थी जो किसी युवा कवि के गीतों की प्रेरणा बन सकती थी। उससे बहुत भिन्न एक और महिला से हेनरी की अक्सर एमर्सन के घर मुलाकात हो जाती थी। वह थी मार्गरेट फुलर जो एक प्रतिभाशील लेखिका, "नवीनता" की पक्की अनुयायी और एक ओजस्विनी स्त्री थी। वह हेनरी को एक होनहार और अधकचरे युवक के रूप में देखती थी, जो उसे पसन्द तो था, पर जिसे ज़्यादा निर

---

१. ट्रान्सेण्डेण्टलिज़म :—१८४० में अमेरिका के न्यू इंग्लैंड में रैल्फ वाल्डो एमर्सन द्वारा चलायी गयी एक नयी धार्मिक और दार्शनिक विचारधारा जिसने तत्कालीन साहित्य और दर्शन को बहुत प्रभावित किया था।

चढ़ाना ठीक नहीं समझती थी।

एमर्सन के घर, जो उनकी गोष्ठी का अड्डा था, हेनरी कॉनकार्ड के बुद्धिवादियों को, अपने गुरु के सामने, 'नवीनता के सिद्धान्त की व्याख्या करते सुनते थे। वह इन अनुयायियों को परख सकते थे और देख सकते थे, कि बाहरी साज-सज्जा के पीछे वास्तव में वह किस कोटि के व्यक्ति हैं। मन में शंका होने पर वह सदा ही उनका बाहरी आवरण खींच फेंकने को आतुर रहते थे। इन वाक्पटु, उग्र विचार और उत्साही लोगों की बातों के लिये हेनरी के मन में सराहना भी थी और कुछ अविश्वास भी। व्यक्तिगत रूप से वह उन सबको पसन्द करते थे, पर उनके समूह से दूर ही रहना चाहते थे, खासतौर से जब वह अलग-अलग समुदाय बनाने की बात करते थे।

१८४० में एक घटना घटी जो अमेरिकी इतिहास के लिये तो छोटी-सी बात थी, पर थोरो के जीवन के लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी। यह घटना थी 'डायल' शीर्षक से न्यू इंग्लैंड के 'ट्रांसिडेण्टल' वर्ग के आडम्बरपूर्ण और लघुजीवी मुख पत्र की स्थापना। 'डायल' का प्रकाशन बोस्टन से होता था, जबकि वह नगर 'नए संसार' की संस्कृति का केन्द्र बना हुआ था। इस पत्र के पाठक थोड़े ही थे—तीन सौ से भी कम। पर उसने सारे संसार के बुद्धिवादियों का ध्यान आकर्षित किया।

हेनरी के समान युवक लेखकों का परिचय कराने के लिये जिनकी पहली रचनाओं के लिए, अन्यत्र प्रकाशक न मिलता, यही एक पत्र था। 'डायल' की प्रकाशक थीं, साहसी महिला एलिज़बेथ पीबॉडी, जिन्होंने बोस्टन के वेस्ट स्ट्रीट पर अपना प्रसिद्ध प्रकाशनगृह खोला था। उनके प्रकाशनगृह ने 'ट्रांसिडेण्टल' विचारधारा का और भी साहित्य छापा और उसने [illegible] नैथेनियल हॉथार्न की पहली कृतियाँ भी प्रकाशित कीं।

१८४० से १८४२ तक "डायल" की सम्पादिका मार्गरेट फुलर थीं। वह युवा स्कूल अध्यापक थोरो की रचनाओं को अभी कच्चा समझती थीं, और उनके कई लेखों को उन्होंने अस्वीकार भी कर दिया। इससे थोरो के आत्माभिमान को चोट अवश्य पहुँची, पर उनकी शैली में भी सुधार हो गया। उनका सौभाग्य था कि उन्हें एमर्सन जैसे शुभचिंतक मिले जो उन्हें उत्साह बढ़ाने वाले परामर्श देते रहे और लिखने को उकसाते रहे। उन्हें इस बढ़ावे की ज़रूरत भी थी क्योंकि यह उनकी आकांक्षा बनती जा रही थी कि लिखना उनकी जीविका का एक अंश बन जाए। वह सोचते थे कि अपने को किसी नीरस रोजगार के लिए बेचने के खतरे से अपनी रक्षा करने का एकमात्र उपाय लिखना ही है। उन्होंने लिखा था "किसी भी पेशे में फँसने वाले लोगों का हमेशा के लिए अन्त हो जाता है। दुनिया उनका मरसिया पढ़ सकती है।"

१८४१ में जब, भाई की बीमारी के कारण उन्हें स्कूल बन्द करना पड़ा तो उन्हें चिन्ता से कुछ राहत मिली होगी। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि जब तक बिल्कुल मजबूरी न हो, अध्यापन कार्य नहीं करेंगे। उन्हें आजादी अपनी पकड़ में आती दिखायी दी। "मैं अहों से भी अधिक मुक्त हूँ········ मैं जनमत, शासन, धर्म, शिक्षा, समाज, सब से दूर जा सकता हूँ ········। धन्य भाग्य, ज़मीन में हमारी जड़ें धंसी नहीं हैं······ और यहाँ ही सारी दुनिया खत्म नहीं हो जाती। कहीं बनके बन गए तो गर्मियों में टिएरा डेल········फुएगो की सैर के लिए नहीं जा सकते।

पर स्पष्ट है, कि वह केवल शरीर की आजादी नहीं चाहते थे। उन्हें आत्मा की निष्क्रियता का, उनमें जंग लगने का डर था। उन्होंने लिखा था, "हमारे हाथ-पैरों को तो काफी जगह

मिल जाती है, पर एक कोने में पड़ी हमारी आत्मा को जंग लगता रहता है।" अपनी आजादी को बनाए रखने का दृढ़-निश्चय करके वह मां-बाप के घर से अलग कहीं रहने की जगह खोजने लगे। गरीब लेखकों की तरह भूखे रहने के लिए उन्हें किसी अटारी की खोज नहीं थी, वह तो चाहते थे किसी फार्म से लगा हुआ घर, जहां वह कम-से-कम आमदनी में निर्वाह कर सकते। वहां उन्हें सोचने का, प्रकृति के अध्ययन का और लिखने का पूरा अवकाश मिलता। कभी-कभी अपने पड़ोसियों के यहां मजदूरी कर के भी वह अपने सादे जीवन के लिए कुछ कमा सकते थे। लेकिन जैसा घर वह चाहते थे, नहीं मिला। अभी वह सोच ही रहे थे कि दूसरे घर की तलाश करते रहें या खुद ही एक बना लें कि एमर्सन ने एक नौकरी का प्रस्ताव भेजा, जिसे उन्होंने अप्रैल १८८१ में स्वीकार कर लिया।

काम की यह जगह खास हेनरी के लिए ही बनायी गयी थी ताकि हेनरी को जैसा जीवन चाहिए था, वह मिल सके··· काफी अवकाश, मित्रतापूर्ण घर, अच्छा भोजन·········करीब-करीब पूरी आजादी। पर इससे एमर्सन का भी लाभ था। रैल्फ वाल्डो को भाषणों के दौरे पर जाना, और हफ्तों तक घर से बाहर रहना था। हेनरी परिवार का सदस्य बनकर गृहस्वामी की अनुपस्थिति में उनका काम-काज संभाल सकते थे। रैल्फ वाल्डो के लिए इससे अच्छी व्यवस्था और क्या हो सकती थी? हेनरी एमर्सन के बच्चों को बहुत प्यार करते थे, लिहाजा वे भी वह पसन्द थे और एक कुशल और विश्वसनीय [illegible] हो सकते थे।

उनको अलग कमरा और ऊपरी खर्च मिलता था, पर वेतन नहीं, क्योंकि एमर्सन अमीर नहीं थे। पर यह उनके लिये कठिन नहीं था जिसने अपनी डायरी में अपनी यह गुप्त प्रार्थना लिखी हो "अमीरी से संघर्ष के अतिरिक्त, और किसी संघर्ष में मुझे मत डालो।" फिर काम भी हल्का होगा, जब मर्जी हो, आ-जा सकते हैं, और परिवार के लोगों के समान ही होंगे। एक ऐसे लेखक को, जो अभी एक कली की अवस्था में हो, इससे ज्यादा और क्या चाहिए था ?

एमर्सन और अल्काट ने योजना बनायी कि उन दोनों के परिवार एमर्सन के घर में रहें, पर उनकी अधिक व्यवहार-कुशल पत्नियों ने यह प्रस्ताव रद्द कर दिया।

अल्काट परिवार के बदले हेनरी आ गए। रैल्फ वाल्डो को बागबानी में न तो रुचि थी और न उसके लिए शक्ति ही थी, पर जब वह घर में होते तो हेनरी के पीछे-पीछे बाग में कुछ न कुछ किया करते। हेनरी के साथ जंगल की सैर में उन्हें नया आनंद आता और उन्हें ऐसे पेड़-पौधे और पक्षी दिखाए जाते जिनके अस्तित्व के बारे में उन्हें पता ही नहीं था। एक दिन हेनरी उन्हें कानकार्ड नदी पर नाव में पूर्णिमा में प्रकृति का सौन्दर्य दिखाने ले गए। एमर्सन ने मुग्ध होकर अपनी डायरी में लिखा "एक ही खेत से होकर हम नाव तक गए और फिर चप्पू के एक ही आघात से हम प्रकृति के भीतर पहुँच गए। समय का बोध, विज्ञान, इतिहास सब कुछ पीछे छूट गया।"

यह दो वर्ष कानकार्ड के सांस्कृतिक जीवन के हृदय-स्थल में रहने वाले व्यक्ति के लिए घटनापूर्ण थे। "डायल" और एमर्सन की ख्याति द्वारा संयुक्त, ज्यादा से ज्यादा "ट्रान्सडेंण्टलवादी" मित्र कानकार्ड में रहने के लिये आने लगे और उनकी उपस्थिति से हेनरी का जीवन अधिक गहरा और गंभीर होता गया।

बड़े बुझे हुए मन से लौटे—जैसा कि उनके [illegible] भाषण के बाद हो जाया करता था। यह तो आने वाली पीढ़ियों का सौभाग्य था, कि हर तरह के मूड में वह अपने मन की बात अपने रोजनामचे को सुना सकते थे। अपने विकृत विचारों या मन के निरानन्द को जी खोलकर अपनी डायरी में व्यक्त कर सकते थे। उसके बाद उनका मन हल्का हो जाता। इस मौके पर उन्होंने लिखा था, "इस मौसम में दो बार भाषण देने के बाद मुझे लगता है कि मैं अपने श्रोताओं में दिलचस्पी पैदा करके सफल वक्ता बनने की चेष्टा से अपने को हल्का बना रहा हूँ। मुझे यह सोच कर बड़ी निराशा होती है कि मैं जो कुछ हूँ, या जिसके लिए मैं अपनी कद्र करता हूँ, वह इन श्रोताओं पर बर्बाद हो जाता है।" और श्रोताओं की क्या मजाल थी कि वह इतने थोरो से, जिन्होंने समझौता करना जाना ही नहीं, यह आशा करें कि वह कड़वी गोलियों पर चीनी की पर्त चढ़ाएँगे, या अपने को दिलचस्प बनाने और उनका मनोरंजन करने की चिन्ता करेंगे।

अपने को सांत्वना और शक्ति मिली थी, उन्हें इन बेढंगे श्रोताओं पर बर्बाद करते दुःख होता है।" पर उनके भाषण का अनोखा विषय सदा ही श्रोताओं को आकर्षित करता रहा, और बराबर कई सालों तक वोरसेस्टर और कानकार्ड दोनों के "लीस्यूम" में सालाना भाषण देते रहे। दूसरे गाँव और शहरों से भी निमन्त्रण आते थे। कभी-कभी उनके भाषण मनोरंजक भी होते थे। केपकाड के उनके अनुभवों का मज़ाकिया वृतान्त सुन कर तो हँसते-हँसते लोगों की आँखों में आँसू आ गए।

"जंगली सेब" जैसे उनके प्राकृतिक-इतिहास सम्बन्धी भाषण भी पसन्द किए गए। उनकी आवाज़ मधुर थी, पर उसका पूरा फायदा वह नहीं उठाते थे, क्योंकि श्रोताओं की ओर देखने के बजाय उनकी आदत थी सिर झुका कर और बराबर अपनी लिपि पर नज़र गड़ाए भाषण पढ़ने की।

सारी ज़िन्दगी भाषण देते रहने पर भी आर्थिक लाभ बहुत कम हुआ। हाँ, अगर कोई एमर्सन होता तो काफ़ी लाभ हो सकता था। गाँव की 'विद्याशालाओं' से कभी कुछ डालर मिल जाते और कभी कुछ भी नहीं। वहाँ पर बोलने की वजह सिर्फ यह थी कि भावों और विचारों के निकास का यही एक रास्ता था, और क्योंकि वह शिक्षा के लिए बढ़ते हुए उत्साह का ज़माना था, श्रोताओं का जुटना भी निश्चित था।

'लीस्यूम' आन्दोलन नया ही था। पर वह न्यूइंगलैंड के बौद्धिक-जीवन की एक आवश्यक नाड़ी बन गया था। जिन्हें नए विचारों में दिलचस्पी थी, वह उसका समर्थन करते थे। मंच पर से भाषण देने का युग खत्म हो चला था। न्यूइंगलैंड के साहित्यिक पुनरुत्थान के द्वारा लिखित साहित्य का महत्त्व बढ़ गया था। कई प्रदेशों के गाँवों और कस्बों के 'लीस्यूम' में हर वर्ष ऐसे सैकड़ों भाषण होते थे जो विचार-अभिव्यक्ति के नए और

पुराने तरीकों को जोड़ने का प्रयत्न करते थे। यह एक बहुत अच्छा आन्दोलन था जिसके जोड़ की कोई चीज आजकल देखने में नहीं आती। किसी के पास कहने को कुछ होता तो वह उसे भाषण का रूप दे सकता था। कम-से-कम अपने गाँव में अपनी बात सुनाने का अवसर उसे अवश्य मिलता था। यदि वहाँ उसका अच्छा स्वागत होता तो और जगहों से भी बुलाया जाता। दार्शनिकों और साहित्यकारों से समृद्ध होने के कारण कानकार्ड का 'लीस्यूम' भी प्रथम श्रेणी का था, यद्यपि वहाँ भी बहुत अरसे तक अराजकतावादी और अधार्मिक विचारकों के भाषण-मंच पर आने का विरोध होता रहा था। १८४५ में ही एमर्सन और उनके साथियों ने भाषण की पूरी स्वतन्त्रता के अपने सिद्धान्त के पक्ष में, 'लीस्यूम' को जीत लिया। 'लीस्यूम' का संयोजन बारी-बारी से लोगों को करना होता था। १८४८-४९ तक भाषणों का कार्यक्रम थोरो के हाथों में था।

जंगली क्षेत्रों का आकर्षण उन्हें तीन बार मैनकॉट ले गया। अपने भाषणों के लिए सब से ज्यादा और बढ़िया सामग्री उन्हें वहीं मिली।

चट्टानी पौधे, सहदेवी, समुद्री-पक्षी—समुद्री-काक, जलचारी पक्षी, हवा से बौने हो गए, सेब और सर्जरस के पेड़, समुद्र के तट पर उगने वाली घास, रेत के टीलों को सहारा देने के लिए लगाए चीड़ के पेड़, मक्का पीसने वाली हवा-चक्की, 'इंडियन' लोगों के तीरों के फल, फँसे हुए व्हेल, तरह-तरह की खोलदार मछलियाँ, गुज़रने वाले जहाज़ों से फेंकी हुई चीज़ें, पुराने ध्वंसावशेष, किनारे खुला हुआ दलदली कोयला, पूर्वकालीन पेड़ों के ठूंठ, और प्रकाश-स्तंभ जिसकी लालटेन से टकरा कर हज़ारों पतंगे और पक्षी मर गए थे।

ज्वार की धार पर वह मीलों चलते जाते जब तक कि सब से ऊँची लहर आ कर पीछे न हटा देती। समुद्र के अन्तरंग सहवास का आनन्द उठाते उनके जूतों में बालू भर जाती, गीले तट की चमक से आँखें चौंधिया जातीं। कानकार्ड नदी के उस शान्त प्रवाह के बाद, समुद्र में तैरने पर पानी बर्फीला लगता, और लहरों का तटों से टकराना भयावह। कभी वह भीतर की ओर चलते जाते और बालू की उस विस्तृत राशि पर उगती हुई अच्छी फसल को देखकर चकित हो जाते। वन की यह सन्तान फूलते हुए समुद्री-अलूचे, जंगली गुलाब और मारवल्ली (एक प्रकार की जंगली लता) के कुंज में पहुँच कर निहाल हो जाता। "जब गुलाब के फूल बहार पर होते तो बालू की इस राशि के बीच-बीच में धरती के यह टुकड़े फूलों के ऐसे विपुल सौंदर्य का प्रदर्शन करते थे कि उसके आगे इटली का या कोई भी कृत्रिम गुलाब-कुंज ठहर नहीं सकता था।" थोरो गाँवों से बचते थे और ऐसे लोगों की टोह में रहते जो बिल्कुल अकेले खोलदार मछलियाँ पकड़ते होते या लकड़ियां और टूटे जहाज़ों के टुकड़े बीनते होते और या फिर समुद्र की तरंगों पर पाटियों पर बैठ कर मछलियाँ पकड़ते होते। यह लोग उनके समुद्री

प्रतिरूप थे जिन्हें वह कानकार्ड के जंगलों में प्रशंसा की दृष्टि से देखा करते थे···एकाकी, बहिष्कृत, पर स्वच्छन्द। सब से अधिक तो समुद्र के उस भव्य वर्ण और शक्ति ने उनको मोह लिया था। समुद्र की तरंगों को देखते हुए वह प्राचीन अन्वेषकों की समुद्र-यात्राओं और मानचित्र बनाने वालों के बारे में सोचने लगते···कोलम्बस, हुम्बो, गिल्बर्ट और शैम्प्लेन, और पुराने इंग्लैण्ड से न्यू इंग्लैण्ड की ओर जाने वाले वह यात्री पहले-पहल जिन्होंने कानकार्ड की भूमि को छुआ था।

पहली बार १८४९ में थोरो एलेरी चैनिङ्ग के साथ केपकाड गए थे। उस बार उन्हें पतझड़ी तूफान और जहाजी-दुर्घटना का सामना पड़ा। दूसरे साल जून के महीने में उन्होंने उसका शान्त ग्रीष्मकालीन रूप देखा। अगले महीने, एमर्सन के अनुरोध पर वह फिर उस समुद्र-तट पर गए, इस बार मार्गरेट फुलर की अस्थियाँ ढूँढ़ने। मार्गरेट फुलर अपने इटालियन पति मार्क्विस ओसोली और दुधमुँहे बच्चे के साथ यूरोप से आ रही थीं कि न्यूयार्क पहुँचने के पहले, उनका जहाज़ तूफान में फँस गया और वह सब डूब गए। यह ज्ञात था कि मार्गरेट फुलर ने मैज़िनी के नेतृत्व में हुई रोम की क्रान्ति का इतिहास पूरा कर लिया था और उसकी पाण्डुलिपि, अमेरिका में छापने के इरादे से, अपने साथ ही ला रही थीं। थोरो उनके शव और पाण्डुलिपि को ढूँढने गए। पर समुद्र ने उन लोगों को नहीं लौटाया, और न ही वह पाण्डुलिपि कभी मिली।

अपने मित्रों और घरवालों के साथ नाव में सैर करते या घूमते-फिरते ।

उनकी विचित्र वेश-भूषा को देख, जो पहचानते नहीं थे, उन्हें ठठेरा, विसाती, मिस्त्री या कभी-कभी सिर्फ आवारा समझ बैठते थे। बैंक की एक चोरी के बाद, चोरों का पता लगाती हुई पुलिस ने कुछ दिनों तक उनका पीछा किया। और एक बार वह पेड़ के तने की टेक लगाए खड़े थे तो किसी ने उन्हें शराबी किसान समझ लिया। उनके कपड़े बहुत मजबूत और टिकाऊ थे···मौसम का बुरा असर उन पर नहीं पड़ता था। उनके जूते मैले और बहुत-सी जगह मोम से जोड़े हुए थे। केवल पैदल चलना ही उन्हें अच्छा लगता था। रेलगाड़ी में सीट से बेकार को लटकती हुई टाँगें उन्हें बहुत अजीब-सी लगती थीं। वह अपने साथ बहुत ही थोड़ा-सा सामान रखते थे, पड़ाव और सैर के लिए अपनी जरूरतों को काट-छाँट कर उन्होंने कम-से-कम कर लिया था।

जब वह ट्रेन से कैनेडा गए तब उनका कुल सामान था, भूरे कागज में बँधा हुआ एक बंडल, और ताड़ के पत्तों का टोप। उन्होंने लिखा था, "यात्रा करने का सब से सस्ता, और थोड़े से फासले में दूर-से-दूर जा सकने का सब से सही तरीका है, पैदल चलना। साथ में सिर्फ एक चम्मच, मछली पकड़ने का काँटा, रेड-इंडियन लोगों के जैसा कुछ भोजन, नमक और चीनी रखना काफी है। किसी झील या पोखर में पहुँच गए तो मछली पकड़ कर पका लो, या फिर चटपट बन जाने वाली कोई मीठी चीज बनाई जा सकती है, या किसान के घर से चार पैसे में एक डबलरोटी खरीदी जा सकती है। रास्ते को काट कर बहने वाले अगले सोते में रोटी को जरा-सा भिगो कर चीनी में लपेट लो··· यह भोजन सारे दिन के लिए काफी होगा।" उनके असबाब की

दो खास चीजें थीं, बड़ा-सा एक टोप और एक छाता। पर उनका भी खास उपयोग था। टोप के अस्तर के अंदर वह अपने चुने हुए वनस्पतियों के नमूने रख लेते थे ताकि वनस्पतिशास्त्रियों वाली संदूकची का बोझ उठाने से बच जाएं। छाता भी उपयोगी था क्योंकि एक फालतू बरसाती कोट की अपेक्षा ज्यादा आरामदेह भी था और हल्का भी।

थोरो के जीवन-काल में ही दक्षिणी राज्यों में गुलामी के खिलाफ बढ़ता हुआ आन्दोलन अपनी कटुता की चरम-सीमा को पहुँच गया था, और गृह-युद्ध का एक बड़ा कारण बनता जा रहा था। दक्षिणी बागानों से निकल कर भागने वाले गुलामों की संख्या बढ़ती जा रही थी। उनको प्रदेशों से होकर ले जाते थे, और सहानुभूति रखने वालों की मदद से या तो आगे कैनाडा की ओर निकल जाते और या वहीं उत्तरी राज्यों में कहीं बस जाते थे। कानकार्ड में ये फरार लोग बहुत कम दीखते थे क्योंकि भागे हुए गुलामों के मुख्य रास्तों पर यह नहीं पड़ता था।

राज्यों के ही नहीं, अपनी सरकार के भी खिलाफ हो गए थे। दासता की प्रथा के प्रश्न के प्रति सभी सचेत हो गए।

"फ्यूजिटिव स्लेव ऐक्ट"[1] के पहले भी थोरो ने अपने "सिविल डिसओबिडियन्स" में, अपनी सरकार पर आक्रमण किया था जो अपने को स्वाधीनता का रक्षक कहते हुए भी गुलामी को माफ करने की पाखण्डपूर्ण नीति बरत रही थी।

जेल वाली घटना ने यह स्पष्ट कर दिया था कि अपनी अंतरात्मा के आदेश के अनुसार चलने वालों की क्या गति होती है। उसके बाद ही सरकार ने केवल फरार गुलामों को पकड़ने और लौटाने का ही नहीं, उन गुलामों को जो उत्तर में बस गए थे, वापस लौटाने का कानून जारी किया। इस प्रकार सरकार ने व्यक्ति के विवेक की स्वाधीनता में बहुत दूर तक दखल देने की कोशिश की। दासता का उन्मूलन चाहने वाले मैसाचुसेट्सवासियों का विरोध बहुत कटु हो उठा जबकि अप्रैल १८५१ में, नीग्रो रिम्स को उनकी सरकार ने गुलामी करने के लिए वापस भेज दिया।

---

१. फ्यूजिटिव-स्लेव ऐक्ट—वास्तव में बागानों में मजदूरों की आवश्यकता ने ही गुलामों की प्रथा को जन्म दिया था। उत्तरी दक्षिणी अमेरिका में, बहुत से बागान, स्पेन के रहने वालों के कब्जे में थे। वह लोग स्थानीय लोगों को गुलाम बना लेते थे। अफ्रीका से नीग्रो लोगों को भी गुलाम बना कर इन बागानों में भेजते थे। ब्राजील में कभी-कभी नीग्रो गुलाम बच निकलते थे और गिरोह बना कर अपनी रक्षा करते थे। सत्रहवीं शताब्दी में व्यापारी लोग गुलामों को उत्तरी अमेरिका के अंग्रेजी क्षेत्रों में लाने लगे। १८५० में फरार गुलामों के खिलाफ कानून पास किया गया। जो लोग फरार गुलामों की मदद करते थे या उनकी गिरफ्तारी में बाधा डालते थे उन्हें भारी जुर्माने का दंड दिया गया। इस कानून से लोगों में बहुत कटुता फैल गई।

सरकार के ऊपर नए आक्रमण के लिए थोरो नया मसाला इकट्ठा करने लगे।

१८५० से १८५४ तक अन्यायपूर्ण सरकार के खिलाफ़ उनका विद्वेष बराबर बढ़ता गया। जिस तरह सिद्धान्त की रक्षा के लिए एक बार उन्होंने 'पोल-टैक्स' देने से इन्कार कर दिया था, उसी तरह, उसी उद्देश्य से, हर मौके पर वह 'फ्यूजीटिव स्लेव लॉ' को तोड़ने पर तैयार हो गए।

उनके मित्र मानक्योर 'कानवे' ने उस समय का चित्रण किया है जब एक दिन सुबह-सुबह एक नीग्रो थोरो के द्वार पर आकर बेहोश हो गया और थोरो ने उसकी सुश्रूषा की। "मैं उस महाविद्वान् को उस गरीब गुलाम की विनम्र और स्नेहपूर्ण सेवा करते देखता रहा। उसको खिलाना, उसके सूजे हुए पैरों को धोना, और उससे बार-बार आग्रह करना कि वह आराम के सिवा और किसी चीज़ की चिन्ता न करे। दुनिया का वह सबसे धीर और शान्त व्यक्ति बार-बार नीग्रो के पास जाता, उससे बिल्कुल बेतकल्लुफ़ होने का आग्रह करता, और उसे विश्वास दिलाता कि यहाँ रहते दुनिया की कोई ताकत उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकेगी। सैर के लिए वह नहीं जा सकते थे, पर गुलाम की रखवाली करना ज़रूरी था क्योंकि गुलामों को पकड़ने वाले अब भी लगे हुए थे........।"

दिया। चार जुलाई, को कानकॉर्ड से अस्सी मील दूर, उन्होंने एक भाषण पढ़ा जिसका शीर्षक था "मैसाचुसेट्स में गुलामी।" "सिविल डिसओबिडियन्स" (नागरिक सत्याग्रह) की तरह वह भी अन्याय के खिलाफ उनका अभियोग था। उन्होंने ऐसी सरकार के प्रति विरक्ति प्रगट की जो बिल्कुल निर्दोष व्यक्तियों को सताने में अपना पौरुष दिखाती है। उनका दृढ़-विश्वास था कि इस प्रकार की अन्यायी सरकार कोई अर्थ नहीं रखती, वह ऐसी सरकार के अस्तित्व को भी नहीं मान सकते। उन्होंने कहा, "पिछले कुछ महीनों से मैं एक बड़ी क्षति का अनुभव कर रहा हूँ। पहले मुझे समझ में नहीं आया कि कौन-सी चीज़ मुझे इतना पीड़ित कर रही है। आखिर मुझे समझ में आ गया कि मेरा देश खो गया है……।"

गुलामी के बाद उन्होंने धन के लोभ पर चोट की। न्यू बेडफोर्ड, नाण्टुकेट, और फिलाडेलफिया में उन्होंने "जीविकोपार्जन" पर भाषण दिया जो "लाइफ विदाउट प्रिंसिपल" (सिद्धान्तहीन जीवन) के नाम से बाद में छपा भी था। इसका विषय था काम और धन कमाने में लिप्त समाज में रहने के कारण व्यक्ति का अधःपतन। उनका कहना था कि "शायद ऐसा समाज समझता है कि ईश्वर एक धनवान् भद्र पुरुष है जो मुट्ठी भर सिक्के बिखेर कर देखना चाहता है कि मनुष्य-जाति उस पर किस तरह टूट पड़ती है।"

काश, इन्सान अपनी जिन्दगी को ज्यादा सादा बना सकता, इतनी लम्बी कड़ी मेहनत को कम कर सकता, अखबार पढ़ना छोड़ सकता, और ज्यादा अन्तर्मुखी हो सकता। आस्ट्रेलिया और कैलिफोर्निया जाकर स्वर्ण की खोज करने के बजाय अपने हृदय की गहराइयों में ही उस स्वर्ण को ढूँढने की कोशिश करता। "अगर कोई आदमी जंगलों में इस लिए घूमता है कि

उसे उससे प्रेम है, इसका खतरा है कि लोग उसे आवारा समझ बैठेंगे। पर यदि कोई लाभ की आशा से अपना पूरा दिन जंगल को काटने और धरती को समय से पहले ही वृक्षहीन बनाने लगता है तो लोग उसे बड़ा साहसी नागरिक समझ कर उसका आदर करते हैं।"

कुछ महीने पहले ही "कानकार्ड में एक सप्ताह" की सात सौ से अधिक अनबिकी प्रतियाँ प्रकाशकों के पास से लौट आयीं थीं। शायद असफलता की चुभन की हालत में ही उन्होंने लिखा था, "धन कमाने के सभी तरीके पतन की ओर ले जाने वाले हैं—यदि लेखक या वक्ता बनकर धन कमाना है तो लोकप्रिय होना जरूरी है, जिसका अर्थ है नीचे गिरना। आप को मनुष्यता से गिरने के लिए पैसे दिए जाते हैं।"

यह देखकर उनको बहुत खेद होता था कि सर्वेक्षण में भी जिस काम के लिए वह आस-पास मीलों तक सब से अधिक योग्य माने जाते थे, उनके सबसे से उच्चकोटि के काम के लिए अवसर नहीं मिलता था। उन दिनों जमींदार लोग सिर्फ सर-सरी तौर पर किया गया सर्वेक्षण ही चाहते थे जो बिल्कुल सही न हो, ताकि वह अपनी जायदाद में दो-चार एकड़ जमीन और जोड़ सकें। और सर्वेक्षक को खुद यह लगता था कि उनका सारा जीवन ही गलत रास्ते पर भटक गया है। "इस तरह की जिन्दगी और जल्दी-जल्दी में किए जाने वाले बाहर के काम के कारण मैं अपने भोजन की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दे पाता। और मैं देखता हूं कि आम कायदा भी यही है। यदि मैं अपनी मर्जी के मुताबिक रह सकूं तो न चाय और न काफी ही पिऊं, और न गोश्त खाऊं।"

सारा वर्ष ही उनका मन खिन्न रहा और भोजन भी ठीक नहीं था। फिर भी १८५४ में नौ अगस्त को, उनकी सर्वोत्तम

कृति "वॉल्डन और लाइफ इन वुड्स" का प्रकाशन हो गया। इस पुस्तक के छप जाने के बाद, जिसके लिए पुराने प्रकाशकों ने इतना हीला-हवाला किया था, पहली पुस्तक की असफलता से उत्पन्न कटुता बहुत कुछ कम हो गई। वॉल्डन के लिए उन्हें दूसरे प्रकाशक मिल गए थे—काम में तत्पर नया फर्म "टिकनर एण्ड फील्ड्स।"

वाँल्डेन झील के किनारे तो वह १८४५ से १८४६ तक ही रहे थे, पर पुस्तक में १८३८ से १८५४ तक की रोजनामचे की सामग्री का उपयोग किया गया था।

यह पुस्तक एक ऐसे व्यक्ति के सोलह वर्ष के बौद्धिक और मानसिक विकास का रिकार्ड है जो संसार का और उसमें अपनी स्थिति का, सच्चा मूल्यांकन करने के निरन्तर प्रयत्न में लगा हुआ हो। उनका उद्देश्य बहुत गम्भीर है, पर उसका विस्तार वन-जीवन पर लिखे गए मनोरंजक और हल्के लेखों द्वारा किया गया है। अब वह सीख गए थे कि अपना जीवन-दर्शन मनोरंजक कहानियों के द्वारा पाठकों के आगे कैसे प्रस्तुत करना चाहिए। अपने कटु और लम्बे अनुभवों द्वारा, उन्होंने उन दोनों को एक साथ एक ही साँचे में ढालने का शिल्प सीख लिया था।

: ८ :

"यदि तुम्हारे मन में विषाद है तो कीचड़ में उगते हुए दुर्गन्धयुक्त पौधों को जाकर देखो जो वीरता से नए वर्ष का सामना कर रहे हैं......क्या अपनी दुर्गन्ध से हताश होकर वह मरने के लिए तैयार हो गए हैं ?"

—थोरो की डायरी से

थोरो के सहयोगियों के लिए, जिन्हें वह व्यंग्य से "न्यू इंग्लैण्ड के निवासी कहलाने वाले" कहते थे, "वाल्डन" एक सन्देश था। सन्देश स्पष्ट था। उन्नीसवीं सदी में, औद्योगीकरण के कारण, जीवन अधिक उलझता हुआ, अधिक क्षुद्र और एक अनुताप-सा बनता जा रहा था। थोरो ने कहा था "हरक्यूलिस[1] की मेहनत भी मेरे पड़ोसियों की मेहनत के आगे कुछ नहीं है। वे तो गिनती में कुल बारह थे, और उनका एक लक्ष्य भी था, पर इन लोगों को तो मैंने किसी राक्षस को पकड़ते या मारते नहीं देखा। उनकी राय में पड़ोसियों का निरन्तर परिश्रम और चिन्ता का जीवन बिल्कुल आनन्द-विहीन, क्षुद्र और गतिहीन था। सदाचारी कहलाने वालों का जीवन भी बिल्कुल फीका था।"

आयलैण्ड से आए अपने एक मेहनती और गरीब पड़ोसी को उन्होंने सलाह दी और लिखा "मैंने उसको अपने अनुभव बताए और कहा कि मैं भी उसका निकट पड़ोसी हूँ, यहाँ पर

१. हरक्यूलिस—यूनान और रोम की पौराणिक कथाओं का वीर नायक जो अपनी शारीरिक शक्ति के लिए विख्यात था।

मछली पकड़ने आता हूँ, आवारा लगता हूँ, पर मेरी रोज़ी का जरिया भी वही है जो उसका। मैंने उसको बताया कि जिस घर में मैं रहता हूँ वह छोटा, हल्का और साफ सुथरा है, जिसकी कुल लागत उसके टूटे-फूटे घर के साल भर के कुल किराए से कुछ कम ही होगी। अगर वह चाहे तो, एक-दो महीने में खुद ही अपने लिए वैसा घर बना सकता है। मैं चाय, काफी, मक्खन, दूध, ताजा गोश्त आदि किसी चीज़ का प्रयोग नहीं करता। इसलिए उन्हें पाने की खातिर मुझे काम भी नहीं करना पड़ता। मैं कड़ी मेहनत नहीं करता, इसलिए ज्यादा खाने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती। फिर भी वह पड़ोसी अमेरिका आने में अपना लाभ समझता था, क्योंकि यहाँ हर रोज चाय, काफी और गोश्त मिल सकता था। पर सच्चा अमेरिका तो वह देश है जहाँ ऐसे जीवन के लिए पूरी आजादी है, जिसमें इन चीज़ों की आवश्यकता नहीं पड़ती, और जहाँ इन चीज़ों के इस्तेमाल द्वारा परोक्ष रूप से, गुलामी और युद्ध को घोषित करने पर सरकार हमें वाध्य नहीं करती।"

थोरो का सन्देश ऐसे लोगों के लिए नहीं था जिनका जीवन सन्तुष्ट और परिपूर्ण है। वह तो उनके लिए था जो उनकी राय में, वेकार के कामों में अपनी शक्ति का अपव्यय करते थे, जिनका जीवन अपूर्णता और कुण्ठा की दुःख भरी कहानी थी। काम से वेहोश, और अपने मृत वातावरण की ओर से अन्धे, जो एक मौन नैराश्य का जीवन जी रहे थे। संसार की क्षुद्रता की ओर से थोरो ने मुँह फेर लिया था। उनकी आकांक्षा थी, "कानकार्ड, मैसाचुसेट्स और अमेरिका को अपने दिमाग से निकाल कर, कम-से-कम रोज़ कुछ देर के लिए स्वस्थचित्त हो सकूँ।" इसी कारण मैं इस निर्जन जगह पर आ जाता हूँ, जहाँ जीवन की समस्याएँ सुलझ जाती हैं। सुलझे हुए, सीधे-

सादे जीवन द्वारा ही एकाग्रता और व्यवस्था सम्भव हो सकती है। धन के लिए लोगों की भूख पर आश्चर्य होता था उन्हें। एक बार आयरलैंड से आए एक आदमी ने उन्हें खेत में बैठे कुछ लिखते देखा तो उसने यह समझ लिया कि वह अपनी मजदूरी का हिसाब जोड़ रहे हैं। अपने जीवन को, जैसा वह चाहते थे वैसा बनाने का अवकाश पाने के लिए, वह तटस्थ रह कर देखते कि उन्नीसवीं शताब्दी किस तरह से अपनी "प्रत्यक्ष नियति" की ओर बढ़ती जा रही है—जैसा कि प्रगति के समर्थक कहा करते थे।

"इस राष्ट्र के सारे उद्यम, जिनकी दिशा ऊपर की ओर नहीं, बल्कि पश्चिम की ओर यानी आरेगान, केलिफोर्निया और जापान की ओर है, मेरे लिए कोई दिलचस्पी नहीं रखते। न तो उसमें विचारों का सौंदर्य है और न भावनाओं का स्पन्दन ......उसमें ऐसा कुछ है ही नहीं, जिसके लिए अपना जीवन अर्पण किया जा सके......अपने दस्ताने तक नहीं भेंट किए जा सकते......वह भले ही अपने "प्रत्यक्ष नियति" की ओर जाएँ, पर वह मेरी नियति नहीं है।"

थोरो की दलीलों की शक्ति थी, सत्य पर उनका आधारित होना। दूसरों के आगे रखने से पहले खुद उन्हें अजमा लेते थे। वह लोगों के जीवन को सादा और सुगम बनाने की ऐसी विधि ही बताते थे जिसे वह खुद सफलता के साथ प्रयोग कर चुके थे।

कर्म और अकर्म के हिन्दू सिद्धान्त से उन्होंने एक व्यवहारोचित धर्म खोज लिया था—कि हर एक व्यक्ति को अपना मार्ग खोजना और उस पर सच्चाई से चलना चाहिए, चाहे उसके संगी-साथी उसे बेकार समझें। पर ऐसे मार्ग पर चलने के लिए आवश्यकता थी स्वच्छन्द मन की, और वह कितना विरल है। "आजाद विचारों वाला व्यक्ति विरला ही दीखता है। हम बने

हुए नियमों के अनुसार रहते हैं। कुछ रोगी लोग चारपाई से बँधे होते हैं, तो कुछ दुनिया से बंधे हैं। मेरा पड़ोसी अक्लमन्द आदमी है। मैं कभी-कभी उसको जंगल में ले जाता हूँ और उससे कहता हूँ कि अपने दिमाग़ से मनुष्य के बनाए हुए सारे विश्वासों और नियमों को निकाल दे, और एक नयी दृष्टि से देखे। पर वह ऐसा कर नहीं पाता। वह रूढ़ियों से, और अपनी सनक से चिपका रखना चाहता है। उसका ख्याल है कि यह सरकार, यह कॉलेज, समाचार-पत्र, सब शाश्वत हैं—चिरकाल के लिए हैं.........।"

समाचार-पत्रों की कायरता से थोरो तंग आ गये थे। "एक नया पत्र यह दावा करता था कि वह उदार नहीं साहसी भी है, पर उसमें इतनी हिम्मत भीनहीं है कि जीवन, मृत्यु और अच्छी पुस्तकें जैसे विषयों पर एक बच्चे के विचार छाप सके। इसके लिए, अन्य डरपोक पत्रों की तरह उसे भी 'प्रभुओं' की अनुमति चाहिए। यदि यह पत्र ईसामसीह और डाक्टरों के मतभेद के समय होता, तो वह केवल डाक्टरों की राय छापता, ईसा की नहीं।"

प्रौढ़ अवस्था में, समाज-सुधार में लिप्त उस समय के थोरो की कल्पना करना आसान है, जब वह इन समस्याओं में उलझे हुए थे कि मनुष्य का जीवन कैसा हो और एक ईमानदार व्यक्ति का एक अन्यायपूर्ण सरकार के साथ कैसा सम्बन्ध हो। पर उनमें प्रकृतिवादी थोरो बराबर मौजूद था। नैतिकता सम्बन्धी उनके भाषण और लेख स्मरण रखने योग्य होते हुए भी, उनका बहुत थोड़ा समय लेते थे। बाद के दिनों की उनकी डायरी से पता चलता है कि दिन का कितना अधिक भाग प्रकृति के अवलोकन और उसका रिकार्ड लिखने में लगता था। कानकार्ड की सैर उन्होंने जारी रखी, और एकाध बार तो

उसके आगे भी घूम आए। १८५३ और १८५७ में मेन के जंगलों में, १८५७ में फॉल माउण्टेन, और उसी वर्ष दुबारा कानकार्ड गए। उन्होंने १८५८ में दो बार पहाड़ों की चढ़ाई की, ब्लेक के साथ दो रातों के लिए "मेनाड्नोक" में पड़ाव डाला; होर के साथ "व्हाइट माउण्टेन" की सैर की; १८६० में एलेरी चैनिंग के साथ अंतिम बार बाहर पड़ाव डालने गए, और पांच रातें मेनाड्नोक में बितायीं।

थोरो के जमाने में प्राणिशास्त्र अभी तक जीवों की पहचान और उनके वर्गीकरण की अवस्था में ही था। नमूनों का संग्रह ही प्राणिशास्त्रियों का मुख्य काम था। जीवों के आचरण के अध्ययन सम्बन्धी आधुनिक विचार ने उसे खत्म नहीं किया था। कुछ वैज्ञानिकों के अनुरोध पर थोरो ने वनस्पति के कुछ नमूने जमा तो किए, पर उनसे खुश नहीं थे। उसके नैतिक पक्ष के बारे में लिखते हैं, "अभी-अभी, विज्ञान की खातिर, मैंने एक खूबसूरत पौधे की हत्या की है। इसके लिए मैं अपने को क्षमा नहीं कर पा रहा हूं। ऐसे काम विज्ञान की चाहे जितनी सेवा करें, मेरे कवित्वमय भावों के अनुकूल नहीं हैं...मेरी कामना है कि मैं प्रकृति के बीच निर्मल और निर्दोष मन से विचार करूं। कोई भी तर्क मेरे मन को समझा नहीं पा रहा।...आज का मेरा पूरा दिन खराब हो गया, और मेरा आत्म-सम्मान भाव भी कम हो गया। मैं अपने को कुछ-कुछ हत्यारे जैसा महसूस कर रहा हूं......।"

कुछ मछलियों और रेंगने वाले कुछ जीवों को मारने पर अपने को मजबूर करने के बाद, उनके लिए किसी जीव को मारना और भी कठिन हो गया। उन्होंने फिर कभी एक चिड़िया भी नहीं मारी। बोस्टन के एक पक्षीशास्त्री से उन्होंने कहा था, "मैं हाथ में एक मरी हुई चिड़िया को पकड़ने के बजाय, अपने मनों में जीवित पक्षी को रखना ज्यादा पसन्द करूंगा।" पक्षियों की

पहचानना कठिन काम था और उनके पास एक रद्दी-सी दूरबीन के अलावा, दूर देखने के लिए और कोई यन्त्र नहीं था। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, वनस्पतिशास्त्र और स्थानीय पौधों के संग्रह में उनकी दिलचस्पी बढ़ती गई। प्रकृतिशास्त्री की हैसियत से उन्होंने काफी नाम भी कमाया, फिर भी वैज्ञानिकों की संगति में वह प्रसन्न नहीं रहते थे। उन्होंने देखा कि विशेषज्ञ बनने की कितनी ज्यादा कोशिश वह लोग करते हैं पर जितना ही निरपेक्ष और तटस्थ रहने की कोशिश करते हैं, उनकी आत्मा उतनी ही दीन और रिक्त होती जाती है। मनुष्य कितना प्राणवान् है, यही महत्त्व रखता है। प्रकृति को सूची और टेकनीकी नामों में उतारने में कितना कुशल है, यह नहीं। विशेषज्ञों की वैज्ञानिक भाषा को वह निरर्थक और बेकार बताते थे। वह कहते थे, "कोई भी जीवित वस्तु जनसाधारण की भाषा में अच्छी तरह समझाई जा सकती है।"

थोरो की सबसे बड़ी अभिलाषा थी कि सम्पूर्ण प्रकृति को मन में ग्रहण कर सकें। मनुष्य के प्राकृतिक वातावरण की तह तक पहुँचना चाहते थे ताकि वह जीवन का अर्थ समझ सकें। और उनका विश्वास था कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रकृति से व्यक्तिगत सम्पर्क होना चाहिए। इस सच्चे सम्पर्क के बाद ही प्रकृति कुछ सिखा सकेगी। वैज्ञानिक लोग ज्ञान का भण्डार बनाते जाएँ फिर भी वे नहीं बता सकेंगे जो हम जीवन के बारे में जानना चाहते हैं। यानी, उसे जीना चाहिए—पूर्णता से, उल्लास के साथ, और "उसके अन्त के प्रति पूर्ण रूप से सजग।" वैज्ञानिकों की उपमा वह अँधेरे जंगल में उगने वाले उन पौधों से देते थे जिनमें केवल पत्तियाँ लगती हैं, फूल नहीं। प्रकृति के सहवास से थोरो एक अधिक गहरे जीवन का मार्ग-दर्शन चाहते थे। उनका उद्देश्य था कि जो कुछ सीखे, वह जीवित वस्तुओं से

उनके स्वाभाविक वातावरण में अन्तर्प्रेरणा द्वारा, उनके अंग-अंग को चीर-फाड़ कर नहीं।"

मृत्यु के दो वर्ष पहले उन्होंने लिखा था, "कुछ लोग बाज को अपने ऊपर दो-तीन सौ फीट की ऊँचाई पर उड़ते हुए देख कर उसकी खूबसूरती पर मुग्ध हो जाते हैं, और उसे अपने हाथों में लेकर नजदीक से देखना चाहते हैं। वह नहीं समझते कि उतनी दूर से उसे जितनी अच्छी तरह से देख सकते हैं, वैसे फिर कभी कहीं नहीं देख पाएँगे। बन्दी गरुड़पक्षी आँगन में गूँजती हुई चीख के अलावा भला और क्या है। इस हालत में उसे देखकर उसके बारे में मेरी जानकारी कोई बढ़ तो जाती नहीं। मैं यह तो नहीं जानना चाहता कि उसके आँतों की लम्बाई क्या है।"

पक्षियों को देखने या पौधों को जमा करने निकलते तो गाँव के बाहर, बँधी हुई मुट्ठियों को झुलाते चलते या नाव खेते—दृढ़-निश्चय की मूर्ति के समान।

हर एक नई सैर के लिए उनका उत्साह दुगुना हो जाता था, मानो उनको और प्रकृति को साथ-साथ आजन्म रह कर कोई काम पूरा करना था। थोरो कानकार्ड की देवदार से छाई सड़कों को छोड़ कर खेतों में गायब हो गए तो उनके साथ रहने वाले उन्हें फिजूल का आदमी समझने लगे। पर असल में वह जंगलों, नदियों, दलदलों और कीचड़ में उगी हुई झाड़ियों, सुनसान चट्टानों के साथ एकरूप हो रहे थे। ऐसी जगह उन्हें मिलते भी केवल वही लोग थे जो बस्ती के बिल्कुल आखिरी छोर पर, कुछ-कुछ आदिवासियों की तरह रहते थे।

इंडियन या उन लोगों की तरह रहने वालों के प्रति वह बहुत आकर्षित होते थे। कानकार्ड के कुछ किसानों के गेहूँ-मोहरों में उन्होंने ऐसे चिन्ह देखे जिनसे जान पड़ता था कि वह

उसी नस्ल के होंगे। पर कभी कोई असली इंडियन भी अकेला दीख जाता जो चीड़ के जंगल में (मैसाचुसेट्स की आखिरी आदिमजातियों में से एक) उसी तरह खुश और नियंत्रणों से मुक्त लगता था। या कभी-कभी किसी गोरे आदमी से विवाह कर लेने वाली कोई नीग्रो-स्त्री दीख जाती जो अकेली, सबसे अलग रहती और बच्चे जिसे चिढ़ाते रहते। उस धरती की वह सच्ची पुत्री अपनी लुप्त जाति का आखिरी काम करती होती...। उस धरती के अभिजात्य कुल की बेटी, जो तत्वों में फिर से घुल-मिल न सकी हो। उन इंडियन शिकारियों के बारे में लिखना उन्हें अच्छा लगता था जो मेन के जंगलों में मिले थे और जो उनके साथ-साथ रहे थे। उनके द्वारा किए गए सभी वर्णनों में मेन और माउण्ट कटाहिन की यात्रा का वृतान्त सर्वोत्तम है। इंडियन लोगों की याद दिलाए जाने के लिए अब उन्हें कानकॉर्ड की, तीरों के फलों से भरी, भूमि को खुरचने की ज़रूरत नहीं थी।

मेन में रेड-इंडियन लोग ख़ुद ही बसते थे। वह झोपड़ियों वाले अपनी गाँव में रहते, डोंगियाँ चलाते, आदिम गीत गाते, आदिम तरीके से ही मछली पकड़ते या शिकार करते, पुराने जंगली नस्ल के कुत्तों से अपनी कुटिया की रखवाली करवाते थे। सुदूर जंगलों में, जहाँ पहले कभी कोई गया न हो, अंदर तक घंसते चले जाते। उस वियावान जंगल में जहाँ अब तक किसी ने पैर नहीं रखा था, जीवित, गिरे हुए, और नष्ट होते हुए पेड़ों की भूल-भुलैया में, जंगली रीछ और भेड़िए घूमा करते थे। वह एक शिविर से दूसरे तक, सनोवर, शिडार और हिमगर्जन के जंगलों में होते हुए पुराने जल-मार्ग का अनुसरण करते।

वहाँ बसने वालों की चौकियों पर ठहरते, झरनों के चारों ओर बड़ी मेहनत से बड़ी देर तक नाव खेते, चाँदनी रात में मीलों तक

नाव चलाकर ले जाते, आग के सहारे तारों की छाया में घूमते, दिन को समुद्री बाजों और बिना पंख वाले गरुड़ पक्षियों को निहारते, और रात को भेड़ियों और उल्लुओं का चिल्लाना, सुनते। उनके अन्दर के शिकारी ने जोर मारा तो उन्होंने ऐसी बड़ी सामन और शफरी मछलियाँ पकड़ीं जैसी उन्होंने पहले कभी देखी भी नहीं थीं। यह अनुभव इतना विचित्र था। मछली इतनी खूबसूरत थी, सारे दृश्य का सौन्दर्य इतना स्वप्निल था, कि देवदारु की लकड़ी की बनी, अपनी चारपाई पर पड़े-पड़े वह सोचते थे कि जो कुछ देख रहे हैं वह स्वप्न या कहानी तो नहीं है? उन्होंने लिखा भी है कि "यह जानने के लिए यह सब सच है या नहीं मैं पौ फटने के पहले उठा जबकि मेरे साथी अभी सो ही रहे थे। चाँदनी में कटाइन की रेखाएँ स्पष्ट दीख रही थी। उस सन्नाटे को केवल झरने की कल्‌कल् ध्वनि भंग कर रही थी। नदी के किनारे खड़े होकर मैंने एक बार फिर अपनी बंसी पानी में डाली, और अब मुझे विश्वास हो गया कि वह सपना या कहानी सच्ची है। रुपहली मछली, उड़न-मछली की तरह, बड़ी तेजी से हवा में कटाइन के किनारे की भूमि को अंकित करती हुई, चली जाती है।"

आखिरकार वह ऐसी जगह पर पहुँच गए जिससे दलवालों से कोई भी परिचित नहीं था। नदी को छोड़ कर वह लोग ऊबड़-खाबड़ धरती को पार करते हुए सीधे पहाड़ों की ओर चले। वहाँ पहुँच कर थोरो को अगुआ बनना पड़ा क्योंकि उनमें से वही सबसे पुराने पर्वतारोही थे। कुतुबनुमे को लिए हुए वह अपने दल को सीधे बलूत, भोज और सनोबर के पेड़ों से भरे घने जंगल में ले गये। शाम के झुटपुटे में पहाड़ों के एक छोर के ऊँचे-नीचे भाग को पहुँचने तक वह रुके नहीं। दूसरे दिन थोरो अकेले ही बादलों से ढकी उन अकेली चोटी को देखने गए, "मैं

अकेला ही विशाल चट्टानों पर चढ़ा जो बादलों की ओर एक या दो मील ऊँचा खड़ा है। वैसे तो दिन साफ था, पर चोटी कोहासे से ढकी थी। पहाड़ ऐसा लगता था मानो अलग-अलग चट्टानों का एक समुदाय। मानो किसी समय चट्टानों की वर्षा हुई हो, और जिस तरह वे पहाड के इधर-उधर गिर गए थे, वैसे ही पड़े रह गए हों। एक दूसरे के ऊपर झुके हुए, मानो वह कहीं भी आराम से नहीं थे—यह चट्टानी पत्थर जिनके बीच-बीच में खाली जगह थी, पर मिट्टी या कोई चिकनी जगह नहीं। मानो किसी ग्रह को बनाने का सामान किसी अनजान पापान-खानि से गिर गया हो, और प्रकृति का विस्तृत रसायन ज्ञान उसे अभी चटपट धरती के मुस्कराते हुए हरे-भरे मैदान या घाटियों में बदल देगा।"

मेन की अपनी पहली यात्रा के बाद थोरो वॉल्डन में अपनी कुटिया को वापिस चले गए। वहाँ उन्होंने अपनी यात्रा का वृत्तान्त लिखा जो होरेस ग्रीले ने छपवा दिया था। उसके बाद के वर्षों में उन्होंने दो बार मेन की यात्रा की, निराले जंगल में उन पुराने जीवों, उत्तरी अमेरिकी हिरण और इंडियन का पता लगाने। उन्हें एक इंडियन पद-प्रदर्शक, जो पोलिस था, मिला जिससे वह बहुत प्रभावित हुए। उसमें वह सब गुण थे जो एक इंडियन में होने चाहिएँ। वह चुप्पा, जोशीला, चालाक, शिकार में, रास्ता खोजने और डोंगी चलाने में कुशल था। इंडियन लोगों की विद्याएँ उसे खूब आती थीं और जंगली जानवरों की आदतें समझता था। फिर भी वह एक घरेलू किस्म का और सभ्य इंडियन था जिसे थोरो ने इसलिए स्वीकार किया था क्योंकि वह और सबसे अच्छा ही था। सिवा उस निपट जंगली और एकाकी आदिम पुरुष से जिसकी मूर्ति उन्होंने अपने मन में बिठा ली थी। "तने की बनी डोंगी में जो

सनोवर के जड़ के रेशों से सिली हुई थी, और एक तरह की लकड़ी के चप्पुओं के सहारे वह अपने रास्ते चलता गया। खोखले तने की इस डोंगी और छोटी नाव के बीच के बीते हुए युग ने मानो उसको मेरे लिए धुंधला और कठिनाई से दीखने वाला बना दिया है। वह लकड़ियों का घर नहीं, खाल की झोंपड़ी बनाता है। गर्म रोटी और मीठे केक नहीं, छछूंदर, हिरण, और भालू का गोश्त खाता है। मिनिनोकेट पर चढ़ कर वह मेरी नज़र से ओझल हो गया—लाल चेहरे वाला वह आदमी जिधर उसका भाग्य ले जाता है, चलता जाता है।

लिखने की कला के बारे में भी थोरो को बहुत कुछ कहना था। "जिस प्रकार एक निशानेबाज़ बड़े आराम, पर बड़ी सावधानी से अपनी पिस्तौल साधता है," उसी प्रकार वह अपने सीधे स्पष्ट शब्दों को चुनते थे। एक बढ़िया वाक्य लिखने के लिए जो परिश्रम करना पड़ता था वह उसे उचित ही मानते थे, यद्यपि उन्हें इससे ज्यादा कठिन काम और कोई नहीं लगता था। लिखने में चाहे जितना श्रम करना पड़े, लिखी हुई चीज़ में उसकी कोई झलक नहीं होनी चाहिए। जिस लेखक के शब्दों का स्रोत उसके अनुभवों में नहीं है, उसका लिखना ही बेकार है। "सच्ची भावना के बिना उसके शब्द चेतना-शून्य होंगे।" चुने हुए विषय पर लिखना फ़िज़ूल है, जब वह हमारे अन्दर प्रेरणा की लौ जगा दे हमें तभी लिखना चाहिए। सफल होने वाले प्रत्येक प्रयास के पीछे संयोजना और स्फूर्ति देने वाली प्रेम की शक्ति होनी चाहिए।" वह अपने किसान पड़ोसी जार्ज मिनोट की वर्णन शक्ति की सराहना करते थे। मिनोट पुरानी अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करता था। पहले कभी सुने हुए न होने पर भी, शब्द-कोष में उनका मिलना निश्चित था। यदि कोई साधारण आदमी बोस्टन कौमन की बात कहता है तो मैं

उसे केवल एक फीके रंग के जलाशय के रूप में ही देख सकता हूँ जिसमें न कोई परछाइयाँ पड़ती हैं, और न कोई विचित्रता है। पर यदि मिनोट उसका वर्णन करता है तो तुरन्त मेरी आँखों के आगे उसका हरा जल और उस पर पड़ती पहाड़ की परछाइयाँ आ जाती हैं, क्योंकि वह वहाँ रह चुका है। जिन जंगलों से वह गुजरा है उसके पत्तों की मरमराहट मैं सुन सकता हूँ। वह शायद मिनोट की ही बात सोच रहे थे जब उन्होंने कहा था कि वाक्य को सीधे निशाने पर पहुँचाना चाहिए, मानो लेखक के हाथों में कोई फाल हो। ओजपूर्ण वाक्य को पूरे मन से गढ़ना चाहिए......उसकी योजना और भाव को लेखक के मन का साथ देना चाहिए। अभिव्यक्ति तो सम्पूर्ण व्यक्तित्व का काम है। "वॉल्डन लिखने के वर्षों पहले थोरो के मन में स्पष्ट था कि वह कैसी शैली चाहते हैं......ऐसे वाक्य जिनके प्रत्यक्ष अर्थ से अधिक हो उनका परोक्ष अर्थ, जो वातावरण बनाने वाले हों, जो पुरानी धारणा को दोहराते नहीं, बल्कि नई बनाते हैं—जिनके कई अर्थ, कई उपयोग हैं, जो रोम के पुराने जलमार्ग की तरह शाश्वत् भी हैं। ऐसे वाक्यों की रचना ही लिखने की कला है। वह वाक्य अमूल्य हैं जिनके लिए इतने ग्रन्थ, इतना अध्ययन लगा, गोल चिकने पत्थरों की तरह जिनकी आड़ी-सीधी कतारें लगी हैं। जिसमें नए वाक्यों के बीज हैं......पुराने की पुनरावृत्ति नहीं, नए का सृजन है...... जिसके लिए इन्सान अपने महल और जमीन अर्पित कर सकता है।" थोरो के लिए शैली ही मनुष्य है। प्रत्येक वाक्य लम्बे परीक्षण का परिणाम है। "शीर्षक से लेकर अन्तिम शब्द तक लेखक का चरित्र पढ़ा जा सकता है......उस प्रूफ का भूल-सुधार वह कभी नहीं कर सकता।"

× × ×

प्रकृतिशास्त्री, सर्वेक्षक और प्रकृति में गहरी दिलचस्पी लेने वाले की हैसियत से, कानकार्ड के मुख्य अन्वेषक थोरो, अपने पड़ोसियों को उनके ही फार्म के बारे में बताया करते थे। बहुत से लोग, जिनके लिए पहले वह केवल उनके खेतों में अनधिकार प्रवेश करने वाले आवारा थे, अन्त में उनके प्रशंसक और मित्र बन गए। परिश्रमी और कल्पना-विहीन लोग जो न्यू इंग्लैण्ड की रीढ़ थे, उनके इस प्रकार आने-जाने में कोई उद्देश्य देखने लगे। वह उनके पास बत्तख और बाज़ की पहचान के लिए आते, उन्हें ले जाकर नए-नए पौधे दिखाते, और थोरो को इसकी पूरी अनुमति देते कि वह उनसे स्थानीय सूचना और ज्ञान की बातें खोद-खोद कर निकालें। जैसा कि उनमें से एक ने कहा था, "वह खरे थे और सबसे मीठा व्यवहार करने की कोशिश करते थे। उन्हें जब भी मैं अपने खेत से गुजरते देखता, उनसे जाकर बातचीत करना चाहता। वह जितनी देर आप चाहें, बातें करते और नई-नई बातें बताते थे।" उन देहातियों को यह जान कर कितना आश्चर्य होता कि थोरो उन्हें अपने सुसभ्य परिचितों से ज्यादा अच्छा समझते हैं, और उनके छोटे-छोटे किस्सों को अपनी डायरी में नोट करते हैं।

थोरो के रोजनामचे क्या हैं, एक खान है जिसकी खोज बड़ी मेहनत से की गई है और हो सकता है, इतने परिश्रम से उसमें बैठने वाले को अब भी वह एक दो पुस्तकों की सामग्री से पुरस्कृत कर सके। फालिस एच ऐलेन की पुस्तक "मेन आफ कानकार्ड" से ज्यादा दिलचस्प और मनोरंजक और कोई पुस्तक नहीं हो सकती, जिसमें थोरो के पड़ोसियों के बारे में कही गयी उनकी बातों का अच्छा संकलन है। यह पुस्तक इस बात की पुष्टि करती है कि थोरो को अपने आस-पास रहने

वालों में बहुत दिलचस्पी थी और वह बुद्धिजीवियों, खिलाड़ियों, आवारा लोगों, किसानों, लकड़हारों, सब से एक-सा स्नेह करते थे। बूढ़े ब्रुक क्लर्क से सामना हो जाता तो उन्हें बहुत ज्यादा मजा आता। एक बार हाथ में कुल्हाड़ी लिए वह "नंगे पैरों में ठण्ड लगने के कारण तेजी से भागा जा रहा था, अपने जूते के अन्दर एक भरी हुइ राबिन चिड़िया और कुछ सेब रखे। उसका कोट तार-तार होकर उसकी कमीज पर भूल रहा था, और वैसे ही उसकी फटी पतलून उसकी खुली टाँगों पर। जान पड़ता है तेज हवा वाली इस दोपहर से वह छोटे बालकों की तरह यह भेद ले रहा था कि क्या कुछ उसके हाथ लग सकता है। इस खुशमिज़ाज बूढ़े को देखकर, जिन्दगी को जो इतनी कमजोरी से थामे हुए है, मुझे बहुत खुशी हुई। वह झुककर दोहरा हो गया था और अपने जीवन की साँझ का मजा ले रहा था......।"

वॉल्डन जंगल का लकड़हारा एलेक थोरियन भद्दे खुरदुरे साँचे में ढला हुआ जान पड़ता था......मोटा और सुस्त, पर चलने का ढंग आकर्षक। उसकी गर्दन मोटी और धूप में साँवली पड़ गयी थी......बाल गहरे रंग के और घने थे, नीली आँखें फीकी और उनींदी। वह पेड़ों को काट कर तने को धरती के समतल कर देता, उसका विश्वास था इससे नए पौधे ज्यादा स्वस्थ होंगे। मुझे वह दिलचस्प लगा क्योंकि वह इतना चुप, अकेला और सन्तुष्ट था। वह हँसोड़ प्रकृति का था और तृप्ति उसकी आँखों में झलकती थी। उसकी हँसी-खुशी में किसी किस्म की मिलावट या बनावट नहीं थी। प्रकृति ने उसे गढ़ते समय एक बलिष्ठ शरीर और उसी के अनुरूप सन्तुष्ट मन भी दिया था, और हर ओर से उसमें श्रद्धा और विश्वास इस प्रकार भर दिया कि वह सत्तर वर्ष के अपने जीवन भर में एक

बच्चा ही बना रहे। मैंने सुना है कि एक प्रतिष्ठित बुद्धिमान् और सुधारवादी सज्जन ने उससे पूछा कि क्या वह संसार में कोई परिवर्तन नहीं चाहता? उसने ताज्जुब से हँसकर, और बिना यह जाने हुए कि यह सवाल पहले भी किसी से पूछा जा चुका है, कहा……"नहीं तो, मुझे तो यह बहुत अच्छा लगता है।"

"रयबेन राइस" निश्चिन्तता और विश्वास के साथ काम करने और उसका मीठा फल चखने में विश्वास करता था। वह आत्म-निर्भर और किफायतशार आदमी था। जॉन मेल्विन के बारे में, जो अक्सर बन्दूक और शिकारी कुत्ते को साथ लिए घूमता था, थोरो ने लिखा है, "मेल्विन अपनी माँ को बहुत परेशान करता है, पर मुझे तो वह बहुत अच्छा लगता है……पहाड़ी जंगली सेब के तीखे स्वाद सा। वह मेरी उम्र का ही है और मेरा पड़ोसी है। वह एक जाति का है और मैं दूसरी, फिर भी हममें लड़ाई नहीं छिड़ी रहती।" आवारा बिल व्हेलर जो अनाज के कोठारे में सोता था, और अकेला था, काम-धाम कुछ नहीं करता था, रिश्तेदार भी उसके कोई नहीं थे… किसी तरह की आकांक्षा नहीं थी……अपने बारे में लोगों की अच्छी राय के भरोसे नहीं रहता था। क्या वह भी उसी निष्पक्ष, निर्लिप्त दृष्टि से जीवन को नहीं देखता, जैसे एक शेक बाग के माली की ओर? "और फिर जॉन गुडविन भी तो था, वह भेंगा आदमी जो मछली पकड़ कर, लकड़ियाँ चुन कर और कभी-कभी मजदूरी करके किसी तरह जिन्दगी काट रहा था।" उसकी जिन्दगी मेहनत की थी, फिर भी वह खुश दीखता था। थोरो के मन में कानकार्ड के मछलीमारों के लिए बड़ी सराहना थी, और वह पर्च मछलियों, नन्हें बगुलों और कछुओं की कहानियों से कभी नहीं ऊबते थे जो गॉरफील्ड, मार्टिन फ्लैट और हेन्स से उन्होंने सुनी थीं। वह उन सब को दार्शनिक मानते

थे। उन्होंने लिखा था, "मैं अपने इन सीधे-सादे, अल्पभाषी पड़ोसियों को कितना ज्यादा प्यार करता हूँ। वह अपने काम से काम रखते हैं····· मेरी जिन्दगी में कोई दखल नहीं देते···। मैं कृतज्ञ हूँ कि वे इस, होमर, ईसा और शेक्सपियर जैसे लोग संसार में हो चुके हैं, पर उतना ही कृतज्ञ हूँ मिनोट राइस, मेल्विन, गुडविन यहाँ तक कि पफर के लिए भी।"

कानकार्ड के एक किसान को उन्होंने बहुत संवेदनशील और बुद्धिमान पाया। उस किसान के पास व्यावहारिक मामलों में सलाह लेने एमर्सन भी जाया करते थे, और हाथार्न भी उसके स्वस्थ प्राकृतिक ज्ञान की प्रशंसा करते थे। एडमण्ड होजमार को किसी भी विषय पर खुले और स्पष्ट दिमाग से बहस करना अच्छा लगता था, और थोरो के साथ उनकी बनती भी बहुत थी। थोरो ने उसके बारे में "वॉल्डन" में लिखा था :

"वह लम्बे सर वाला किसान जो दूर जंगलों में होकर, सामाजिक गोष्ठी के लिए आते हैं······और जिस तरह अपने कोठारे वाले खेत में से खाद की ढेर निकालते हैं, उसी तरह गिरजे या सरकार की चर्चा से कोई न कोई नैतिक सिद्धान्त निकाल लेने को तत्पर रहते हैं। हम उस असभ्य और सादे ज़माने की चर्चा किया करते थे जब लोग बड़े अलाव के इर्द-गिर्द बैठा करते थे······सुलझे हुए मन से मौसम का सामना करते हुए······।"

: ६ :

"मैं वनस्पतिशास्त्र सम्बन्धी किसी खास काम में नहीं लगा हुआ हूँ, पर यदि मैं जिन्दा रहा तो प्राकृतिक इतिहास के बारे में मुझे बहुत कुछ बताना होगा।"

—थोरो के एक पत्र से—मार्च १८६२

हाथार्न और थोरो ने कई बार साथ-साथ भ्रमण किया था, और सर्दियों में स्केटिंग भी साथ-साथ की थी। हाथार्न "ओल्ड मैन्स" (उनका निवास स्थान) में थोरो को अक्सर निमन्त्रित करते रहते थे। हेनरी उन्हें उस छोटी नाव को खेना सिखाते थे जो उन्होंने, कानकार्ड और मेरामिक की सैर के समय, जॉन के साथ मिल कर बनाई थी। हाथार्न की डायरी में हेनरी के "भद्दे, गँवारू पर विनम्र शिष्टाचार का उल्लेख है, और थोरो ने अपनी डायरी में हाथार्न को "बच्चों जैसा सरल बताया है।"

१८५४ में, "वॉल्डन" के प्रकाशन के बाद सुसंस्कृत लोगों से थोरो की मित्रता बढ़ती गई। 'वॉल्डन" के पाठकों में एक थे न्यूबेडफोर्ड के "क्वेकर' समाज के सदस्य, डेनियल रिकेट्सन। उन्होंने थोरो को कई बार निमन्त्रित किया और खुद भी कानकार्ड जाते रहते थे।

"क्वेकर" समाज वालों का सादा कठोर जीवन उन्हें बहुत भाया। वह दोनों पक्के मित्र बन गए और बराबर पत्र-व्यवहार

करते रहे। बाद के दिनों में रिकेट्सन थोरो के बारे में बहुत कुछ जान गए थे। उसी पुस्तक की बदौलत थोरो को एक अंग्रेज मित्र भी मिला था—यात्री, लेखक, और दार्शनिक, आँपशायर के टामस कोलमेंडेले। उन्होंने न्यूजीलैण्ड पर एक पुस्तक लिखी थी और थोरो ही की तरह उनकी रुचि के विषयों में पूर्वीय रहस्यवाद और पाश्चात्य विज्ञान भी थे। कानकार्ड आए तो थे वह एमर्सन से मिलने, पर थोरो उनके मन को ज्यादा भा गए। दूसरे ही वर्ष उन्होंने इंग्लैण्ड से हिन्दू दर्शनशास्त्र के चौवीस ग्रंथ भेजे। "वॉल्डन" के प्रकाशन के दूसरे साल फ्रैंकलिन वी० सैनबर्न नाम का युवक अध्यापक कानकार्ड आया। वह एमर्सन का अनुयायी था पर थोरो का भक्त बन गया। उसके लिए हेनरी की माँ जो लोगों को खिलाने-पिलाने के लिए हमेशा तैयार रहती थीं, तीन साल तक हर रोज उसके लिए खाना पकाती रहीं। इस प्रकार सैनबर्न थोरो परिवार का सदस्य बन कर रहने लगा और उनके सुधारवादी "ट्रान्सेण्डेण्टल" विचारों से सहानुभूति रखते हुए उसे थोरो को बहुत निकट से देखने और समझने के दुर्लभ अवसर मिलते रहे। बाद को उसने थोरो की बहुत बढ़िया जीवनी लिखी।

थोरो के प्रथम जीवनी लेखक थे "ट्रान्सेण्डेण्टलवाद" के अति कट्टर अनुयायी एलेरी चैनिंग जो थोरो के अभिन्न साथी भी थे। यद्यपि, जान तो यही पड़ता है कि, थोरो ने अपने मन के गहरे सन्देहों और अविश्वासों के बारे में जो उन्होंने अपनी डायरी में व्यक्त किए हैं, चैनिंग से कभी कुछ नहीं कहा। चैनिंग कवि थे जो "गहरी वर्फ और अंधेरे तूफानों से होकर वॉल्डन झील के किनारे वाली कुटिया में पहुँच जाया करते थे। थोरो ने उस पर चुटकी लेते हुए कहा था, "किसान या सिपाही या दार्शनिक कोई भी चाहे डर कर पीछे हट जाए, पर कवि कभी पीछे नहीं

हटता क्योंकि वह निर्मल प्रेम से प्रेरित होता है।"

वॉल्डन में सर्दी की वह शामें प्रचण्ड हँसी-मजाक और गूढ़ तर्क-वितर्क में बीतती थीं। साथ में दलिया भी परोसी जाती थी। इससे लाभ यह होता था की "दार्शनिक विचार-विमर्श के लिए आवश्यक, स्पष्ट सुलझे हुए विचारों के साथ हँसी का पुट भी मिल जाता था।"

थोरो के बाद के मित्रों में वोरसेस्टर (मैसाचुसेट्स) के हेनरी ब्लैक भी थे: उनकी थोरो से थोड़ी-सी जान-पहचान हारवर्ड में ही हुई थी। ब्लैक ने उनके लेख "डायल" में पढ़े थे, और बहुत बरसों तक बराबर हेनरी उन्हें लम्बे-लम्बे पत्र लिखते रहे। इन पत्रों में लेखक की सर्वोत्तम शैली चाहे न निखरी हो पर उनकी जीवनी लिखने वाले के लिए बहुमूल्य सामग्री अवश्य थी। थोरो ने अपना अंतरंग परिचय इन पत्रों में दिया था। ब्लैक के निमन्त्रण पर ही थोरो प्रति वर्ष वोरसेस्टर में भाषण देते रहे।

"न्यूयार्क ट्रिब्यून" के हनरी ग्रीले अन्त तक थोरो के साहित्यिक एजेण्ट बने रहे, यद्यपि कभी-कभी उन्हें नुकसान उठाना पड़ता था (एक बार उन्होंने पचहत्तर डालर पेशगी दे दिए थे) आलकाट की लड़कियाँ "तरुण महिलाएँ" हो गई थीं, पर परिवार के आर्थिक भार को अपने कन्धों पर उन्होंने कभी भारी नहीं पाया। थोरो को आलकाट की व्यावहारिक बुद्धि पर तो बहुत भरोसा नहीं था पर वह उनके खरे स्वभाव और निर्भीक विचारों के कायल थे।

समझदार थे वह……।"

थोरो के जीवन में महिला मित्रों की कमी नहीं रही। पर वह युवा और सुन्दर स्त्रियों से कतराते थे। उन्होंने स्वयं भी इसे अपने स्वभाव की विचित्रता माना है—"मैं स्वीकार करता हूँ इस मामले में मेरे अन्दर कोई अभाव है। पर मुझे किसी स्त्री से आध घण्टा बात करने में, सिर्फ इसलिए कि उसके नैन-नक्श अच्छे हैं, कोई आनन्द नहीं आता। युवा स्त्रियों की संगति सबसे ज्यादा फिजूल है।" शायद उनके कुँवारे दिनों के असफल प्रणय की निराशा हो इस भावना का कारण हो। शायद अब भी उनके मन में एलेन सिवेल की याद बाकी थी। जो कुछ भी हो, एलेन के बाद उन्होंने स्त्रियों के साथ अपनी मैत्री को केवल मानसिक स्तर पर ही रखा, जैसे लिदियन एमर्सन (यद्यपि आगे चलकर वह संकोची हो गयी थी) और उसकी बहन लूसी जैक्शन ब्राउन के साथ, बीस वर्ष की उमर में, जिसकी खिड़की में से उन्होंने फूलों का गुच्छा और प्रणय गीत लिख कर फेंका था। कानकार्ड की वह तेजस्विनी वृद्धा महिला, एमर्सन की अत्यन्त कुशाग्रबुद्धि मौसी मेरी भी थीं। जिनसे मिलने वह अक्सर जाया करते थे। मौसी मेरी को थोरो के दिमाग की स्फूर्ति और उत्साहपूर्ण बातचीत में रस मिलता था, पर उनके धार्मिक विचारों के प्रति आशंका थी। वह कहती थीं· "जब मैं जवान थी तो नए विचारों का फैशन नहीं था।" फिर भी, थोरो की राय में, विचारों का जो लचीलापन, नए दृष्टिकोण को समझने की जो तत्परता उन्होंने इस अस्सी-वर्षीया वृद्धा में पायी वह कानकार्ड के अपने किसी परिचित युवक में भी नहीं पायी।

और एमर्सन? बाहर से देखने पर तो वह और भी अधिक अभिन्न होते गए। हेनरी बराबर एमर्सन के घर जाते रहे और

वह दोनों पहले से भी ज्यादा, प्रकृति-दर्शन के लिए साथ-साथ जाते। दोपहर की इन सैर के समय वह एक दूसरे की संगति में बहुत प्रसन्न दिखाई देते थे। पर असल में, अन्दर ही अन्दर, वह एक दूसरे से बहुत दूर खिच गए थे। अक्सर शाम को, एमर्सन के घर जो बहस चला करती थी उसमें, दोनों के बीच पड़ी यह दरार, चौड़ी होती गयी। अब सत्य की संयुक्त खोज में लगे हुए बन्धु नहीं थे। अब वह दो विचारक थे, बहस में एक दूसरे के प्रतिस्पर्द्धी, एक दूसरे के हठ से धैर्य खो देने वाले।

अपनी-अपनी डायरी में वह एक दूसरे को दोष देते थे। मई १८५३ में, हेनरी ने लिखा था, "आर० डब्ल्यू० ई० से बातें कीं, या बातें करने की कोशिश की। समय ही नहीं, अपनी विशिष्टता भी खोयी। जहाँ कोई मतभेद है ही नहीं, वहाँ बेकार ही एक विरोध की कल्पना कर के वह हवा से बातें करता रहा। और मैं भी उसका विरोध करने के लिए अपने को कोई और मान कर अपना समय बर्बाद करता रहा।" इन मतभेदों के बारे में एमर्सन ने क्रोध के बजाय ज्यादा सहानुभूति और खेद के साथ लिखा है। १८५६ में उन्होंने लिखा था, "यदि मेरी जान-पहिचान केवल थोरो से ही होती तो मैं यह समझ लेता कि भले आदमियों से सहयोग मिलना असम्भव है। क्या हमें सदा अपनी जीत की ही बात सोचनी चाहिए? सत्य, सुख और आनन्द की नहीं? उनमें विचारों को एक बिन्दु पर केन्द्रित करने की शक्ति अवश्य है, गहराई तक पहुँचने की क्षमता भी है, समझ भी है और न्यायपरता भी, पर उनके अन्तर्मन से संलाप करने और तादात्म्य स्थापित करने के और सारे प्रयोग, जो मैं इतने वर्षों से करता आ रहा हूँ, बेकार हो जाते हैं। वह सदा ही बाल की खाल निकालने वाले किसी विरोधाभास को लेकर हुज्जत करने लगता है—अपना सारा समय, सारा जोश व्यर्थ हो जाता है।"

यह बड़े दुःख की बात है कि इन दोनों मित्रों के बीच यह दरार पड़ गई। विशेषकर उनको बहुत दुःख होता है जो यह पढ़ चुके हैं कि दोनों ने ही मित्रता को कितना श्रेष्ठ बताया था। दोनों ने ही मित्रता के आदर्श को बहुत उच्च माना था। अब उन्हें पता चल गया था कि उस आदर्श की कीमत अपनी निराशा द्वारा चुकानी पड़ी।

१८५६ में आल्काट हेनरी को न्यूयार्क के निकट पर्थ एम्बाय में ले गए। वहाँ वह कोई साझे के काम की योजना बना रहे थे और थोरो से ज़मीन की माप-जोख करवाना चाहते थे। महीने भर तक वह दोनों बाहर रहे। पर हेनरी को साझे की उस योजना की अपेक्षा वहाँ की वनस्पति में अधिक दिलचस्पी थी। एक दिन न्यूयार्क में उन्होंने कवि वाल्ट व्हिटमैन को ढूँढ निकाला, जिनकी बड़ी चर्चा थी। व्हिटमैन के कविता-संग्रह "लीव्स ऑफ ग्रास" के प्रकाशन के बाद उसकी स्पष्ट वासनात्मकता के कारण पुराने ख्याल के लोगों में उसकी काफी निन्दा फैल गई। थोरो भी कुछ-कुछ निष्ठावादी थे, इस कारण वह "लीव्ज आफ ग्रास" को पचा नहीं सके। आल्काट ने सोचा था कि एकान्त के इस प्रेमी को उस नगर-प्रेमी से मिलाने पर बड़ा मज़ा आएगा। पर दोनों लेखक संकोच से मिले, एक दूसरे के प्रति सतर्क। एक दूसरे पर फब्तियाँ कसने से वह नहीं चूके। "ऐरे गैरों" के लिए थोरो की नफरत व्हिटमैन को अच्छी नहीं लगी, और थोरो को व्हिटमैन "विचित्र" लगे। और यह आश्चर्य की बात भी नहीं थी। व्हिटमैन ने उन्हें बताया था कि "बस में ड्राइवर की बगलवाली सीट पर बैठ कर गाड़ियों का शोरगुल सुनते हुए, सारा दिन ब्रॉडवे पर घूमना उन्हें कितना प्रिय लगता है। कभी-कभी वह हाव-भाव के साथ होमर का मज़ाक उड़ाते।" हेनरी को अभी तक कोई ऐसा व्यक्ति नहीं

मिला था जिसकी प्रकृति उनसे इतनी [illegible] तो उन्हें लगा कि व्हिटमैन में एक कच्ची शक्ति है जो उन्हें अप्रिय लगी। पर बाद में उनमें जोश आ गया और उन्होंने "लीव्ज ऑफ ग्रास" को फिर से पढ़ा। इस बार उन्होंने लिखा, "बहुत दिनों के बाद किसी पुस्तक ने मेरा इतना हित किया।" उन्होंने उन कविताओं की मूल भावनाओं की अकृत्रिम सच्चाई को जाना, और उन्हें यह पता चल गया कि उन्हीं की तरह व्हिटमैन भी पवित्र और मूलगत स्रोतों में ही अपनी प्रेरणा खोजते हैं।

१८५६ में न्यूयार्क का जीवन और व्हिटमैन—थोरो के जीवन में एक अन्तराल के रूप में आए—जो उन्हें थोड़े समय के लिए प्रकृति-दर्शन से हटाकर तत्कालीन घटनाओं की ओर ले गये। १८५० के "फ्यूजिटिव स्लेव ऐक्ट" के बारे में जो उत्तेजना फैली थी और जिसकी पराकाष्ठा थी उनकी पुस्तक "स्लेवरी इन मैसाचुसेट्स," वह अब शान्त हो चली थी। हाँ, कभी जब उनके दिल को चोट पहुँचती तो वह गुलामी के विरोध में लिख देते। उन्होंने संक्षिप्त पर जोरदार विरोध करने के बाद संगठित आन्दोलन का भार एफ० बी० सैनबर्न जैसे अपने अनुयायियों पर छोड़ दिया। "स्लेवरी इन मैसाचुसेट्स" लिखने के बाद थोरो के घर एक व्यक्ति आया। उसके विचारों, व्यक्तित्व और भाग्य ने उनके अन्दर जो उत्कट उत्साह और आवेग पैदा किया वैसा आज तक किसी ने नहीं किया था। वह थे कैन्सस के प्रसिद्ध "जॉन ब्राउन" जो कैन्सस और मिसूरी की सीमा पर उस बर्बर युद्ध में लड़े थे जिसमें दोनों ओर से भीषण रक्तपात हुआ था।

का प्यासा हठधर्मी समझा, पर सैनबर्न और उनके साथियों ने खुले दिल से ब्राउन का स्वागत किया। सैनबर्न ही ब्राउन को उनके समर्थकों से मिलाने कानकार्ड ले गए। थोरो को गुलामी के समर्थक राज्यों के खिलाफ संगठित विद्रोह में दिलचस्पी नहीं थी, पर वह और एमर्सन दोनों ही ब्राउन से बहुत प्रभावित हुए जिनका उत्साह और निश्चय की दृढ़ता, छूत के रोग की तरह, दूसरों में भी फैल गई। यदि समूचे उत्तरी प्रदेशों ने ब्राउन का अभिनन्दन किया होता, उनकी जयजयकार की होती, तो शायद थोरो का उत्साह कम होता। पर दासता के अत्यन्त उत्साही विरोधियों ने भी ब्राउन की उपेक्षा की। लोगों के इस व्यवहार के कारण, थोरो की नजरों में, ब्राउन एक अन्यायपूर्ण प्रथा के खिलाफ अकेले ही लड़ने वाले आदर्शवादी बन गए।

बोस्टन में जमा किए गए धन से ब्राउन दक्षिणी वर्जीनिया गए और "हार्पर्ज फ़ेरी" में, और बिल्कुल अकेले, किसी की सहायता के बिना, सारे प्रदेश में गुलामीके विरोध की प्रचण्ड ज्वाला को भड़काने की कोशिश की तो थोरो की दृष्टि में वह न्याय के लिए नागरिक-सत्याग्रह का प्रतीक बन गए। ब्राउन की गिरफ्तारी की खबर सुन कर उन्हें "ए प्ली फ़ॉर जॉन ब्राउन" लिखने की प्रेरणा मिली। इस आवेशपूर्ण लेख में, एक अन्याय-पूर्ण प्रथा के विरुद्ध एक सत्यप्रिय व्यक्ति को क्या करना चाहिए, इस सम्बन्ध में उन्होंने अपनी राय को दोहराया था। ब्राउन पर बग़ावत और हत्या का अभियोग लगा कर उन्हें फाँसी की सज़ा दी गयी। मैसाचुसेट्स में, जो दासता-उन्मूलन आंदोलन का केन्द्र था उनके पक्ष में एक शब्द भी नहीं छपा। थोरो ने फैसला कर लिया कि वह ब्राउन के समर्थन में खुल कर बोलेंगे, यह काम लोगों को चाहे जितना ही अप्रिय लगे और चाहे उनके अपने लिए खतरनाक हो।

उनके मित्रों ने उन्हें समझाने-बुझाने की कोशिश की ताकि वह अपना इरादा छोड़ दें। पर उन्होंने तो पक्का फैसला कर लिया था। जॉन ब्राउन की गिरफ्तारी के बाद उन्होंने एक सार्वजनिक सभा बुलाई और उनकी ओर से ऐसे जोरदार और आवेशपूर्ण शब्दों में बोले कि एमर्सन ने, जो उस सभा में मौजूद थे, बाद में लिखा भी, "थोरो का भाषण सबने श्रद्धा से सुना, और बहुतों ने तो इतनी सहानुभूति के साथ सुना कि स्वयं उन्हें भी आश्चर्य हुआ।"

थोरो प्रथम अमरीकी थे जिनने ब्राउन का खुल्लम-खुल्ला समर्थन किया था। उन्होंने ब्राउन को "व्यक्ति की स्वाधीनता का शहीद और अन्यायी सरकार द्वारा सताया हुआ दृढ़ सिद्धान्तों का पुरुष" बताया। "आज से लगभग अठारह सौ वर्ष पहले ईसा को सूली पर चढ़ाया गया था, और आज सुबह ही कैप्टन ब्राउन को फाँसी दी दी गई। यह एक जंजीर के दो छोर हैं जिनको जोड़ने वाली कड़ियाँ भी हैं।"

एक स्थान पर तो उन्होंने एक भविष्यद्रष्टा के समान कहा था,...."पिछले कुछ वर्षों से गुलामी के खिलाफ इस व्यक्ति का जो निरंतर और बहुत अंशों में सफल संघर्ष चलता रहा, क्या लोग उसे भुला देंगे?"

लोग सचमुच उसे नहीं भूल सके। दो वर्ष बाद, उत्तर की तमाम सेनाएँ दक्षिण पर, जिस पर ब्राउन का वार हो चुका था, आक्रमण की तैयारियाँ करती हुई गाती जाती थीं........

"जॉन ब्राउन का शरीर कब्र में पड़ा मिट्टी में मिलता जा रहा है, पर उसकी आत्मा आगे बढ़ती जा रही है।" और यह आत्मा ही थोरो के लिए प्रमुख थी। कुछ दिनों के अन्दर ही उन्होंने अपने उस भाषण को बोस्टन और वोर्सेस्टर में दोहराया, और महीने भर बाद कॉन्कार्ड में।

उत्तेजना और आवेश भड़क कर ठण्डा हो गया तो थोरो फिर प्रकृति की ओर मुड़े, और घटनाओं को उनके भाग्य पर ही छोड़ दिया। "हार्पर्ज फेरी" में ब्राउन के काम की क्या प्रतिक्रिया हुई, इसकी उन्हें अब चिन्ता नहीं थी।

दो वर्ष बाद सारा उत्तरी देश ब्राउन को जन-नायक मान कर उनका जयघोष करने लगा था, और उन्होंने जिसके लिए असफल प्रयत्न किए थे, उन सब अधूरे कामों को पूरा कर रहा था। पर थोरो इससे प्रभावित नहीं हुए। उत्तर और दक्षिण का यह युद्ध, सारे दक्षिण की संयुक्त शक्ति के खिलाफ लड़ने वाले उस वीर की याद की तुलना में, उत्साह को ठण्डा करने वाला ही लगा।

× × ×

थोरो बहुत स्वस्थ तो कभी नहीं थे। हारवर्ड में पढ़ते समय एक पूरे सत्र तक, छाती में सर्दी लग जाने के कारण घर पर ही रहे। बार-बार उन्हें यह शिकायत होती रही। उन्हें अक्सर जुकाम हो जाया करता था पर वह शारीरिक रोगों की ओर ज्यादा ध्यान देने में विश्वास नहीं करते थे। चाहे तबियत खराब हो या मौसम बुरा हो, अपने को खींच कर बाहर ले ही जाते थे।

१८५५ की बीमारी के बाद दो वर्ष तक वह कमज़ोर ही रहे। और इसके कारण, जितना वह कहते थे, वास्तव में उस से कहीं अधिक चिंतित थे। पर उसके बाद वह स्वस्थ हो गए, और उसी ताकत से चलते पहाड़ों पर चढ़ते, सर्वेक्षण करते, लिखते और भाषण देते। १८६० में, ४३ वर्ष की उम्र में उनके मित्रों का लगा कि वह महानता के द्वार तक पहुँच गए हैं, विशेषकर जॉन ब्राउन के समर्थन में उनकी शानदार भूमिका के बाद। लेखक और वक्ता के रूप में उनकी प्रसिद्धि बढ़ रही थी, और जो लोग प्रकृति

विषयक उनकी लिखित सामग्री के बारे में जानते थे, उन्हें आशा थी कि वह प्राकृतिक-इतिहास पर कोई अद्भुत ग्रन्थ लिखेंगे। १८६० के आरम्भ में उन्होंने लिखा था, "किसी विषय पर जितना अधिक सोचा और लिखा जाय, उतना ही अधिक और लिखा जा सकता है। विचार से विचार का जन्म होता है।" उनका कहना था कि कोई प्रतिभाशील लेखक अपने गाँव के इतिहास को दूसरे के लिखे हुए विश्व के इतिहास से ज्यादा रोचक बना सकता है। शायद वह समझते थे कि ऐसी प्रतिभा स्वयं उनमें है। स्थानीय प्राकृतिक इतिहास सम्बन्धी सामग्री के अलावा इंडियन लोगों के बारे में भी ढेरों सामग्री उन्होंने जमा की थी। उनको भी पुस्तक का रूप देना था, पर इसके बारे में जल्दी की कोई जरूरत नहीं थी। वह हमेशा की तरह संतुष्ट थे, और जैसा कि एक मित्र से उन्होंने कहा था, "अभी चालीस वर्ष और" जी सकते थे।

१८६० के ठंडे और भीगे नवम्बर में उन्हें फिर सर्दी लग गई जो छाती में जाकर बैठ गई। सारी सर्दी वह गाँव से बाहर नहीं निकल सके। १८६१ के बसन्त तक और कमजोर हो गए। मई में अपने एक मित्र होरेस मान के साथ, उत्तर-पश्चिम की ओर मिनेसोटा की जलवायु में स्वास्थ्य-लाभ के लिए चले गए। उन्हें यह भी आशा थी कि सिउक्स में उन आदिम इंडियन लोगों को शुद्ध देख सकेंगे जो अब भी पूर्व-कालीन ढंग से रहते थे।

एक बीमार आदमी के लिए सफर काफ़ी ज्यादा लम्बा था। रेल, गाड़ी और नदी के जहाज़ में आठ हफ़्ते! [illegible] के सब से ज्यादा पैदल चलने वाले के लिए [illegible] जैसा [illegible] भी नहीं था। उन्होंने अपने इंडियन लोगों को, निवासों, उत्तरी मिसीसिपी, नए पौधों, नई चिड़ियों वगैरह को खूब देखा, पर मुआयना वाली वह ताकत अब कहाँ थी!

जब वह घर लौटे तो उतने ही बीमार थे जितना जाते समय। उनके पिता की मृत्यु तो तीन साल पहले हो चुकी थी, पर उनकी माँ और सोफिया थीं उनकी परिचर्या के लिए। सर्दियों तक उन्हें लगने लगा कि इस रोग से वह बचने वाले नहीं हैं। पर बड़ी वीरता के साथ उन्होंने स्वीकार कर लिया कि अब शेष जीवन से यथा-संभव आनन्द प्राप्त करना होगा। उनके अंतिम छः महीने न तो एकाकी थे और न बेकार। उनसे मिलने वाले बहुत से लोग आते रहते थे, और फिर सोफ़िया की मदद से उन्होंने अपने कुछ लेखों को दोहराया जिन्हें "एटलांटिक मांथली" नामक पत्र ने माँगा था।

थोरो, जो सब से अधिक उद्‌धृत किए जाने वाले लोगों में हैं, अन्त तक इसी प्रकार चलते रहे। मृत्यु शैय्या पर कहे उनके कुछ शब्द, जिनमें उन्होंने स्वाधीन जीवन की पुष्टि की है, अमर हो गए हैं।

उनका एक मित्र मृत्यु के उपरान्त क्या होगा, इस विषय में बहुत चिन्तित रहा करता था।

थोरो ने उससे कहा, "मेरे दोस्त, एक बार में एक ही दुनिया की चिन्ता करो।" मारिया मौसी ने बड़ी व्यग्रता से पूछा, "तुमने ईश्वर के साथ संधि कर ली है?" तो उन्होंने बड़े शान्त भाव से कहा, "उससे मेरा झगड़ा ही कब था?" गाँव के जेलर और थोरो के पुराने परिचित सैम स्टेप्लस ने, जन्होंने उन्हें एक रात के लिए कारावास में रखकर उनके जीवन की एक रात छीन ली थी, और इस प्रकार उन्हें सर्वोत्तम रचना लिखने का अवसर दिया था, उन्हें देखने गए। वापस लौटकर उन्होंने कहा कि, मैंने कभी किसी को इतनी शान्ति और प्रसन्नता से मरने के लिए तैयार नहीं देखा।

सारी सर्दियां इसी तरह बीतीं, और जब वसन्त पूरी बहार

पर था तब, मई १८६२ को उनका देहान्त हो गया। उनके मुँह से जो अन्तिम शब्द निकले वह थे, "मूस" और "इंडियन"। ("मूस" एक प्रकार का हिरन है जो उत्तरी अमरीका में पाया जाता है।)

कानकार्ड के नए कब्रिस्तान में उनका शव दफनाया गया। अन्तिम संस्कार के समय आल्काट ने थोरो के यौवनकाल की वह कविता सुनायी जो उन्होंने लूसी ब्राउन की खिड़की में फेंकी थी। एमर्सन ने एक सुन्दर, भावपूर्ण भाषण दिया जो बाद में, विस्तृत रूप में, छापा गया और जो आज तक थोरो पर लिखे गए लेखों में सर्वश्रेष्ठ है।

× × ×

थोरो ने जीवन के अन्तिम दिनों में, अपनी क्षीण होती हुई शक्ति को अपनी बृहत् लिखित सामग्री और लेखों आदि को व्यवस्थित करने में लगाया, और "एटलांटिक मंथली" के लिए तीन निबन्ध तैयार किए—"वॉकिंग" (पैदल चलना); "आटम्नल टिट्स" (पतझड़ के रंग) और "वाइल्ड ऐपल्स" (जंगली सेब)। यह लेख १८६२ के आखिरी दिनों में प्रकाशित हुए। तीन वर्षों में उनके लेखों आदि के चार संग्रह छप गए—"एक्सकर्शन" (वनविहार); "केप काड", "मेन वुड्स", और एमर्सन द्वारा सम्पादित उनके पत्रों का संग्रह। पर उनके लेखों का अधिक भाग तो उनके दैनिक, चिन्तन और लेखन का परिणाम था जो पच्चीस वर्षों से व्यवस्थित, नियमित रूप से लिखी गई डायरी के रूप में था और जिसमें बड़ी-बड़ी संदर्भ सूची तक बनी हुई थी। अब उनमें से सबसे जरूरी, चुन छांटने और उन्हें प्रकाशन के लिए संकलित और सम्पादित करने का भार सोफी पर था। थोरो के वोर्सेस्टर वाले मित्र हैरिसन ब्लैक (जिन्होंने थोरो की अन्य वस्तुओं के साथ डायरी भी भेंट कर

रखी थी), उनके विश्वसनीय और श्रद्धालु सम्पादक बने। उन्होंने डायरी के वर्णनात्मक अंशों की ओर अधिक ध्यान दिया और उन्हें, ऋतुओं के अनुसार, अलग-अलग हिस्सों में बाँटा, और इस तरह चार पुस्तकें तैयार कीं—"मैसाचुसेट्स में वसन्त", "ग्रीष्म", "पतझड़" और "जाड़ा"।

उनका पहला संकलन १८८४ में छपा। सारी डायरी का प्रकाशन १९०६ तक नहीं हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक थोरो के मित्रों द्वारा दो पुस्तकें लिखी गयीं जो उनके बारे में अध्ययन, और कुछ अंशों में उनकी जीवनी थीं। चैनिंग की पुस्तक १८७३ में और सैनबर्न की १८८२ में छपी। उनकी सब से पहली जीवनियों में एक थी—फेबियन[1] समाजवादी अंग्रेज लेखक हेनरी सॉल्ट की। सॉल्ट पूरी तरह थोरो के भक्त थे, और यद्यपि उनसे मिले कभी नहीं थे, पर चैनिंग या सैनबर्न की अपेक्षा उनके विचारों को ज्यादा अच्छी तरह समझते थे। सन्देशवाहक थोरो के बारे में लिखी गयी यह सब से अच्छी पुस्तकों में से एक है।

थोरो के मित्रों ने यह तो सोचा था कि अपनी कविता, प्रकृति-वर्णन और अकृत्रिम सादे जीवन के अपने संदेश के लिए वह नाम कमाएँगे, पर उन्हें अनुमान नहीं था कि उनकी ख्याति इतनी फैलेगी। उन्होंने शायद यह आशा नहीं की थी कि चालीस वर्ष तक उपेक्षित रहने के बाद वह अचानक प्रसिद्ध हो जाएँगे, और वह भी पहले अमरीका में नहीं, बल्कि बृटेन में। उन्नीसवीं सदी थोरो के संदेश के लिए तैयार नहीं थी। बीसवीं सदी के

---

१ फेबियन—१८८४ में स्थापित इंग्लैण्ड की समाजवादी सोसायटी। इसका उद्देश्य है क्रमिक सुधार द्वारा समाजवाद की स्थापना, क्रांति द्वारा नहीं।

आरम्भ में थोरो के सन्देश को लोगों ने ग्रहण करना शुरू किया। उस समय अधिक स्वतन्त्र जीवन के लिए बढ़ती हुई बेचैनी, और वर्ग तथा धर्म सम्बन्धी विक्टोरियन युग की प्राण-हीन रूढ़ियों पर मानों ताजी हवा बहने लगी थी। बृटेन में श्रम आन्दोलन आरम्भ हुआ, युक्तिवाद प्रचलित हुआ। बाइसिकलों की बनावट में सुधार हुआ तो रोशनी और खुली हवा के प्रेमियों के लिए ग्रामीण बृटेन का रास्ता खुलने लगा। इन नए, जीवन्त आन्दोलन का अपना साहित्य भी था—रस्किन और मॉरिस। पर अधिक प्रभावशाली लेखक थे थोरो, व्हिटमैन और एडवर्ड कारपेण्टर—उन्होंने लेखकों के एक पूरे वर्ग को प्रेरित किया। १८९९ में "ओपन रोड" के नाम से गद्य और पद्य-संग्रह का एक छोटा जेबी-संस्करण छपा जिसका संपादन ई० वी० ल्यूकस ने किया था। उसमें थोरो की यह पंक्तियां उद्धृत हैं जो उनकी कविता का एक अंश है—

"हवा बहती रहती है,
इससे ज्यादा कौन जानता है?"

थोरो का कुटीर-जीवन मानो नगर के रहने वालों की प्रकृति और धरती माँ की गोद में रहने की लालसा का उत्तर था। इस व्यक्ति ने उधार की जमीन ली, उधार की कुल्हाड़ी ली, और अपने लिए झोंपड़ी बनाकर झील, पेड़ों, पशु-पक्षियों और जब-तब मिलने आने वालों की संगति में बड़ी शान्ति और स्वच्छन्दता से रहने लगा। उनमें चरित्र की दृढ़ता थी, मन की पवित्रता थी; सूक्ष्म दृष्टि और गहराई तक झाँकने की शक्ति थी; उनके पाठक जिनकी सराहना करते थे और जिनका अनुसरण करना चाहते थे।

थोरो का एक और व्यक्तित्व भी था जिसकी झलक केवल उनके रोजनामचे में मिलती है, जिसे आम लोग नहीं पढ़ते। यह

व्यक्तित्व एक उलझे हुए व्यक्ति का है जो स्वयं अपने लिए एक पहेली था। वह न तो अपनी कुंठा का कारण समझ पाया और न उसका विस्तार। पर अपना यह चेहरा उन्होंने दुनिया को नहीं दिखाया, न ही अपने निकट मित्रों को। यद्यपि उन्हें गहरे दुःख के क्षणों की अनुभूति भी हुई जो शायद उनकी शारीरिक स्थिति के साथ जुड़ी थी, पर उनके जीवन का प्रगट और मुख्य झरना अपने उल्लासपूर्ण वेग के साथ निरन्तर बहता रहा। संसार के अपने उस छोटे से धरती के टुकड़े में वह प्रकृति के वृत्तकार थे। इस मामले में वह ग्रामीण प्रकृति के महान् और प्रसिद्ध इतिहासकार गल्बर्ट व्हाइट सेल्बोर्न के समान थे, और उन्हीं के समान दर्शन, साहित्य, और लोगों में भी दिलचस्पी लेते थे। पर उनका सब से शाश्वत् और मार्मिक रूप था उनके अंदर का प्रकृतिवादी।

अमरीका के प्रकृति सम्बन्धी लेखक जॉन बरोज़ ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में यह लिख कर बहुतों की भावना को अभिव्यक्त किया कि "थोरो तो एक ही हैं, और हम न्यू इंग्लैण्ड के देवताओं के कृतज्ञ हैं जिन्होंने हमें यह अनमोल भेंट दी। काश! मेरे अन्दर थोरो के कुछ भी गुण होते—वह उच्च नैतिकता और तपस्या का स्वर जो मेरे अन्दर नहीं है, और जो उनकी कृतियों को ग्रीक और लैटिन आदि साहित्य के स्तर तक पहुँचा देता है।"

थोरो के पाठक उन्हें विभिन्न कारणों से पसन्द करते थे, पर अधिकतर तो लोग उन्हें उस व्यक्ति के रूप में ही याद रखेंगे जिसने उन्हें प्रकृति के निकट सम्पर्क में रहने का संदेश दिया था। इस दृष्टिकोण को किसी ने भी इस तरह प्रस्तुत नहीं किया जैसे "वाल्डेन" में थोरो ने। उन्होंने लिखा है, "गांव का हमारा जीवन बिल्कुल ही गतिहीन और प्राणहीन

हो जाए, यदि वह चारों ओर ऐसे जंगलों और चरागाहों से न घिरा हो जो अब तक अज्ञात हैं। जंगल हमारे लिए शक्तिवर्धक औषधि के समान हैं जिसकी हमें आवश्यकता है—उन दलदलों में धँस कर उस पार तक जाने की जहाँ छोटी बत्तखें और मुर्गियाँ फिरती हैं, चाहा पक्षी की आवाज सुनने, और फुसफुसाती हुई नाले वाली घास की खुशबू की, जहाँ कोई जंगली या भटकी हुई अकेली चिड़िया ही अपना घोंसला बनाती है, और जहाँ ऊदबिलाव पेट के बल रेंगते दिखाई देते हैं। हम इन सभी चीजों की खोज करना, उन्हें जानना चाहते हैं पर साथ ही हमारी यह भी कामना है कि सभी चीजें रहस्यपूर्ण और दुर्बोध हों, धरती और समुद्र हमारे लिए अत्यन्त दुर्दान्त, अनजाने, और अगाध हों। प्रकृति से हमारा मन कभी नहीं भर सकता।"

तो आइए हम उन्हें प्रकृति की गोद में ही छोड़ दें, वसन्त में उनकी प्यारी झील के तट पर। "आहा! मैं वसन्त में सुबह-सुबह कितनी बार इन चरागाहों में घूमा हूँ। एक टीले से दूसरे पर और एक बेंत की जड़ से दूसरे पर कूदता हुआ, जबकि नदी की घाटी और जंगल, ऐसे निर्मल, पवित्र और उज्ज्वल प्रकाश से नहा उठे हैं जो मृतक लोगों को भी जिला देता है—यदि वह सचमुच अपनी कब्रों में सोए पड़े हैं, जैसा कहयों का विश्वास है। अमरत्व के इससे बड़े प्रमाण की क्या आवश्यकता है? ऐसी ज्योति में सब को जीवित रहना ही है।"

थोरो की रचनाएँ

थोरो की केवल दो पुस्तकें ही उनके जीवन-काल में प्रकाशित हुईं।

A week on the Concord and Merrimack Rivers (1849) कानकार्ड और मेरीमैक नदियों पर एक सप्ताह (१८४९): जेम्स मुनरो एण्ड कं०, बोस्टन।

Walden ; or Life in the Woods (1854) वाल्डेन; अथवा वन्य-जीवन (१८५४): टिकनोर एण्ड फील्ड्स, बोस्टन।

इनके अतिरिक्त विभिन्न पत्रिकाओं में कई निबन्ध और कविताएँ भी प्रकाशित हुई थीं।

थोरो की मृत्यु के पश्चात् उनकी बहन सोफिया और दो मित्रों—एमर्सन व कैनिंग ने उनकी पत्रिकाओं में से शीघ्र ही कई पुस्तकें तैयार कर दीं। वे इस प्रकार हैं:—

Excursions (1863) लघु यात्राएँ (१८६३): सोफिया ई० थोरो और राल्फ डब्ल्यू० एमर्सन द्वारा संपादित—टिकनोर और फील्ड्स, बोस्टन।

The Maine Woods (1864) मियाने के जंगल (१८६४): सोफिया ई० थोरो और विलियम एलरी कैनिंग द्वारा संपादित—टिकनोर और फील्ड्स, बोस्टन।

Cape cod (1865) केप कॉड (१८६५): सोफिया ई० थोरो और विलियम एलरी कैनिंग द्वारा संपादित—टिकनोर और फील्ड्स, बोस्टन।

Letters to Various Persons (1865) विभिन्न व्यक्तियों को लिखे गए पत्र (१८६५): आर० वाल्डो एमर्सन द्वारा संपादित—टिकनोर और फील्ड्स, बोस्टन।

दित—हॉफ्टन, मिफ़िन एण्ड कं०, बोस्टन ।

पत्रिकाओं (Journals) सहित प्रकाशित होने वाला प्रथम संस्करण था—पांडुलिपि-संस्करण (Manuscript Edition)। इसके बाद १९०६ में २० खण्ड प्रकाशित हुए । संपादक—ब्रेडफोर्ड टोरी; प्रकाशक—हॉफ्टन, मिफ़िन एण्ड कं०, बोस्टन ।